<table>
<thead>
<tr>
<th>अं.</th>
<th>ग्रंथ के नाम</th>
<th>कुल पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>परमात्मपुराण</td>
<td>9-40</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>ज्ञानदर्पण</td>
<td>49-109</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>स्वरुपानन्द</td>
<td>902-928</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>उपदेशसिद्धांतरतन</td>
<td>929-955</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>सवैयाटीका</td>
<td>956-960</td>
</tr>
</tbody>
</table>
भूमिका

प्रस्तुत संग्रह में परमात्मपुराण, ज्ञानदर्पण, स्वरूपन्दु, उपदेश सिद्धांत रत्न और संवेद टिका ये पांच ग्रंथ हैं। पांचों कवियों श्री दीपचन्दजी शाह कासलीवाल द्वारा रचित हैं। आपका निःसंधान रथ्य संगमर्थ परतु ग्रंथरचना अपने आपार (जमुन) में रहकर की थी। आप विक्रम की उदारतावी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए हैं। इन रचनाओं के अन्य प्रकाशित ग्रंथों के देखने से सहज ही ज्ञात होता है कि आपका आध्यात्मिक ज्ञान एवं कविता उच्च कोटिका था। आपके ग्रंथों की भाषा राजपूताने की दुर्लभ है। परन्तु जैसी भाषा पंडित प्रदर्श टोडरमलजी आदि सिद्धांत शाॅस के महान विद्वानों की है, वैसी भाषा इनकी नहीं। इनकी भाषा में एक ही शब्द व वाक्यरचना के अनेक प्रयोग मिलते हैं। कहीं अपने उस काल में ग्रंथ रचना करने की जो भाषा प्रचलित थी उसमें अन्य संस्कृत रहते हुए भी उस भाषा का तोडरमलजी प्रयोग करना का प्रयत्न किया है। इसीलिए हम भाषा संबंधी भिन्न 2 प्रयोगों को एकसाथ बनाने का यहाँ रखना पड़ा है। कई शताब्दी पर यह शुद्ध संस्कृत शब्दों जैसा का तैयार हो प्रयोग किया है और कई जगह उन्हें देशीभाषा में बदल दिया है। आपकी प्रथम रचना आत्मविलबन ज्ञात होती है जो भाषा की दृष्टि से साधारण है, पर वह भावों की गहनता और आध्यात्मिकता के कारण अपना महत्व रखती है। आत्मविलबन श्री पाटील श्री जैन ग्रंथमाला मारोठ से प्रकाशित हो चुका है और इसी ग्रंथमाला से अनुवादप्रकाश भी छपकुका तथा बिन्दुलाल छप रहा है। अमर ग्रंथमाला से अनुवाद प्रकाश और भाव दीपिका ग्रंथ छप चुके हैं। वे सब ग्रंथ उक्त पं. दीपचन्दजी शाह की ही रचनायें हैं। आपकी भावदीपिका, अनुवाद प्रकाश और परमात्मपुराण ये गद्य रचनायें सर्वश्रेष्ठ रचनायें हैं। परमात्मपुराण तो विशेषत भी मौलिक है जिसमें ग्रंथकार की कल्पना और विषय निखर पड़ती है। ज्ञानदर्पण, स्वरूपन्दु, उपदेश सिद्धांत ये तीन पद्धति रचनायें हैं इनमें दोहा और संवेद में आत्मविलबन की ओर गुजरने की प्रथिता मिलती है और भहिमुखों व विसंगतिकता के दोषों का भिन्न 2 शब्दों में सोदाहरण विशद विवेचन है। इनके पढ़ने में अपूर्व आनंद आता है। ज्ञानदर्पण और स्वरूपन्दु आपकी उद्देश्य कृति है।

यह पहले भी प्रकाशित हो चुकी है। शेष ग्रंथ नवीन ही प्रकाश में आए हैं। व ग्रंथकार पं. टोडरमलजी सा. के पहले के हैं क्योंकि टोडरमलजी सा. ने आपके आत्मविलबन ग्रंथका उद्देश्य अपनी रसस्पष्ट छिट्टी में दिया है। प्रस्तुत रचनाओं में हम प्रथक 2 ग्रंथों का परिचय नहीं दे रहे हैं यह तो उन ग्रंथों के मोटे 2 अक्षयों में लिखे हुए शीर्षकों से मालूम हो जायगा और पद्ध 2 वर्गों में केवल आध्यात्मिक भाव ही हैं किसी खास विषय को लेकर विवेचन नहीं है। संवेद टिका में एक सया ग्रामस में लिखकर उसका विस्तारपूर्वक अर्थ लिखा गया है।

इन ग्रंथों का टाईप भी मोटा रखा गया है ताकि व्यवस्था एवं त्यानी महानमाता भी बिना कष्टके इसके पढ़ सकें।

श्री पृथ्वि भ. श्री दुलाण्डजी महाराज उपाध्यायला श्री दि. जैन उदातनाथ तुकारम इर्दौरे ने संस्था के श्री दि. जैन अमर ग्रंथालय में विद्वान हरसाहित्य मुख्यों को स्वयंसेवकी ममुम्बु कंडों के लाभ्य छप्पणा उचित संभाज कर यह आयोजन किया है। आप
परमात्मपुराण की विषयसूची

1 मंगलचरण
2 परमात्मराजी राजा का राज्य और उसकी विवृति
3 आत्मपदेश रूपी देशों के निवासी गुणरूपी पुरुषों को
क्षत्रिय, वैध, ब्राह्मण, शूद्र, ब्राह्माचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ,
साधु, ऋषि, मुनि और यति क्यों कह सकते?
4 गुणों को प्रथक 2 क्षत्रिय कहस्कने में हेतु
5 गुणों को प्रथक 2 वैध कहस्कने में हेतु
6 गुणों को अलग अलग ब्राह्मण कह सकने में हेतु
7 गुणों को अलग अलग शूद्र कह सकने में हेतु
8 गुणों को चार आश्रयों में से ब्राह्माचारी कह सकने में हेतु
9 गुणों को गृहस्थ कह सकने में हेतु
10 गुणों को वानप्रस्थ कह सकने में हेतु और प्रथक
2 गुणों को वानप्रस्थने को सिद्धि
11 सत्ता, द्रष्ट्व अगुरुलघुलच, आदि गुणों को प्रथक ऋषि,
साधु, यति और मुनि कह सकने में हेतु
12 परमात्मराजी राजा के सरदार
13 प्रथेक गुण-पुरुष का अपनी गुणपरिणति-नारी के
साथ भोगविलास का वर्णन
14 अगुरुलघु-नद्रा द्वारा किरेगमे विलासके समय श्रृंगार
आदि नवसोंकी सत्तागुणमें सिद्धि
75 गुण-पुरुषों का गुणपरिणाति-नारी से विलास और उनके संयोग से आनंद-पुत्रकी उत्पति 37
76 दर्शन, ज्ञान, चारित्र इन तीन मंत्रियों द्वारा परमात्मा-राजा की सेवा 37
77 संयम-फौजदार और परिणाम-कोटवाल का कार्य 35
78 परमात्मा-राजा और उसकी वित्तपरिणाति तिया 38
परमात्मपुराण

dोहा-परम अखंडतं ज्ञान मय, गुण अनंतं के धाम।
अविनाशी आनंद अज, लखत लाहे निज ठाम। ॥

अचल अतुल अनंत महिमा मंडित अखंडतं तृलोक्यं शिखर
परि विश्राधितं अनूठं अवाचितं शिवं धीपं है। तामें आलम प्रदेस
असंख्यदेस हैं सो एक एक देस अनंत गुण परमनिरकर व्याप्त है।
जिन गुण पुरुषन के गुण परिणति नारी है। तिस शिव धीप
cो परमात्मा राजा है। ताके चेतना परिणति राणी है। दर्शन ज्ञान
चरित्र से तीन मंत्री हैं। सम्पत्ति फोजदार है। सब देश का परिवार
कोटवाल है। गुणसत्ता मंदिर गुण पुरुष के हैं। परमात्मा राजा
का परमात्मा सत्ता महल वण्णं तहा चेतना परिणति कामिनीसि केलि
करत परम अतीत्रियं अवाचित आनंद उपजे है। गुण अपने लक्षण
cी रक्ष करे ताते यह सब गुण क्षत्रिय छोड़े हैं। अरु गुणपौरी
तरंगं व्याप रहे ताते वेदत् कहिए। ब्रह्म तृप सब हैं। ताते ब्रह्मण
cहिए। अपनी परिणति वृत्त करि अपाकृति आप से ताते शुद्ध कहिए।
ब्रह्म को आचरण सब गुण करे ताते ब्रह्मचारी। अपनी गुण परिणति
tिया के विलास बिना परिणति नारी न सेवे हैं ताते परित्याग
t्वयं ब्रह्मचारिजं के धारी ब्रह्मचारी है। अपने चेतनावान को धारी
प्रस्थान कीयं ताते वानप्रस्थ है। निज लक्षण रूप निजगुण में रहे
हैं ताते गृहस्थ है। स्वरूप को साथे ताते साधु कहिए। अपनी गुण

2 परमात्मपुराण
महिमा रिष्टं को धारे ताते रिष्टि कहिए। प्रस्तुतं ज्ञान सब में आया
ताते मुनि कहिए। परमात्मा को जीति लियो ताते यति कहिए। इनमें
जो विशेष है सो लिखिए है।
क्षत्रियं का वर्णं।

सब गुण परमप सब गुण की रक्ष करे है सो कहिए है।
प्रथम सत्ता गुण के आर्थिक सब गुण हैं ताते सत्ता सब की रक्षा
करे है। सूचना गुण न होता तो चेतन सत्ता इतने ग्राह्य भये
अतीत्निरत्र प्रभुत्र का अभाव होता महिमा न रहती ताते सूचना
सब अतीत्रि प्रभुत्र की रक्षा करे है। प्रभुत्र गुण न होता तो
बीमादित सब गुण प्रमाण कर्तवे जोग्य कहे होते ताते प्रभुत्र सबका
रक्ष है। अतितु बिना सब का अभाव होता ताते सब की अस्तित
रक्षा करे है। वस्तुतु न होता तो सामान्य विशेष भाव सब का
न रहता ताते वस्तुतु सब की रक्ष करे है। या प्रकार सब गुण
में रक्ष करण का भाव है ताते क्षत्रियणं आया।

आगे वैश्वर्णक कहिए है।

अपनी अपनी रीति वर्तनां व्याप रहे ताते। दर्शन देखे
वात्र, मात्र निविकल रीति वर्तनां-व्याप देखने की रीति-वर्तनां
व्याप करे है। सत्ता है लक्षण निविकल रीति वर्तना विशेष दृष्य
है। रीति गुण है रीति वर्तनां पर्याय है रीति वर्तना व्याप करे
है। वस्तुतु सामान्य विशेष रूप वस्तुतु विनिविकल रीति वर्तनां ज्ञान
में सामान्य विशेष रीति वर्तनी सब गुण में सामान्य विशेष रीति
वर्तनां व्याप करिए। प्रश्नक गुण प्रमाण कर्तवे जोग्य निविकल
रीति वर्तनां गुण में प्रमाण कर्तवे जोग्य विशेष वर्तना व्याप प्रमाण
गुण करे है। या प्रकार सब गुण में निविकल रीति अरु विशेष
रीति वर्तनां व्याप हैं ताते सब वैश्व कहिए।
आंगे ब्रह्मण का वर्ण कीजिये है।

ज्ञान गुण निज स्वरूप है। ब्रह्म ज्ञान ते एक अंस हूँ अधिक आंश नाहिं। ज्ञान प्रमाण है, ज्ञान स्वरूप है। ज्ञान विना मध्य रहने वाला है। तब ब्रह्म की अनत्य यथार्थशास्त्रीय शक्ति नहीं है। ज्ञान ब्रह्म यथार्थशास्त्रीय ब्रह्म है, तात्त्व ज्ञान की अनुप्रेषण संज्ञा भई। दर्शन स्वरूपमय है, सर्वदशिल्प शक्ति ब्रह्म में दर्शन करि है, दर्शन विना देखने की शक्ति ब्रह्म में न होय तात दर्शन सब ब्रह्म में व्यापी ब्रह्मस्वरूप होय रहा है।

एक है तात्त्व ज्ञान ब्रह्मका आचरण कीये है ज्ञान ब्रह्माचारी। दर्शन ब्रह्मण तात दर्शन ब्रह्माचारी। वीर्य सब ब्रह्म की निहयन राखि, ताते ब्रह्म वीर्यशक्ति तें ब्रह्म मया है। ताते ब्रह्मण के आचरण रूप मया ताते ब्रह्माचारी, सत्य ब्रह्मरूप ताते सत्य ब्रह्माचारी। या प्रकार सब गुण ब्रह्माचारी हैं।

आंगे गृहस्थ में लिखिये है।

ज्ञान निज ज्ञान सत्य गृह में लिखि है तातं ज्ञान गृहस्थ कहि है। दर्शन अपने दर्शन सत्य गृह में स्थिति कीये है; तातं दर्शन गृहस्थ, वीर्य अपने वीर्य सत्य गृह में निवरि है तातं वीर्य गृहस्थ, सुख अपने अनाकुलक्षण सुख सत्य गृह में स्थिति कीये है; तातं सुख गृहस्थ है। या प्रकार सब (गुण) गृहस्थ है।

आंगे वानप्रस्थ में कहि है ।

अपने निज वान में प्रथ कहि है तिछे। वान आपका निज रूप तातें रहनां सो वानप्रस्थ तातें ज्ञान अपने जानना रूप रहे। दर्शन अपने इश्व चेतना रूप में स्थिति कीये है। सत्य सारसता लक्षण रूप में सत्य विस्तृत है। दर्शन अपने इश्व करके जोग रूप में अवश्य करे। या प्रकार सब गुण अपने निज रूप रहे हैं।

ज्ञान का निज वान ऐसा है। विशेष ज्ञान प्रकाश रूप मया है, अधूरा आप में जानना परवत है। अपने जानने ते अधूरा सुधाता भई। ज्ञान सुख के भये सहज ज्ञायता के विलास में अंतिम निज गुण का प्रकाश विकसित तब गुण गुण के अंतर परम्य भेद सब भासे, अंतिम यथार्थता की अंतिम महिमा ज्ञान में प्रगट भई।

यह कोई प्रश्न करें-ज्ञान में यथा उपचार ते जानना है, अपने गुण का जानना कैसे है?
परमात्मपुराण

ताका समाधान-पर जोय का सत्ता जुंदा है, जिस गुण का सत्ता ज्ञान के सत्ता सौ जुंदा नाही। ज्ञान की ज्ञानकता के प्रकाश में एक सत्ता ज्ञान गया है। जो उपचार है विन के जाने आंदोल न हो। (प्रश्न) आंदोल होठ होता तो गुण विषे गुण उपचार को कहा?

तहाँ समाधान-ज्ञान में दर्शन आया सो ज्ञान दर्शन रूप न भया, कहे तै उसका देखना लक्ष्य सो ज्ञान में न होय। वीर्य का निराशित करण सामर्थ्य लक्षण ज्ञान में न हो, ऐसे अन्त गुण के लक्षण ज्ञान न धरे, तात्ते लक्षण अपेक्षा उपचार लक्षण विकल्प न धरे। अर आये ज्ञान में कहे ताते उपचार सत्ता भेद नाही।

अनन्य भेद तै ज्ञान सत्ता; दर्शन सत्ता; वीर्य सत्ता; आधुनि रत; ऐसा कल्पित करी भेद कहा परी प्रथम भेद नाही। ताते विदेश विशेष सत्ता लक्षण की अपेक्षा करी जानी। ज्ञान द्वय पर्याय निज सर्पणया जाने; ज्ञान ज्ञानकता जानें ताते आंदोल अरु रस समुद्र प्रगट। सब द्वय गुण पर्याय ज्ञान प्रकाशे तब प्रगटे। ज्ञान नेव निकी महिमा प्रगट करी ताते ऐसा ज्ञान सर्पण ज्ञानावान है, ताते ज्ञान रहे तब ज्ञान वाणिज्य कहिये। दर्शनावान दर्शन रूप सो सब्द द्वय गुण पर्याय का सामाय विशेष्य सदु का निरक्त सत्ता अवलोकन करे है। तहा सब लक्षण भेदावर उपचारित उति ज्ञान की नाई जानी लेनी। आंदोल का प्रवाहित अवलोकित है। निरक्तप्रस में भेद भाव निकल्य सब नहीं, निरक्तप्रस ऐसा है; तहा निकल्य नही।

प्रश्न इत्यादि उपजे-जो दर्शन दर्शन की देख सो तो निरक्त ज्ञानादि अन्त गुण अवलोकन में निकल्य भया कि निरक्त रही? जो निरक्त करोगी तो पर दूजा गुण का दूजा लक्षण के देखवे करी निरक्त न रही, अर निकल्य करोगी तो निरक्त दर्शन यहकीना न संभूवैगा।

परमात्मपुराण

6

ताका समाधान- ज्ञान का देखना तो उपचार करी जामी आया।

दर्शन में और गुण दर्शन जिनो जो देख लक्षण करी तो उपचार सब के लक्षण देखे। सत्ता अमेश है ही, अनवर भेद प्रथम भेद नाही सब का निकल्य सत्ता। अवलोकन में निरक्तहै। दर्शन दर्शनकर में देखे, दर्शन की शुद्धता निरक्तहै। अपना निज देखना तो अपने विद्वान लक्षण सो व्यापक तनमय लक्षण अमेश है। दर्शन दर्श, देखना गुण, देखे रूप परिणामन पर्याय; निध्य अमेश दर्शन भेद कथन मात्र मै लोहार है। निजरूपकें देखें सब गुण का देखनां तो है। थरे देखें मात्र गुण की है आन लक्षण न धरे। अपने सव्यस्य के प्रकाश में आनुभव स्वजाति चेतना की अपेक्षा प्रकाश। जिस सत्ता में सो अपना गुण प्रकाशक तिस सत्ता में सब गुण प्रकाशे परि विकल्प का धरता तो विकल्प होता। अपना प्रकाश देखे मात्र ज्ञान का लेली रखी है। आपने दर्शन रूप दर्शन भूमि में पर जोय विज्ञाती होठ भार है। निज विमुख चेतना एक सत्ता ते प्रगटी तो सब गुण की दर्शन प्रकाश की साथि जुगपत प्रगटी। अपना प्रकाश निरक्तहै जैसा है तैसा रहे है। विज्ञाती पर जोय स्वजाति प्रथक चेतना जोय अप्रथक चेतना स्वजाति ज्ञानादि अन्त गुणादि ज्ञान लक्षण भेद, अर तत्ता अमेशदि रूप भार है। परि निरक्तहै सत्ता अवलोकन लक्षण की न तजे। काहू की उपचार करी देखना काहू की स्वजाति उपचार देखना। प्रथक भेदों काहू की अथकता करी देखना। अमेश चेतना जाती ताते ऐसा देखना है। तोऊ अपने निरक्त प्रकाश लक्षण लीने अवलोकत दर्शन निरक्तहै। यह दर्शन वान कहिये रूप में रहे ताते दर्शन वाणिज्य कहिये।

प्रमेय सामाय्य है; सब में व्यापक है द्वय प्रमाण करवे जोय
परमात्मपुराण

7

प्रमेय ते भया सब गुण प्रमाण करवे जोकर प्रमेय के पर्याय नै कीये पर्याय प्रमेय नै प्रमाण करवे जोकर कीये। प्रमेय प्रमाण करवे जोकर लक्षण की लीये है। जो प्रमेय न होता तो सब अप्रमाणहोते। ताते प्रमेय गुण अपने प्रमाण करवे जोकर रुपमय भया है। लक्षणगुण की प्रमाण प्रमेय नै कीये, काहे तै सत्ता सातता है लक्षण की लीये है सो सम्प्रक्षान नै प्रमाण कीया तब प्रमेय नाम पाया।

कोई प्रश्न करे है-सत्ता अपना लक्षण प्रमाण करवे जोकर आप लीये है। यहा प्रमेयकरि प्रमाण करवे जोकर काहे को कहो। सब गुण अपने अपने लक्षण करवे अपनी अन्त महिमा लीये प्रमाण करवे जोकर हैं प्रमेय तें काहे कहो?

ताको समाधान-एक एक गुण सब आगुण की सापेक्ष लीये है। एक एक गुण करि सब गुण की सिद्धि है। चेतना गुण नै सब चेतना रूप कीये। सूक्ष्णगुण सब सूक्ष्ण कीये। अरुलधु नै सब अरुलधु कीये। प्रदेशवत्त गुण नै सब प्रदेशी कीये तैसै प्रमेयगुण नै सब प्रमाण करवे जोकर कीये। प्रमेयगुण नै जिनके लक्षण को प्रमाण करवे जोकर के वास्तेव बन के लक्षण के माही प्रेषें करि अर्क रूप सत्ता अन्तकरि करि है। ताते सब गुण प्रमाण करवे जोकर भया है। जो सब गुण अपने अपने लक्षण की धार्म विनेके माही न होता तो अप्रमाण जोकर होते। ताते अन्याय सापेक्ष सिद्धि है।

उत्तरं-चानना स्वभाव संयुक्त, द्रव्य्का जाता चारणात:।
तत्त्व सापेक्ष सिद्धत्व, स्वभाषे मित्रित कुरू।।

इहां फेँरि प्रश्न भया-प्रमेय की अनेक सत्ता सब गुण मैं कही तो गुण मैं गुण नहीं 'द्रव्याध्या निरुपणा गुणा:। यह फक्ती सूतर की झुट होइ एक प्रमेय की अन्त सत्ता भई। एक गुण एक लक्षण व्यापक न रही।

परमात्मपुराण

8

ताको समाधान-सत्ता को एक है एक ही सत्ता में अन्त गुण का प्रकाश है। एक एक के प्रकाश गुण की विक्षा करि गुण 2 का सत ऐसा नाम पाया। सत्ता भेद ता नाही, लक्षण एक एक गुण का जुदा है, लक्षण रूप गुण न मले ताते सत्ता अन्यत करि भेद नांव भया प्रकाश भेद न भया। ताते यह भक्ति सिद्ध भया। निक्ष्य सब का एक सत अन्तय्मेद प्रकाश गुण की अेयक और नांव उपचार करि गुण 2 का कथा तो सत्ता भिन्न मित्र न भई। ताते नाना नय प्रमाण है, विरुद्ध नाही। एक प्रमेय अन्त गुण मैं आया, सो सत्ता एक ही अन्त गुण का प्रकाश तिसै एक 2 प्रमेय प्रकाश सो ही प्रकाश प्रमेय का सब गुण मैं आया। कहेत्र आया सो कहिए हैं। गुण एक एक के अस्वय प्रदेश वै ही है, विनही मैं सब गुण व्यापक है। प्रमेय हू व्यापक है। ताते प्रमेय सब प्रदेश व्यापक रूप विसर्या तब सब गुण के प्रदेश सत्ता में विसिके सत भया सो कहने मैं नांव भेद पाया, ये प्रमेय के शानके ये दर्षण के परिवे जुदे जुदे अस्वय नाही बैही है। ताते सब गुण का प्रदेश सत एक भया ताते प्रमेय की अन्त सत्ता न भई। सत्ता तै कली और कही गुण के लक्षण जुदे के वास्ते मूल सत्ता भेद नाही। अन्त गुण लक्षण रूप एक द्रव का प्रकाश अन्त महिमा मंडित सो है। वक्तु जांचां निमित जुदे जुदे दिखाये। गुण गुण की अन्तनत शक्ति अन्त पर्याय अन्त महिमा अन्त गुण का आरार भव एक एक गुणमैं पाईये। प्रमेय पर्याय करि अन्त गुण मैं व्यापक होइ वर्ते हैं, सत्ता अन्त नाही। गुण गुण के लक्षण प्रमाण करेंजोय प्रमेय पर्याय तें भये ताते प्रमेय विलास कहया। अर गुण ही कों गुणी कहिए तब सत्ता गुणी भया सत्ता के सूब्म गुण भया सताका अरुलधुगुण भया। वक्तुजुल गुणी भया वक्तुजुल का प्रमेय गुण वक्तुजुल
आगे तीसरे प्रश्न को समाधान
एक एक गुण एक एक लक्षण व्यापक है। पर्याय की अपेक्षा अन्तर्गत गुण व्यापक है जो पर्याय की अपेक्षा समें में न व्यापे तो सब को नाल होई। सूक्ष्म को पर्याय समें न होय तो सब स्थूल होय अनुसार समें न होय तो सब हलके भारी हो। प्रणय समें में न व्यापे तो प्रमान करवे जोय न रहे। तत्व पर्याय गुण गुण का सब गुणमें है। मूल लक्षण एक एक गुण का निज लक्षण पर्याय का धारणामय एक है। ऐसा प्रमाण का भेद है। पर्याय करि अन्तर्गत गुण व्यापक। प्रणय मूलभूत वस्तु एक गुण जाने ऐसा प्रमाण वान कहिए सरुप प्रणय में रहे है सो प्रमाण वानप्रस्थ कहिए।

आगे वस्तु का वानप्रस्थ कहिए है।
सामान्यविशेषरूप वस्तु है, वस्तु का नाम वस्तु है।
वस्तु सामान्य विशेष धरे ताकिहरिये-अन्तर्गत गुण सामान्य विशेष रूप हैं। ज्ञान सामान्य सो ज्ञानान्तर स्त्रिकरों जानें, ज्ञान यह ज्ञान का विशेष है। ज्ञानान्तरमें दूरी भाव न आये तात्त्व सामान्य है।
स्त्रिकरों जानेमें सर्वेश शक्ति प्रमाण है तात्त्व ज्ञानान्तरमें वस्तुका स्वभाव सबै है। स्त्रिकर जानना कहे ज्ञान की महिमा अन्तर्शक्ति परजयरूप सब जानीपरे है। अन्तर्गत गुणकी अन्तर्शक्ति परजय जानेते अन्तर्गत गुण की अन्तर्गत महिमा जानीपरी तब ज्ञानेति तब सारता आतम पदार्थ की महिमा जानी परी तब सब गुण दृष्टि की महिमा

आगे दर्शनवस्तु का वानप्रस्थ कहिए है।
दर्शन देखनेमात्र परम्या दर्शन का सामान्य स्वपनें जुदे देखे है यह दर्शन का विशेष है। दर्शन न देखे परकों तब स्वपक्षित शक्ति न रहे। दर्शन के अधि होते विविधता शक्ति का अवलोकन न रहे अन्तर्गत ज्ञान पदार्थ का निर्विकल्प शक्ति सरुप अवलोकन मिटपा। तत्त्व दर्शनसामान्यविशेषरूप वस्तु तिसका भाव दर्शन वस्तु है। तिसका वान कहिये सरुप तिसमै तिदता सो दर्शन
परमात्मपुराण

वर्तुच्च वानप्रथ्य कहिये। ऐसे सब गुण का वर्तुच्च मिलि एक वर्तुच्च नाम गुण है तिसमें रहना सो वर्तुच्च वानप्रथ्य कहिये।

आगे द्रव्यत्व वानप्रथ्य कहिये है।

गुण पर्याय की द्रव्य सो द्रव्य कहिये। द्रव्य के भाव की द्रव्यत्व कहिये। ज्ञान ज्ञान रूप है सो आत्मा का स्वभाव है। जो आत्मा ज्ञानन रूप न परणवता तो ज्ञाना न होता, ज्ञाना न होने चाहे ज्ञान न होता, ताते आत्म के परणमन तौ ज्ञान भया, परणमन वा द्रव्यत्व गुण तौ भया। द्रव्यत्व गुण के भये द्रव्य द्रव्यभूत भया, जब द्रव्यभूत भया तब द्रव करी परणाम प्रगट कीया। जब परणाम प्रगटिया तब गुण द्रव रूप परणाम। गुण द्रव रूप परणामया तब गुण द्रव प्रगटे।

ताते द्रव्यत्व गुण तौ सब का प्रावटाना है ऐसे अन्यत्मगुण की परणाम है। सो द्रव्यत्व गुण तौ द्रव्य द्रवे तब तो गुण परणाम प्रगटे अरु गुण द्रवे तब गुण परणामकी धीर परणामति सो एक होइ परणामति द्रवे तब दोष मिले परणामति द्रवे तब गुण द्रवया की बैते सस्त्र लाम ले द्रव्य द्रवे परणाम प्रगटे। गुण द्रवे तब एक एक गुण सब गुण में व्याप्त अन्त्म की आधार होय है। सब गुण अन्यत्म भति एक वस्तु होइ। तौ सब द्रव्य गुण परणामया जु है सो द्रवते हैं। सामायक रूप तौ द्रवणरूप परणामया विशेष द्रव्य द्रवत्व द्रवगुण द्रव्य परणाम द्रवण सो सामायक विशेष द्रवण मिलि द्रवत्व नाम भया। तौ द्रवत्व अपने स्वरूप में रहे सो द्रवत्व वानप्रथ्य कहिए। ऐसे सब गुण का वानप्रथ्य भेद जानिये।

आगे ऋषि, साधु, यति, मुनि ये मिश्रुक के भेद है सो कहिये है।

एक २ गुण में ये च्यायर भेद लागि हैं। प्रथम सत्ता गुणमें २१२ परमात्मपुराण

कहिये है-ताते सत्ता की रिशि संख्या होय सत्ता साधसी रिद्धि की लीये हैं। आप अविनाशी है। सत्ता के आधार उत्पाद व्यय धूष है। सत्ता अन्यासी साताओ द्रव्य को दई तब द्रव्य साताभया। गुण को दई तब गुण साताभये। ज्ञान का ज्ञानपणा गुण, ज्ञान द्रव्य, ज्ञान परणामति परजाय। ज्ञान रवसंवेरीज्ञान रवेन ज्ञायक ज्ञान अपने आत्मा के द्रव्य गुण परणाम का ज्ञानहार ऐसे ज्ञानको सातासता गुणने कीया सो ज्ञान सत्ता है। ज्ञान सत्ता तौ ज्ञान सातासता यह साताओ रिद्धि ज्ञानको सत्ता गुणने दी है। दरशन का सत्ता तौ दरशन साताभया है। दरशन सब परमाय स्वभावक सब ज्ञायक की दले है, अपने आत्माके द्रव्य गुण पर्याय की दले है। दरशन द्रव्य है, देखना गुण है, दरशनपरणामति परजाय है। जो दरशन न होता तौ ज्ञायकता न होती, ज्ञायकता मिटे, वेतना का आभार होता।

ताते सकल वेतना का कारण एक दरशन गुण है। सव प्रशंसक महिमा की घरे दरशन है ताको सत्ता दरशन सत्ता तौ कीया यह सातारे राखिये की रिद्धि दरशन को सत्ता ने दी है ताते सत्ता की रिद्धि दरशन में है।

आगे द्रव्यत्व गुणको सत्ता रिद्धि दी सो कहिये है।

द्रव्यत्व गुण करिद्रव्य गुण परजायको द्रव्य हैं। गुण परजाय द्रव्यको द्रव्य द्रव्यभूत द्रव्यके भया तब द्रव्य परणाम गुणनमें द्रव्य बिनारिषिति न होती। द्रव्य सातासता निष्ठ शीम त्रिय न रहता तव परिषिति बिना उल्लाद करि स्वरूप लाम तथा सो न होता, व्यय न होता, तव परिषिति स्वरूप निवास न करती धूषता की सिद्धि न होती। उल्लाद व्यय बिना धूष न होता ताते परिषिति उल्लाद व्यय, उल्लाद व्यय तौ धूषसिद्धि, सो परिषिति होना द्रव्य तौ ताते द्रव्य द्रव्य तव परिषिति स्वरूप धूषको द्रव्य घेरे तब गुण परिषिति गुणनें
परमात्मपुराण

भई सब गुण का जुगपत भाव गुण परनिति ने कीया।

यहां कोई प्रश्न करे है-किने जुगपत गुण की सिद्धि परिनिति ने करी है क्रमवती तें जुगपत भाव कैसे साहया?

ताका समाधान-वस्तु जो है सो क्रम सहभावी भाव रूप है।

गुण परिनिति क्रम गुणका है। गुण लक्षण सहभावी है। सब गुण सहभाव क्रमवती को धरी है। गुण अपने लक्षण रूप सदा साहते है सो बिन गुण के लक्षण को गुण परिनिति सिद्ध करे है। द्रव्य गुणन में परणया तब गुणपरिनिति भई। द्रव्य गुण रूप न परणया तब गुण की सिद्धि न होती, यातें गुणकी सिद्धि परिनिति गुण की ते है। गुणका वेदना गुणपरणिति नै कीया है। वेदना भाव तें गुण का सर्वस्वर करै है। सर्वस्वर पुरूषें गुण की सिद्धि है। गुण बिना गुणी नहीं गुणी बिना गुण नहीं, यातें गुण परणितिबिना नहीं, परणिति गुणबिना नहीं। यातें क्रम परणिति तें जगपत गुण की सिद्धि है। ऐसे द्रव्य गुणको सातली सिद्धि सता तें दी। तातें सता की रिद्धितें द्रव्यवालास की सिद्धि है।

वस्तुगुण वस्तु के भावको लीये है सो साता है; सामान्यविशेष भावरूप वस्तुकी सिद्धि करे है।

सब गुण अपना सामान्यविशेषभाव धारी आय वस्तुवरूप भये। सामान्य प्रकाश विशेष प्रकाश सामान्यविशेष तें है सो सामान्य विशेष का विलास सब गुण करे है, वस्तु संज्ञा सब धरी है, सो वस्तुविशेषरूप वस्तुवरूप विलास की सिद्धि सता गुण नै साता भाव दीया तातें है सो सता की सिद्धि साततामाह सबकों दे है। वीर्यगुण को वीर्यसता में साततामाह दीया। वीर्य स्वस्वरूप निजपत राखिये की सामयर्यङ्गुण वीर्यगुण निजपत राखि, द्रव्यवीर्य द्रव्यको निजपत राखि। सामयर्यङ्गुण अनभी करी परयवर्त वीर्यपर्यथको निजपत राखियें समस्य, वीर्यगुण का विलास वीर्य अपार अभिभ करे है। ताती सिद्धि एक वीर्यसताते
परमात्मपुरुण

आगे सत्ता की यति कहिए।

असत विकार की जीत्या है ताते यति कहिए। सतामें असता नाही ताते यति। ताका विशेष लिखिये हे।

सतामें नाति अभाव भया, नाति के विकार जीत्या ताते यति। ज्ञानतता ज्ञान का नाति विकार भेद, दरशनसतान नै दरशन का नातिपण्ण दूरी किया, वीर्यसताने अवस्थान का अभाव कीया। या प्रकार सब गुण की सत्ता प्रतिपक्षी अभाव करित लिथे है ताते यति कहिए।

आगे सताको मुनिसंज्ञा करिहे कहिए है।

सताम अपऱे रूप का प्रत्यक्ष प्रकाश साताता लक्षण करिये करे अथवा प्रत्यक्ष केवल ज्ञान सता धरे ताते मुनि कहिए।

आगे वस्तुस्वकों रिषि आदि वेद लगाईँ हे।

तामें रिपिस्तुक को कहिए-सामान्यविशेषरूप वस्तु ताके भावकों धरें वस्तुत है सो सबमें व्याप्क है। सब गुणेम वामानविशेषभावरूप वस्तुणा करिर रिद्धि वस्तुमें सबकों दी है। जेते गुण है ते ते सामान्यविशेषरूप है। ज्ञानमें जानपण्णाम एजऱ्ट सामान्यवाव न होय तो लोकालोकप्रकाशकविशेष कहां ते होय, ताते सामायत्वे विशेष है, विशेष ते सामाय है। सामान्यविशेषभाव रिद्धि वस्तुत है। ऐसही ही दरशन देखवेमात्र न होय तो लोकालोक का निर्विकल्य सतामत्र वस्तु न देखे, ताते सामाय विशेष धरे है। सब गुण सामायविशेषभाव रिद्धि धरे है। सो सब एक वस्तुल की रिद्धि फैली है। वस्तु द्रष्टव्य द्रष्टव्यस्व गुणस्थ गुणस्थ फर्मायस्व पर्यायस्व वस्तु न वस्तुत है।

इसहाकोई प्रजन करे हे-शून्य है नाम शून्य मया वस्तु कहा कहोगे ?

परमात्मपुरुण

ताको समाधान-एक शून्य आकाश है सो सामान्यविशेष ती शैक्ष वस्तु है। आकाश क्षेत्र मैं सब रहे है। दूरी भेद यह जु अभावमात्र मैं सामाय अभाव विशेष अभाव, सामायविशेष तो है पर अभावमात्र है। सामायविशेष सामायविशेष वस्तुमें जैसे तैसे अभावमें कहिए। अभाव की शून्यता तो है परं नाम सामायविशेष मैं अभाव को भयो है। ताते सब सिद्ध सामायविशेषत व्यक्त है। वस्तु के नामात्र आवत ही सामायविशेष ताता अभाव ऐसा नाम पाया। जो नातितै सिद्धि न होती तो नातिस्वभाव स्वभावस्वमूँ ह न होता। ताता असित इति सतामन्यसतू नाति अभाव सत विशेष सता का कहना भया। जो नाति का अभाव न होता तो सतामें असिवभाव न होता ताते अभाव ही तैं भाव भया है। वस्तु के प्रकाश की वस्तुत करे वस्तु जो है नाति नाही। वस्तु की शोष कहिए ज्ञाय कहिए ज्ञान कहिए सब प्रकाश एक चैतन्य वस्तु का है। वस्तुविधाय करिव वस्तुत परिमाणी है। परवस्तु करिव अपरिमाणी है। जीव वस्तु करिव जीव रूप है। जड परवस्तु करिव जीविका नाही। चैतन्यविधि चैतन्यवस्तुत करिव है। अर जड़मूर्ति नाही ताते अमूर्त है। अपने प्रदेश की विविध कारणी आदेशी है। पप्रदेश नाही ताते आदेशी है। वस्तु एक की अपेक्षा एक है। गुणस्वतु करिव अपेक्षा है। आपने प्रदेश की अपेक्षा क्षेत्र है। पर वस्तु उपजने का क्षेत्र नाही। अपने पर्याय क्रियाकार क्रियावान है। पप्रक्षीया न करी ताते अक्षायान है। वस्तुतकीर्त निम्न है। पर्यायकारी अनित्य है। आप अनन्तगणको कारण है। आपकी आप कारण है। जड़कों अकारण है। आप परिभाषा का आप कर्ता है। पर परिभाषा का आकार्य है। ज्ञानवस्तु की अपेक्षा सर्वथष है। पर की अपेक्षा निश्चयन परमें न जाय ताते सर्वथष है। अपने प्रदेशलक्षण करिए आपमें प्रेवेश आप करिए है। निश्चयकारी परमें प्रेवेश नाही।
परमात्मपुराण

परमात्मपुराण

सिद्धि तारे तब जैसे के तेसे पाहिए साई कहिये है-सिद्धि के अनन्यम भर में एक सतामिण रूप सिद्ध परणवा तहां अनंत्व भाग परणमन की वृद्धि कहिये। असंख्यात्मगुण में एक वसुवा रूप परणवा ऐसा कहिये तब असंख्यत्व भाग परणमन की वृद्धि कहिये। आठ (गुण) में स्मरणकरण परणम है ऐसा कहिये तब संघात्व भाग परणमन की वृद्धि कहिये। आठ गुण परणम है ऐसा कहिये तब संघात्व गुण परणमन की वृद्धि कहिये। असंख्यात्मगुण परणम है ऐसा कहिये तब असंख्यात्मा गुण परणमन की वृद्धि कहिये। अन्तगुण गुण सिद्ध परणम है ऐसा कहिये तब अन्तगुणपरणमन की वृद्धि भई।

ऐं एक वसुवा साधु आदि कहिये हैं।

वसुवा सामान्यविषयता देकरी सब द्रव्य-गुण-प्रयः को चाहे है; आप परिणम करी आपको साहेब है ताते साधु कहिये है। आपने भावमें अवस्थानकर न आवन ता माते यति कहिये, विकार जीता माते यति। ज्ञानवतु ज्ञानविकार न आवनहो ता, रसन अदरश्वाकर न आवनहो ता, वीर्य अवीर्यविकार न आवनहो ता, अत्यधिको अनुवकुलो रसाध्याद-उपजस्थुद दुःखविकार न आवनहो ता। गुण गुणका विकार अभाय भया ताते सबगुणवसुवा यति नाम पाया। ज्ञानवसुवा सबको प्रक्ष करी ताते वसुवाको मुगि कहिये।

आगे अगुरुलघुको च्यारि रिषि आदि में कहिये है।

अगुरुलघुगुण अनन्तरिद्विधारी है, न गुरु कहिये भारी न हलका; द्रव्य जैसे का ताई अगुरुलघुतें है। पर्याय जैसी को ताईसी अगुरुलघुते है। ज्ञान न हलका न भारी, दर्शन न हलका न भारी, वीर्य न हलका न भारी, अभ्यय न हलका न भारी, सब गुण न हलके न भारी। अगुरुलघुगुणकी रिषि सब गुणनमें आई ताते सब ऐसे भये। फत वृद्धि हानि विकार अगुरुलघु तें भया ताते सब द्रव्य गुण की
परमात्मपुराण

20

प्रमेय प्रमाण को साधु संज्ञा कहहये है-

प्रमेयपराम न कर आफसकी आप साधु तत्ता साधु सब गुण प्रमाणकरेबज्यता करिसाधु तत्ता साधु है। प्रमाण विकार को आपने न दे तत्ता यति। दरशन का अदरशनविकार दरशनप्रमाण न आवने दे। ज्ञान का अज्ञानविकार ज्ञानप्रमाण न आवने दे। वैष्णव अन्तद्वयु हो न का इतने नितसुखादिकखिकार शो अन्तद्वयुगम्राण न आवने दे। सम्प्रति निभिकल्य यथावत सम्प्रति निभिकल्य निजवतु का सम्प्रति ताका विकार भिन्यतकास्मयनकरोन आवने दे। ऐसे अन्तहुगविकारको अन्तहुगप्रमाण न आवने दे। एक यतिपद प्रमाण न (ने) धर्मा तत्ता विकारता प्रमाण न हरी तत्ता यति प्रमाणको कहहये। प्रमाण ज्ञान का तात्त्व अन्तज्ञान आया तत्ता मुनि प्रमाणको कहहये। सब गुण का ज्ञान प्रस्तु कीया, ज्ञान प्रमाण में ज्ञान तत्ता प्रमाण मुनि भया।

ऐसे ज्ञानगुणको व्यारि वेद कहहये है।

ज्ञान को रिधि संज्ञा कहहये भई सो कहहये है-ज्ञान आपान ज्ञानप्रण का स्वसंवदन विलास तीये है। ज्ञानके ज्ञानप्रण है तत्ता अपान का आप जाने है। आपके जाना अज्ञात है। अन्तद्वयुगम्रान ज्ञानपरमत्ता ते आपही आप अन्तद्वयुगम्रान न ले हैं। जिसके उपचारारम् ऐसा कहहये। ज्ञानके तिहूं का संबंधी जोखप्रपत्रिविव भये सर्वज्ञाता भई। लोकलोक अस्रुपूर्व उपचार करि ज्ञानमें आये। ज्ञान अपने सुभाव करि धरण है, जुबगा है, अखण्ड है, सासता है, आनन्दविवासी है, विशेष गुण है, सबमें ज्ञान है। अपने पर्यवेक्षकरि अन्तर पदार्थ का भासक हैं। वीर्यगुण दर्शनको
परमात्मपुराण 22  
अतिलक्षणस्त ऐसे सनातन ज्ञान जाने है तब प्राप्त है। तात ज्ञान है।  
सूक्ष्म के भेद द्वारकसूम गुणसूम पर्यायसूम ज्ञानसूम दर्शनसूम वीरसूम सूक्ष्मसूम अनुगृहसूम द्रव्यसूम वस्तुव्रतसूम ऐसे अनुगृहसूम संबंध में ज्ञान प्राप्त करे है। तात ज्ञान प्राप्त है। ऐसे अनुतंत्र गुण के अनत अपर महिम मंडित में ज्ञान प्राप्त करे है।  
तात ज्ञानमें ऐसी ज्ञायकिर्दिः है तात ज्ञान रसि कहिये।  
आये ज्ञानको साधु कहिये-ज्ञान अपनी ज्ञायकिर्दिति करि आपको अप साधे। अनन्तज्ञानमें सब व्यक्त भये ताते सब प्राप्त कीये। ताते सके प्राप्तभाव करण का साधक है ताते साधु। ज्ञानकर सरुपसर्ववच सचै। आत्मज्ञान ही ते सर्वज्ञभिमाको पाये है। ज्ञान ज्ञानको साधु को व्यक्तित्रणना है ताते सरुपसर्ववच है। आत्मज्ञान ही ते सर्वज्ञभिमाको पाये। संसारभाव नाति अन्य तबवानेतरेशभिम कल्याणमाव स्वभाव परस्परभाव चेतनानुगुणन व्यावभाव ऐसे अन्तरूपाभाव में एक एक गुण धेरे है। ऐसे अनत अनत गुण एक एक प्रदे धेरे सो ज्ञानों वेद प्रदेश जाने तब प्रगटे दिना ज्ञान विन प्रदेश की सकल विशेषता की न जानता। ताते प्रदेश महिमा जानने को ज्ञान है। सत्तागुण सातसलक्षणको धेरे द्वीपस्त गुप्तस्त पर्यायसूम अनुगृहसूम सूक्ष्मसूम अनुतंत्रसूम महासत् अन्तरसूम एकयायसूम अनेकयायसूम विश्वरुपसूम एकरुपसूम सर्वव्यायस्थितिसूम एक एक पदार्थस्थितिसूम त्रिलक्षणसूम ।
परमात्मपुराण

23
ज्ञान आफस्सपही है। ओरको प्रक्ष्ण जाने है तात्त्व मुनि है।

आगे दर्शनको च्यारिसेंड कहिये है।

dरसन रिष्य है। दर्शन देखवेमात्र है। उपचारे लोकालोकको देख है, अन्तर्गुणको देख है, द्रव्यको देख है पराजयको देख है। जो दर्शन न होता तो द्रव्य अदृश्य होता तब ज्ञान कौनको जानिता। ज्ञान न जानिता तब परमात्मा न होता तब दर्शन ज्ञान चारित्र का आमाके वस्तु का आमाके होता। तत्त्व दर्शन देखने रिद्वते सब सिद्धि है। ज्ञानको न देखता तो ज्ञानका सामाजिक अदृश्यता आवती, तब सामाजिक अदृश्य भये विशेष भी न होता। सामाजिकविशेष का आमाके वस्तु-आमाके होता तत्त्व ज्ञानसी दर्शन की रिद्वते है। सत्ताको न देखता तब सामाजिक अदृश्य भये विशेषता जाती तब सत्ता न रहती। वीर्यको न देखता तब वीर्य भी सत्ता की नाई अदृश्य भये नाश होता। ऐसे अन्तर्गुण दर्शन के देखवेमात्र रिद्वते सिद्धि भये देखना निर्विकल्पसकी प्रगट करे है। जहाँ देखना तब जानना, जानना तहा परमात्मा। तत्त्व दर्शन के देखवेतथे उपयोगरिद्वत है। एक गुणके आमाके सब आमाके होय, तत्त्व दर्शन अपने रिद्वते सबकी सिद्धि करे है। दर्शन सवर्दशी है। दर्शन असाधारण्गुण गुण (?) है। दर्शन मुख्य चेनना है। दर्शन प्राधान है, तव दर्शन ऐसी रिद्वते के धारे ते रिद्वते कहिये है।

आगे दर्शन साधु कहिये है-दर्शन सत्ताविशेषति करेआपको आप साधु है। और के देखनेकर विन्कको प्रगट करण साधे आप सबको देखे। दर्शनकर आतम देखे तत्त्व सवर्दशीपणा की आतममा साधे। अपने देखनेमात्रकर जानना ज्ञान का होई। कहते यह सामाजिकविशेषपूण सब पदार्थ का निर्विकल्पता अवलोकन दर्शन करे, तो ज्ञानमे तो निर्विकल्प सत्ता अवलोकन नहीं तत्त्व यह दर्शन का भाव है। जो सामाजिक न होय तो विशेष ज्ञान न होय सब अदृश्य भये ज्ञान किसका होय। तत्त्व द्रव्य (स्थ) दर्शनकर भये अदृश्य प्रमाण मिटता। ज्ञान भी विशेष ज्ञाता भया। ज्ञान-दर्शन का ज्ञानतर्काम है। तत्त्व दर्शन साधु गुणकी प्रगट करि साधे तत्त्व साधु है।

आगे दर्शन को यति कहिये है-दर्शन अदृश्य अवलोकन विकार दूरी कीया है। जो विकार रहता तो सर्वशक्ति दर्शनम न होती। विकार जीतें जली भया। दर्शन विकार को सुधारम न आवरके दे। सकलसुधार क्षिता दर्शन की में अतीतार भी न लागै ऐसी निराकार शक्त ग्रहणी तत्त्व यति भया।

आगे दर्शनको मुनि कहिये है-दर्शनम ज्ञानमी दर्शनायया तहा नेवल दर्शनम नेवलज्ञानका अवलोकन भया तब प्रक्ष्णानीकी मुनिसंज्ञा है। दर्शन अन्तर्गुणकी प्रक्ष्ण देखे है। जो प्रक्ष्ण करे ताको मुनि कहिये है। तत्त्व दर्शनको मुनिसंज्ञा कहिये। ऐसे सबमें चारि २ धेद जाने।

आगे परमात्मराजा के अमारव अन्त्य है

ध्यानेर केतायेक नाम लिखिये है

प्रकृतिवनाम, विमृत्तिवनाम, तत्स्वनाम, अमलभावनाम, चेनप्रकाशनाम, निजहिंदनाम, असंकुमितविकासनाम, त्यागपादानशूरुवलनाम, परमात्मशिक्तनाम, अकर्तृत्वनाम, कर्तृत्वनाम, अमोकतानाम, मोकतानाम, भावनाम, अमानाम, साधारणप्रकाशनाम, असाधारणप्रकाश, कर्तानाम, कर्णनाम, कर्णनाम, संपदाननाम, अपादाननाम, अविकृतप्रकाश, अगुज़लपुनाम, सूक्ष्णाम, सत्तानाम, वर्तुत्तलनाम, ध्यानाम, प्रमेयतनाम, इत्यादि अन्त्य है। अपने अपने भौगो का काम सब करे है। इनका विशेष आगे कहिये।
परमात्मपुराण

प्रदेशदेसमें गुण जो पुष्प कहे अर गुणपरिणाति नारी कही तो विवास रेलें करें हैं सो कहिये हैं-

वीरगुण नर के परणति चीर की नारी सो दोउ मिलि भोग करें हैं सो कहिये हैं। चीर के अंत मंग है, सतावीर, जानवीर, दरसनवीर, प्रेमवीर ऐसे अन्तमुगके अंतन वीररूप अनंत अंगकरि अपनी नारी जु परणति ताके भोगकारे। ऐसे सब अंगमें चीर परणति परत्ताई। चीर परणति का अंत चीर नरसी व्राय व्यापक भया तब दोउ अंग के मिलनते अतेदी भोग भया तब आनंद पुत्र भया। तब सब गुण परिवारमें चीरशक्ति फैली रही थी, ताते वह चीर की शक्तिते निहयत थे। याके पुत्र भयं सब गुण चीरअंग था, चीरअंग परविफलतै भयं तब सब गुण परविफलतभे ताते सब गुणरूप में मंगल भया। ऐसेही ज्ञान नर तंत्र पदका धारणी था यह अपनी ज्ञान परणतिसी मिलि भोग करे है ताते वरण करिये हैं-

ज्ञान अनंतताष्टित सवस्वनदुत्तर घरे लोकालोक का जननहार अन्तमुगको जाने। सत सर्पजान सत चीर सत प्रमेय सत अन्तमुगके अंतत सत ज्ञान अंत महिमा निधि ज्ञानगुण ज्ञान ज्ञानपरणति नारी ज्ञानगुण मिलि परणति ज्ञान का अंत २ मिलनते ज्ञान का रसायन परणति ज्ञान की ले ज्ञान परणतिका विलास करे। ज्ञानरूप उपयोगचेतन ज्ञानकी परणति प्रमात रहे। जो परणति नारी का विलास न होता तो ज्ञान अपने ज्ञान लक्षण्कै यथार्थ न राखे सकता। जैसे अवधके ज्ञान है ज्ञानपरणति नहीं। तातें ज्ञान यथार्थ न कहिये। तातें ज्ञान ज्ञानपरणतिको घरे तब यथार्थ नांप पावे। तातें ज्ञानपरणति ज्ञान यथार्थ प्रमुख राखे है। जैसे भी नारी अपने पुष्प के घर का जमाव करें है तैसे ज्ञान सवससुखुकित घर ज्ञानपरणति करे है। ज्ञानपरणति ज्ञान के अंगको वेदि वेदि विलिसे है। ज्ञानको संगी
परमात्मपुराण

किसी के परवरे। यह परन्तु दरशकाशतियों मिति संयोजनसुख ते है। दरशकाशतियों किरे जन्मुआ महासंभोगी दूधा वर्तत है। तथा दोहे के संयोजन करिआंदनाम पुजा की उत्पत्ति होइ है। तव सब गुण परिवार महाआनंदी भये मंगल की करिये है। शाल इस नारी का पुरुष का विलास वरण कर_timer की कोन सम्बंध है।

आगे द्रव्य नर अपनी परन्तुतिय तिय का संयोजन करे है सो कहिये है

द्रव्य आप द्रव्य ते नाम पाया है। द्रव्य जब द्रव्य है तब गुण परजाय की सिद्धि द्रव्य अपने अत्यंत गुण को द्रव्य व्यापे है क्रमवती परजाय को द्रव्य है ताते द्रव्य है। द्रव्य बिना परन्तुति न होती, परन्तु द्रव्य मिति गुण न होते तव द्रव्य (का) अभाव होता ताते द्रव्य द्रव्य की सिद्धि वकर करे है। द्रव्य गुण द्रव्य अन्तर्स द्रव्यतियों है। जो द्रव्य न परन्तुता ताम द्रव्य न होता तव द्रव्य न होता। ताते परन्तुति द्रव्य कारण है। ताते परन्तुतियों द्रव्यपुरुष की सिद्धि है। द्रव्य अपनी परन्तुतिया की अंग विली है। परन्तुतिया द्रव्य द्रव्य श्रृंखला विली है। द्रव्य सब गुण है सो सब गुण के द्रव्य के सब अंग एकादम परन्तुतिया विली है। जब सब गुण के द्रव्य में विली है सब गुण के द्रव्य आधार सब गुण थे। ऐसे द्रव्य के विशेष विलास की करणार्थिय भई। परन्तुति मिले द्रव्य की सिद्धि ताते परन्तुतिया का विलास द्रव्य कारण पहंच को आधार वकर को अभाव थे।

प्रश्न-द्रव्य परन्तुति सब गुणमें पैदी इहां द्रव्य ही का विलास कहाँ करे है। सब गुण कहै सब गुण की परन्तुति कहै।

ताको समाधान-सब गुण में ती द्रव्य भाय द्रव्य की परन्तुति द्रव्य की साध्य भई। ताते द्रव्य की परन्तुति द्रव्य करे अन्तर्स गुण की परन्तुति अन्तर्स में कहिये। कोऊ गुण की परन्तुति कोऊ

28 परमात्मपुराण

गुण में न कहिये। जिस गुणकी परन्तुति जिस गुण में कहिये विस गुण के द्वार सब गुण में आयो और गुणमें कहिये तब और गुण की मई। ताते द्रव्य के द्वार द्रव्य की है ताते परन्तुति का परम विलास प्रण है अनंत अतिसार की जीवन है। द्रव्य गुणपुरुष अपनी परन्तुति का विलास करे है सो महिमा अपार है। सारसुख उपजे है। इन दोहे के संयोजनर्ते आनंद नामा पुजा भयो है ताते सब गुणपरिवार के परमगान भयो है।

आगे अगुरुलघु अपनी परन्तुतिया का विलास करे है सो कहिये है।

अगुरुलघु का विकार षटगुणी वृद्धिहानि है। षटगुणी वृद्धि अपनें अन्तर्स गुण में परन्तुतनते है होय। अन्तर्स गुण परणवन में अन्तर्स गुण का रस प्रगट है। अन्त प्रेमभाव को तीयां अन्तर्स अन्तर्स वृद्धि अन्तर्स हाकान अन्तर्स गुण अन्तर्सकलावर सत्तामाभ प्रभाव विलास ता विलासमें नवसर वर्तत हैं। सो सब गुण गुण का रस व षटगुणीवृद्धि में सबे है सो कहिये है।

सत्तागुण में नवसर साखिये है। षटगुण में प्रथम सत्ता में संगार रस साखिये है। सत्ता सत्ताक्षण को धरि है। सत्ता को सिंगार अन्तर्स है। सत्ता साखी है। सत्ता में ज्ञान सब जोय को ज्ञान अन्तर्स ज्ञान ज्ञान प्रकाश सर्वशक्तिकारी सर्वसंवेदनास्थानी अन्त गहियो शिख सब अन्तर्स द्रव्यगुणपर्यंत जामें व्यक्तभन्य ऐसो ज्ञान आमृत वाण सत्ता पहनी सत्ता संगार भयो। निर्विकल्पुप्ति निर्विकल्पुप्ति अवकारी अन्तर्सकला को अभाव जामें सकल पद्धथ को सकल सामान्यासर्वस्ति सत्तामाध्य अवलोकी ऐसी आमृत सत्ता पहनी तब यह सिंगार सत्ता को कहो। दूरे सब निहत्र राखे समथ सो सत्ता धर्म तब सत्ता की सोभा भई। षटगुण में सबको प्रभाव करवेको प्रमाण सब जातें प्रमाण
परमात्मपुराण

भये सो सतानें धर्मी तब सता प्रमाणरूप भई तब सोभाई। तब सताको सिंहार है अगुरुषु तसतानें धर्मी तब सता हलै (को) मारी न भई तब सता अपने सुदर्शु रही तब भली लागी तब सता को सोभा भई। ऐसे अनन्तगुण सतानें धरं आपमाही तब सताको आमुण म सब भये सो ही सिंहार जानी।

इहां कोई प्रश्न करे-गुणमें गुण नहीं, सता अनन्तगुणधारी कहे कही?

ताको समाधान-सताको है लक्षण की अपेक्षा सब है लक्षणरूप गुण हैं। हैलक्षण सताको है यारं सतामें आये। द्रव्यती सब गुणके सब लक्षणकी आधार है। सता एक हैलक्षण करी आधार ऐसी भेद विकाही प्रमाण है। ऐसे सता सब रूप आमुण वावकर सिंहारकी धरी सोभावती है। सता द्रव्य गुण पर्याय के विलास भाव बिलसे है। सब विलाससर सतामें है तारं सिंहारसर सतामें भयो। सता अरु सतापर्यणति दोकी रसवृति प्रवृति सिंहार है। सता पर्यणति सताको वेदे तब रस निहपति होई अरु सता अपनी पर्यणति धरे तब आपही पर्यणति रसको धरे तब दोकी मिलापनं आनंदसर होय सो सिंहार है।

आये वीरसर सतामें कहिहे हे-सतातें प्रतिकुल का अभाव सतानें कीया अपनी वीरुपिट करी ऐसी वीरसमिष्टि सता में है तिसरे सता सासती निहपति धरे है। है विलास द्रव्य गुण परजय का वीर्य तें सता करे है तारं वीरसर में है। जदें गुण हैं अपने अपने प्रमाव को धरे हैं ते सब गुण में सासतामाह विकाशमाह आनंदमाह वतुनुक्तव विकाशमाह आनंदभाव ऐसे अनन्तभाव वीरसर में आये शक्ति तें वीर्य की यातें वीरसर में सबके रक्षणों का पराक्रम आया तारं वीरसर सता में भय। सता तारं सबको है भाव दीया। निहपति

30

परमात्मपुराण

वीर्य ने करी तातें वीरसर सता में कहिये।

आये करुणसर सता में कहिहे हे-सतामें करुणा है। कहतें सता हैमाव और गुणको न देता तो सब विनाश, तातें अपना हैमाव सबको देकरी राखे तब करुणा सवें तातें करुणसर सतामें आया।

आये सतामें वीभत्तसर कहिहे हे-सता अपने हैमाव के प्रभाव का विलास बड़ा देखा तब और प्रतिकुलभाव सी गलानी भई तब प्रतिकुलभाव न धर्म ब वीभत्त कहिहे।

आये भयरसर सतामें है सो कहिये हे-सता ऐसे भय की धर्म म हैं, असतामें न आये सो भय कहिए।

सता हास्यको धरे है सो कहिये हे-दरशन ज्ञानपर्यणति करि जो उत्तरास आनंद करे दरशन ज्ञान चारित्र की सता सो ही हास्य नाम जाना।

आये रोद्दसर कहिये हे-सता असता प्रतिकुलभावको अपने वीर्यें जीति सदा रहे है ताहा सदा परमाव का अभाव करणां। परके अभावरूप भाव सो ही रोद्दसर है।

आये अदमुक्तसर कहिहे हे-दमुक्तसर सतामें ऐसी हे-साकारज्ञान है, निराकार दरशन है, दोऊ की सता एक है। यह अदमुक्तभावर है।

शान्तसर-सता में और विकल्प नहीं सव शान्तरूप है तातें शान्तसर है।

ऐसे नंऊ रस एक सता में सवें है। ऐसे ही अनन्तगुण में नवें रस सवे है सो जानियो। रसयुक्त काय्य प्रमाण है। जैसे मोजन लवणरस सी नीको लगे तेसरे काय्य रस सहित भला लगे। तेसरे अनन्तगुण अपने रसभरे सोभा पावे तातें रस वर्ण कीयी।
परमात्मपुरण

39
आगे गुणपुरुष गुणपरणतिनारी का विलास केसे करें है सो कहिये है।

ज्ञानगुण अपनी ज्ञानपरणति का विलास करे है। ज्ञानके अंग में परणति का अंग आया तब अविनासी अखिलत महिमा निज धर की प्रगटी। ज्ञान का जुगल लघु परणति ने वेद्या तब एकतरस उपज्या। परणति ज्ञान में न होती तो अनत्यातिक्त ज्ञान न परणवता तब महिमा ज्ञान की न रहती। तात्स ज्ञान निज परणति धरि बिलास ज्ञान करें। ज्ञान में जानपण था सो परणति पराई तब जानपण वेद्या। तव ज्ञानश प्रगटव ज्ञानमें अतीतिक्रिय परणतिनिया के संस्करण है। ताते ज्ञान अपनी नारी का विलास करे है। तया आनंद पुन होय है। ऐसे अन्तगुणपुरुष सब अपनी गुणपरणति का विलास करे है। सब गुण का सरस्वत परणति सब गुण की है। एवंदेकतारण रस सब परणतित संभव प्रागट है।

प्रश्न-एक गुण सब गुण के रूप होइ वस्ते है। तहह सब गुण की परणति में संबंध विलास कीक न कीया ?

ताता समाधान-गुणपुरुष परणति जिस गुण की है तिसही की है और की नाही। विनामें जो परजय थारकर यास्कत करव है तिस परजयरूप अपने अंग में परणवे है तिस विलास की करव है। ताते अपने अंग गुण के है ते ते विलसे है। गुण निज पुरुष जो है तकरी विलसे है। जो यो न होय तो और गुण की परणति और गुण रूप होइ तब महदूरण लाग। ताते अपनी परणति को गुण जो है सोही विलसे है। यहां अन्तगुण विलास एक 2 गुणपरणतितिया जोगते करव है। सब यही प्रकर विलास करव है। अन्तग महिमा को धरे है ऐसे परमात्म राजा के राज में सब गुणपुरुष नारी अन्तग विलास को करव सुखी है।

परमात्मपुरण

32
दर्शन मंत्री परमात्म राजा को कैसे सेवा है सो कहिये है।

परमात्मरेजा की प्रजा अनन्तगुण शक्ति परजय सकल राजाधानी दर्शन देखवें ते दरसि भई तब साक्षात् भई। दर्शन ने देखवा तब अदरसि भंग ज्ञान कहां ते जानता। देखे जाने में न आवे तब ज्ञेय वस्तु न होय तब सब परमात्म का पद न रहाय। ताते दर्शन गुण देखि देखि सकल सरस्वत को साक्षात् करवे है। ज्ञान को देखे है तब ज्ञान अदरसि न होय है तब ज्ञान का अपवान न भये सदभाव ज्ञान का रहे है। वीर्य को देखे है तब वीर्य अडूर न होय है तब ज्ञान वीर्य को जाने है तब साक्षात् होय है। ऐसे अन्तगुण परमात्म के राखे की दर्शन कारण है। दर्शन निर्धार रूप निल्य है सो नीरकार शक्ति जनाव है। सामाय सत निविधगने अवलोके। ताते निविधलसेवा दर्शन की है जो ऐसे निविधल सेवा दर्शन न करवा तो निविधल सत न रहाय साक्षात् निविधलपत दर्शन में दिखाय है। निविधल ही वस्तु का सर्वसा है। प्राम सामायमाभव होइ तो विशेष होइ। सामायमाव बिना विशेष न होय। सामाय विशेषकर लीवे हैं। ताते दर्शन निविधल प्रपात करव है तहह विशेष की भी सिद्धि होय है। काहहें, सामाय भये विशेषनाव पावे है। ताते वस्तु की सिद्धि दर्शन करवे है। ऐसी सेवा करवे है। दर्शन सब गुणमें बहोत बरीकीको धरे है। काहहें, विशेषमें बहु पावे दर्शन सामाय अवलोकन मात्रमें सब सिद्धि तो है परि यहां अंग अतिशुभाष निविधलसरसूर सिद्धारूप अक्रियरूप अमूलतिरूप अवंतितिरूप ताते गम्य जब होइ तब सब सिद्धि होय। विलास जन दर्शन में गम्य करवे, संतारा अवसया में विशेष करवे सब जाने। सामायमाव्यां कोई विलास पावे विशेषमें बहु पावे। सो
परमात्मपुराण

यह कथन साप्ताहिक विकास को है। दर्शन की सिद्धि सामान्य जनावरों को कहते हैं। जो कोई अपने प्रयुक्त समीप जाय है तो प्रथम देखे हैं तब सब किया होगा है। प्रभुकों न देखे हैं तो कछू न होय तस्मां परमात्म राजा के देखे सब सिद्ध है। जैसे निर्विकल्प रीति करि दर्शन सेिवे ताकों निर्विकल्प आनंदवल होय है।

आगे ज्ञानमंत्री परमात्म राजा को कैसे सेवे हैं

परमात्म राजा के जो विवेक है ताकों विशेष जामे अनंतमुण की अनुसूचि अनंतर्याय, एक २ गुण की परजायने महत्नार्य, गृहमें अंत थाट, थटमें अनंतकला, कलामें अनंत्रुप, रुपमें अनंतसता, सत्तामें अनंतमाद, भावमें अनंतरस, रसमें अनंतस्माय, प्रभावमें अनंत विविध, विविधमें अनंतविधि, रिश्चिमें अनंत अतीताय
अनुपकूल अनोपम अखिलित स्वाधीन अभिवादन आनंद ये सब भाव ज्ञान जाने तब व्यक्त होत तब नांव पावे। ज्ञान न जाने तब वेदवो न होय तब दूर ही न हुया। तात्त्व ज्ञान अनन्तगुणर्य सीमावर को प्रगट करे है। तब परमात्मा को पद प्रगट करे है। तब परमात्मा को पद प्रगट होय है। ज्ञान जाने परमात्मानें तब सरवत परमात्मा को प्रगट। ज्ञान विकलपवतो पदार्थ जाने या शक्ति ज्ञान है।

स्वसंवेदन ज्ञान तात्त्व ज्ञान सकल विशेष भाव स्थप का लेखावाली छे सो ज्ञान सकल न प्रगट करे। सो परमात्म राजा को प्रभुत ज्ञान प्रगट करे। ज्ञान विना परमात्म राजा की विशेष विहृति कुन प्रगट करे, ज्ञान ही प्रगट करे। ज्ञान मंत्री (को) ज्ञायकदर्श जानि परमात्म राजा (ने) सवभ में प्रभावता दई। राजा को राज ज्ञानकरि है। जैसै काहू के घर में निधान है, न जाने तो वह निधान भये ही न भयी। तसैं परमात्म राजा के अनंत निधान ज्ञान न जाने तो सब दृष्टा होय। तात्त्व सब पद की सिद्धि ज्ञानमंत्री ते है। सत्तामें

परमात्मपुराण

सास्तालक्षण (ने) और गुणको सासता कीया। उत्तरदयाय को घरे

34 परमात्मपुराण

द्रव्य गुण पर्यय का आदर तो ज्ञान ने जनाया। परमात्म राजा

को बीर्में निह्यन राखे का भाव है, सबको निह्यन राखे सो

ज्ञान के भाव पर्ययभाव ज्ञान ने जनाया। तात्त्व ज्ञानमंत्री सब का जनावनहार है। सबको ज्ञान करि परमात्म राजा

जाने है, तात्त्व यह जाने है अपे ज्ञानमंत्री करि में सब जानी है।

यह ज्ञानमंत्री प्रभाव सब परी प्रभाव है। या ज्ञानमंत्री को अपना

सर्वस्व सौंप है। अरु विशेष अतीतिय आनंद की सिद्धि ज्ञान पावे

है। ज्ञानुथि इस परमात्म राजा के और बर्द नाही। सर्वझाता यहि

को संभव है।

आगे चारित्रमंत्री कैसे सेवे है सो कहिये है।

परमात्म राजा के जेता कछू राजरिथि का भाव है। तेता

भावको चारित्र आबरे है धिरता राखे है। ज्ञान के जानपने को

आसाधी होय धिरता राखे आबरे। ज्ञान स्वसंवेदनय घरे परम आनन्द

उपवासे है सो चारित्र दर्शन में सर्वदर्शी शकित है। स्वसंवेदन के

है परमात्म राजा के देखवेंहो जो आनन्द पावे हे-धिरताभाव पावे

है सो भारित्ते। बीर्में निह्यन को धिरता पावे है सो चारित्रें,

प्रमेय सता आदि सब गुण धिरता पावे है सो चारित्रें। वेदक्वाव

सबका चारित्र करि है। चारित्र सब द्रव्य गुण पर्यय शकित तक्षण

सरुप रूप सरवस वेदें हे धिरता राखे है। चारित्र मंत्रीते अपने घर

की सिद्धि का जो सुख है सो परमात्म राजा विलस है। जो चारित्र

न होता तो अपी राष्ट्रयणी का सुख आप परमात्म राजा न विलसता।

काहें यह रसस्वाव करण को अंग इस ही का है और में नाही।

राजा का पद सफल अनंतसुखते है सो सुख इसते है। तात्त्व यह

राजपद की सफलता का कारण है। अर्थक्रिया घट कारक याते
अगे सम्पत्ति फौजदार का वर्णन करिये है।

सम्पत्ति फौजदार; सब गुप्तजय सब असंख्यदेश की है तिस प्रजा की मूलभूति पाले है। तिस गुप्तजय के प्रतितकृति है तिसका प्रेक्षण न होण दे है। कहूँ की जोरी चोरि न चले है। ज्ञान का प्रतितकृत अज्ञान ताकति संसारी साधनी अद्य भये दोहे है निजतत कर न जाने है। स्वरूप ते भिन्न पर को पूरा है न जाने है। परको स्व मानि मानि मोह बैरी को प्रवल करि अपशी शक्ति नंकर चोरी ताकि जोकि-देश में अनाधि के ही दे है बिनता का लेखनी न पावे हैं। ऐसी अज्ञान महिमा ताकि यह सम्पत्ति फौजदार अपने देश में प्रेक्ष असंक्षात हूँ न करने दे है। अर दर्शनावर्ती स्वरूप का दर्शन न होने दे है विषाण परके देखवे में करते है तहां आतम

रहि मानि है। अनादि आवरण ऐसा है। चक्षुरार परस्वतिकृत है हौर हूँ न होने दे है। चक्षु दर्शनावर्ती ऐसा है। अचक्षुरार अचक्षुरार हूँ न होने दे। अवधिदर्शनावर्ती अवधिदर्शन न होने दे। केवलदर्शनावर्ती केवलदर्शन न होने दे। निधा पाउँ जागरत का आवरण करि है सो स्वरूप दर्शन कहाँ तै हूँ न होने दे। ताते दर्शनावर्ती स्वरूप दर्शन का धातक है। ऐसे प्रतितकृति की सम्पत्ति फौजदार प्रेक्ष्य न होने दे। मोह, सम्पत्ति का धातक अन्त स्वरूप का धातक स्वरूपावर्ती चारित्र का धातक है। इस मोह (नै) जागत के जीव बहिरस्वरूप करि राखे हैं, पर का फंद पारि व्यक्त करि अनातम अन्तर्निः सुखी कीये हैं। साम्भव-अमृतरस्न न चामने दे है। अतन श्रद्धा वधि प्रतिति करि मानि है पर पद का अभिमानी रागते उन्मत पैद पैद पर नया स्वविषद दसा धारि विषय कथासर व्याख्यापकता परस्परणति असुधुद'u करि संसारवारा तिस मोहं कराया है इन संसारी जीवन कौ। मोह की महिमा श्रीसिद्धि अनित्य माने, मोहते परम प्रेम करि सुख दुःख माने है। महमोह की कलना ऐसी है। अनंतज्ञा के घणि की भूलार रख्या है। ऐसे प्रतितकृति बैरी की सम्पत्ति फौजदार न आवे दे। परमाल राजा की आण ऐसे मनावे है। वैदनिश करि संसारी सांता असाता पावे है तहाँ सुख दुःख वेदे है। हर लोक मानि मानि मोह परस्वि भरे स्वरूप अनुभव न करि सके। परस्वादमैं रस माने है। ऐसे प्रतितकृति कौ न आवे दे है। नामकर्म की करि नाना विचित्रता है। कोई देवनाम नराम नारकाम तिरंजनभम जातहिदि नराम नारीहिदि नाम अनेक नाम हैं ते धरे हैं। संसारी ते सूक्ष्मगुण कौ न पावे है। ऐसे प्रतितकृति का प्रेक्षण न होने दे है सम्पत्ति फौजदार। ऊँच नीच गोत्रकर्म के उदयें ऊँच नीच गोत्र संसारी धरे है। ताते
परमात्मपुराण

अगुरुल्लु गुणांकों न पावे हैं। ऐसे कर्म का प्रवेश न होने दे हैं। आयुकर्म स्वारी प्रकार, अंतराय पांच प्रकार इनकों न आवेने हैं समक्ता पौज्दार है। भावकर्म नोकर्म का प्रवेश न होय ऐसा तेज समयत का है। परमात्मा राजा की राजमाती यथावत येसी है तैसी राखी है। परमात्मा राजा के जेते गुण हैं तेत सुदृढ़ या समक्त हैं ताते याको ऐसा काम सौंपा है।

आगे परिणाम कोटवाल का वर्ण कीजिये है।

परिणाम कोटवाल, मिश्यातपरिणाम-परिणाम चोर का प्रवेश न होने दे है। परिणाम चोर कैसे हैं सो कहिये है।

स्वरूप रूप परिणाम के दोधी हैं, परिपक्व हुके हैं, परद का निवास पाय आतम निधि चोर्य ने क्रीण हैं। रागादि रूप अवस्था में अनाकुल सुख का संबंध जिनके क्रूडे न भया है। परद के रसिया है। भववासी जीवक अतिविथम है तो प्रीत लागे हैं। वंधन के करता है। पार्थिव हैं। विनाशीक है। अनादि दानी पार्थिवकुका की तीये हैं। परिपर्या अनादि है। ऐसे परिणाम का प्रवेश परिणाम कोटवाल न होने दे है। विस परिणाम कोटवाल ने परमात्मा राजा के देस की प्रजा की संबाज समय समय करी है। विस के बढ़ा जाना है। परमात्मा राजा ने एक स्वरूप अनाकुल सुख की रखवाली का उहदा सौंपा है। हमारे देस की सब सुदृढ़ तारी है। तब ऐसा जानु गुणप्रजा की समय समय और राजा की समय समय संसार करे हैं। अधा गुण के घर में प्रवेश करी निधन की सामूहिक कर कार प्रकार विनास प्रामाण करी है। या कोटवाल में ऐसी शक्ति है जो नैसक बक रोय तौ राजा का सब पद असुदृढ़ होय शक्तीतिंद होय संसार की नाई। ताते परिणाम कोटवाल सकल पद को सुदृढ़ राखे हैं। परिणाम के आधीन राजपद हैं ताते परमस्थायकारी
परमात्मपुराण 39

दोहा।
परम पुरुष परमात्मा, परम गुणनको थान।
ताकी रूचि नित कीजिये, पावे पद भगवान।।

॥ इति परमात्मपुराण ग्रंथ सम्पूर्ण ॥

सवेया।
परम पुराण लखेपुरुष पुराण पावे सही है सवज्ञान जाकी महिमा
अपार है।
ताकी कीमत धारण उच्चारण स्वरूप का है है निष्ठारणा सो
लहे भव्यार है॥
राज्य परमात्मा कौ करत बख्ता महा दीपको सुजस बढ़े सदा
अविकार है।
अमल अरूप चिदरूप चिदानन्द भूप तुरत ही जाने करे अरथ विचार
है॥।
स्वर्गीय कविवर दीपचंदजी कृत
झानदर्पण

दोहा।
गुण अनंत झायक विमल, परमज्योति भगवान।
परमपुरुष परमात्मा, शोभित केवल ज्ञान।।91।।

सवेया इकतीसा (मनहर)
झानुगमाहि झेय भासना भई है जाके,
ताके शुद्ध आतमाको सहज लखव है।
आप अपार जाकी महिमा महत महाओ,
अचल अखंड एकताको दरसाव है।।
दरसन झान सुख बीरज अनंत धारे,
अविकारी देव विद्यांद ही को भाव है।
ऐसो परमात्मा परमपदधारी जाकों,
दीप उर देखी लखिन हिथवे सुभाव है।।12।।

dेखी झानदर्पणकृत मति परपण० होय,
अर्पण सुभावको सरुफम करतु हैं।
उठत तरंग अंग आत्मीक पायतु,
अथ विचार किए आप उठातु हैं।।
आतमकथन एक शिवहीको साधन है,
अलख अराधनके भावको भरतु हैं।
विद्यांदरायके लखायवेकृं है उपाय,
याके सर्धानी पद सातो वरतु हैं।।13।।

परम पदारथको देखी परमार्थ है,
स्वर्ग सरुपको अनु विचार लीजिए॥
अविनाशी एक सुखरासी सोहे घटतोऽऽऽभीमे,
ताके अनुभू सुभाव सुखरस पीजिये।॥

देव भगवान झानकलाको निधान जाकों,
उसम अनाय बदलकाल धरे कीजिए।॥
झानहीमे गम्य जाकी प्रभूति अनंत रूप,
बेदि निज भावनामे आनंद लहिजिए॥14।।

dशा है हमारी एक चेतना विराजमान,
आन परभावनासित हैं काल न्याति है।
अपनी सरुप शुद्ध अनुभव आठी जाम,
आनंदकी धाम गुणग्रनि विसतार है॥

परम प्रभाव परिपूर्ण अखंड झान,
सुखको निधान लख आन रीति जारी है॥
ऐसी अवगाढ़ गाढ आई परतीत जाके,
कहै दीपचंद ताको वंदना हमारी है।॥15।।

परम अखंड बृहमंड विधि लख न्यायी,
करम विहंड करे महा भवाधनी।
अचल अरुपी अज चेतन चमतकार,
समेर साधो आति अलख अराधनी।॥

gुणको निधान अमलान भगवान जाको,
प्रतत दिखावे जाकी महिमा अवाघिनी।
एक चिदरुपको अरुप अनुभर ऐसी,
आत्मीक रूचि है अनंत सुखसाधनी।॥16।।

अचल अखंडपद रूचिकी धरेया भ्रम,
भावकी हरेया एक ज्ञानगुनाधारिनी।
सकलिं अंतको विचार करे बारबार,
परम अनुपु निज रूपकों उदारिनी।
सुखको समुद्र विदानंद देखे धमाहि,
मिटे भव बाधा मोख पंच की विहारिनी।
दीप जिनराजसी सरूप अवलोके ऐसी,
दत्तनको मति महामोक्ष अनुसारिनी।
चेतनसरूप जो अनुपु है अनादिहीको,
निहंदै निहारि एकताहीको चहुँ हैं।
व्यक्तिविक कला पाई मित पावन है,
आत्मरे भवनमें घर है रहतू हैं।
अचल अखंड अविनाशी सुखरसी महा,
उपायदेव जानि विदानंदको गहतू हैं।
कहे दीपबंदं ते ही आनवं आप लहि,
भवसिद्धपार शिवदीपकों लहतू है।
चेतनको अंक एक सदा निकलक महा,
करं कलंक जामें कोठ नहि पावए॥
निराकार रूप जो अनुपु उपयोग जाके,
झेप लखे झेपाकार न्यारो हूँ बताईये॥
बीरज अनंत सदा सुखली समुद्र आप,
परम अनंत तामें और गुण गाईये॥
ऐसो भगवान ज्ञानवान लखे धनही में,
ऐसो भव भाय दीप अमर कहाई॥
व्यवहार नयके धर्मेया व्यवहार नय,
प्रथम अवस्था जामें करलंब कहौँ है।

चिदानंद देखे व्यवहार झूठ भासतु है,
आत्मचक अनुभू सुभाव जिहो लहो।
देव विदरुप्कों अनुप अवलोकनति में,
कोठ विकल प्रभो नेहि लहो है॥
वेचन सुभाव सुधारस पान होय जहा,
अजर अमरपद तहन लह लहो है॥
ज्ञान उर होत ज्ञाता उपायदेव आप माने,
जाने पर न्यारो जाके कला है विखकी॥
करम कलकं पंक पंक नहीं लागे कोठ,
देव निकलक रुद्र भई निज एकी॥
निरसे अखंडत आखंडत सरूप पायो,
ताहीकरि मेटी भ्रमभावना अनेककी॥
देव हियबंधि बसे सासतो निरंजन है,
सो ही धनि दीप जाके रीति सुभ टेककी॥
मेरो ज्ञानज्योतिको उद्धोत मोहि भासतु है,
तारें परशुको सुभाव त्याग दीनी है॥
एक निराकार निरंज का अखंडत है,
ज्ञात सुभाव ज्ञानमहि योि लौँ है॥
जाकी प्रभुमां उठि गए हैं विभाव भाव,
आत्म लखावहींते आप पद लीनी है॥
ऐसें ज्ञानवनके प्रमाण ज्ञान भाव आपी,
करनो न रहो कछु कारण नवीनी है॥
मेरो है अनुप विदरुप रूप मोहिमाहि,
जाके लखे मिटे घूँ महा भवाधानना॥
जाके दरसामें विभाव सो विलाय जाय,
ज्ञानवर्ण
45
जाकी रूचि कीए सब्ज अलख अरताना।
जाकी परतीत रीत प्रतिकरि पाई ताते,
ल्यागी जगजाल जेती सकल उपाधना।
अगम अपार सुखदाई सब संतवकैं,
ऐसी दीप सध्व जानी झानसाधना।193।
आप अपलोके बिना कठौ नहाँ सिद्ध होत,
कोटिक कलेशगिकी करी बहु करणी।
क्रिया पर कीए रसभावनकी प्रापति हे।
मोक्षप्रथ सध्व नहाँ बंधहीकी धरणी।
झान उपयोगमें अखंड विदानद जाकी,
सांची झान भावना हे मोक्षअनुसरणी।
अगम अपार गुणधारीकी सुभाव साधे,
दीप संती जीवनकी दशा भरतरणी।194।
वेदत सरुप पद परम अनुप लहे,
गहे विदभाव महा आप निज थान हे।
द्वारको प्रभाव अरु गुणको लखाव जामें,
परजायको उपाचे ऐसो गुणवान हे।
व्यव उपवाद धूम सध्व सब जाहिकरि,
लहीैं उदोत लक्ष्य लक्षानको झान हे।
महिमा महत जाकी कहांली कहत कवि,
स्वसंवेदभावदीप सुखको निधान हे।195।
विदानदीप चुकसिधु हे अनादिहीको,
निहचे निहारि झानदिचि धार लोजिमे।
नय विवहारहीते करम कलंक पंक,
जाके लागि आए तोऊ सुदृशता गहीजिमे।

ज्ञानवर्ण
46
जैसी दिमि देखे सब ताको तेसो फल होइ,
सुध अवलोक सुधउपयोगी हूँजिये।
दीप कहे देखियतु आतमसुभाव ऐसो,
सिद्धकेस समान झानभावना करीजिये।196।
मैत्र विरोध दोठ नयनको पछिपात(१)।
महा तिकलक स्थापतिक अन्धारणी।
ऐसी निजवाणोके सरमा समेतार पावे,
झानध्यौति लङ्के करे करणनवानारणी।
सिद्ध हे अनादि यह काहौँ ज जाई खड्डवँ,
अलख अलंकरीत जाकी सुखकारणी।
लहिँक सुभाव जाको रहि हे सुधिर जेही,
तेही जीव दीप लहे दशा भरतरणी।197।
मानि परपद आपे भूले न अनातिहीके,
ऐसे रागवासी (निजरुप) न संभारे हे।
घटहीमें सासो निरंजन जो देव वसे,
ताको नहीं देखे ताते हितको निवारे हे।
जोति निजरुपकी न जाणी कठौ हीये माहिं,
याते सुखतागर सुभावको विसारे हे।
देशाना जिनेंद्र दीप पाय जब आप लहे,
हो रसभावम्य अनंत सुख धारे हे।198।
सहज आनंद पाय रहो निजमें लै लाई,
दौरे 2 वेमें धुकाई कोई पलत हे।
उपयोग चंचलके कीये असुबिता हे,
चंचलता में विदानद महरत हे।
अलख अंहंड जोति भवान दौसु ले,
ने एकते देखि ज्ञाननै उधरातु है।
सिद्ध परमात्मा सो निजरूप आतमा है,
आप अवलोकी दीप सुद्रता करतु है।19।।
अवल अखंड ज्ञानजोति है सरसू जाही,
चेतनानिधान जो अनंतुणाधारी है।
उपयोग आतमीक अतुल अवमियत है,
देखिये अनादि सिद्ध निहचे निहोत है।11।।
आनंदसहित कृतकृत्तता उर्जोत होइ,
जाही समे ब्रह्मनिषिदं देह जो संहारी है।
महिमा अपार सुखसिंधू ऐसो धरियार में,
देव भगवान लखि दीप सुखकारी है।20।।
परपरिमाण त्यागी तत्तकी संभार करे,
हरे भ्रमभावज्ञान गुणके धरिया है।
लखे आप आपमाहि रागदोष भाव नाहि,
सुद्र उपयोग एक भावके करेयाँ हैं।
धीरता सुरूपाहकी स्वसंवेदनमानमें,
परम अतेंद्री सुख नीरके ढरेयाँ हैं।
देव भगवान सो सरसू लखे धरियार में,
ऐसे ज्ञानवान भवसिंधुके तरेया हैं।29।।
लोकालोक लखिके सरसूं सुधिर रहे,
विमल अखंड ज्ञानजोतिपरकारी हैं।
निशकार रूप सुद्रभावके धरिया माहि,
सिद्धभागवान ऐक सदा सुरुवासी हैं।
ऐसी निजरूप अवलोकलत हैं निहचे में,
आप परतीति पाय जगती उदासी हैं।
अनाकूल आतम अनूप रस वेदतु है,
अनुभवी जीव आप सुख के विलासी हैं।22।।
करम अनादि जोग जाते निज जानो नाहि,
मानि परमाहि आपो भवमे वहतु है।
गुरु उपदेश समे पाय जो लकाबे जीव,
आप पद जाने भ्रमभावकौ दहतु है।
देवनके देव सो तो संवत्त आनादि आयो,
निजदेव से बिनु शिव न लहतु है।
आप पद पायवेको शृंखली बखायो जिन,
ताते आत्मीक ज्ञान समभे महतु है।23।।
गुणके वीचि जेसे घनघटामाहि रचि,
आप छिन रहो तोऊ तेज नहि गयो है।
करमसंजोग जेसे आवाँ है उपयोग,
गुरु सुमाह जाको सहव भी भयो है।
झेकाको ललक ऐसो ज्ञानभाव यामे काँऊ,
परम प्रतीति धारि ज्ञानी लखि लयो है।
उपयोगधारी जामे उपयोग कीं सिद्धि,
और परकार नहीं जिनवें चयो है।24।।
महा दुखदानी भव थितिक निदानी जाते,
होय ज्ञान हादी ऐसो भाव चमेया है।
अति ही अवकारी पापमुप्ज अवकारी सदा,
ऐसे राग दोष भाव तिनके दमेया है।
दया दान पूजा तील संजमाहि सुभावम,
ए हू पर जाए नाहि इनमें उभेया है।
सुंग्युसुं रीति त्यागी जागे है सरसुमाहि,
देहपरिमाण गति गतिमाहि भयो जीव, गुपत है रक्तो तौच धारे गुप्तवंद है।
कर्म कलंक तौच जामेन न कर्म कोऊ, रागदोष धारे हूँ विजुद्ध निरतं है।
धारत सरीर तौच आत्मा अमृतीक, सुध पक्ष गहे एक सदा सुखकंड है।
निहच्छ विचार देखो सिद्ध सो सरुप दीप, मेरे तो अनादिको सरुप विदानंद है।

बहु विसतार कहु कहांं जहां बहाकी असुध्दताः।
व्यागि गृहवास हे उदास महाब्रज धरे, यह विपरीति जिनलिंग माहि सुखताः।
करमकी चेतनामें शुभ्रयोग साधे, ताही ममत ताके ताही नभी सुधताः।
वीरार्ग देव जाको योही उपदेश महा, यह मोखपद जहां भावकी विशुद्धताः।

ज्ञान उपयोग जोग जाकौन वियोग हूँ, निहाई निहाई एक तिहलाकपूप हे।
ज्ञान अनंत विन सास्ती विराजमान, गतिमाहि भयो तौच अमल अनू है।
जैसे मणिमाहि कोऊ कारखान माने तौच, महिमा न जाय बाम वाहिका सरुप है।
ऐसे ही संभारिक सरुपको विचारै मैने, अनादिको अखड़ मेरी विदानंद रूप है।


dohā

विदानंद आनंदमय, सकति अनंत अपार।
अपनी पद ज्ञाता लखे, जामें नहि अवतार।

çadhya

सहज परम धनं धर्मं, हरन सब करन भरमल।
अचल अमल पद रमन, वमन पर करि निज लहि धल।
अतुल अबाधित आप, एक अविनाशी कहिे।
परम महामुखसिद्धु, जात सुगुण भाग न लहिे।
जोती सरुप राजत विमल, देव निरंजन धर्मं धर।
अथ वहितर्म्म कथन
मुनिलिंग धारि महाभ्रतको साधेया भयो,
आप बिनु पाए बहु कीन सुपकारणी।
यतिकिया साधिके समाधिको न जाने मेद,
मुदमति कहे मोक्षपदकी विचरणी।
करमकी चेतनामे सुभ उपयोग रीति,
यह विपरीति ताहि कहे भवत्वरणी।
ऐसे तो अनादिको अनंत रीति गहि आयो,
क्रिया नाहि पाई ज्ञानमूलम्मानुसारणी।
सुभउपयोगसती जैसे पुरुषबंध होय,
पारतर्को दान दीये भोगमूल जाइये।
सतसंगसती जैसे हितको सरुफ सत्ते,
थिरताको आए जैसे ज्ञानको बढाइये।
गुहवास्त्याग सो उदासमाभ किये होय,
भेद्ज्ञान भावमें प्रतीति आप भायिे।
कारणें कार्जिकी सिद्धि है अनादिकी,
आत्मीकज्ञानें अनंत सुख पाईये।
जामें परबदना उछेदना भई है महा,
वेदें निज आत्मापद परम प्रकाशतो।
अनाकुल आत्मसो अतुल अतेंदी सुख,
अमल अनूप करे सुखको विलासतो।
महिमा अपार जाकी कहाँतो बखाने कोय,
जाह्की क्रमासव देव चिदानंद भासतो।
निहाचे निहारिके सरुपमें संभारि देख्यो,
दोहा।

निज महिमामें रत भए, भेदज्ञान उर धारी।
ते अनुभू लहि आपको, करमकलंक निवारि।

मनहर।

मूर्ति पदार्थ जे भासत मयूर जामें,
विकारता उपल मयूर मकरंदको।
भवनकी ओर देखे भवना मयूर ठोर, रहे ज्ञात दसा नहीं परफंदको।
तेसे परफंदहीमें परही सो भासतु हैं,

परही विकार रीति नहीं सुखकपको।
एक अविकार शुद्ध चेतना ओर देखौ, भासत अनूप दुति देवविदानंदको।

मतगयनं संबेदा।

मेरो सरुप अनूप विराजत, मोहिमें ओर न भासत आना।
ज्ञान कलानिधि चेतन मूर्ति, एक अखंड महासुखकथाना।
पूर्ण आप प्रसार पिए, जहैं जोग नहीं परके सब नाना।
आप लर्नी अनुभाव भयो अति, देब निरंजनको उर ज्ञाना।

ज्ञान कला जागी जब पर सुख्वं त्यागी तव, आत्मीक भावनमें भयो अनुरागी है।
पर परर्षण में चंदू न रति माने, जाने पर न्यारी जाके सांसी मति जागी है।
महा भवनम्के विकार ते उठाई दीए, भेदज्ञान भवनस्तो भयो परत्यागी है।
उपदेय जानि रति मानी है सरुपामि, विदानंदेवमें समाधि लय लागी है।

दरसन ज्ञान सुदृढ़ चारितकी एक पद, मेरो है सरु बिन्ह चेतना अनंत है।
अचल अखंड ज्ञान जोति है उद्योग जामें, परम विशुद्ध सब भावमें महित है।
आनंदको धाम अभिमान जाको आदो जाम,
अनुभवे मोक्ष कहे देव भगवंत है।  
शिवपद पाईको और भांति सिद्धि नाहि,  
याते अनुभवो निज मोक्षतयांकत है।५५।।
अलख अरुणि अज आतम अभित तेज,  
एक अधिकार सार पद त्रिभुवनमें।  
घर ले सुमाव जाको सम्हू समायी नाहि,  
परपद आपो मानि भम्यी भवनमें।  
करम कलोनिमें डेल्यू है निशंक महा,  
पद प्रति रागी भयो तन तनमें।  
ऐसी विकालकी हू विपति विलाय जाय,  
नेक हू किं निहारी देखो आप निजमें।५६।।
निहवे निहारत ही आतमा अनादिसिद्ध,  
आप निज भूलिहैत भयो अबहार है।  
ञायक सकति जयाधिधि सो तो गोप० दई,  
प्रगट अञ्जनभाव दसा विसरारी है।  
अपनो रूप जाने औरसिनो और माने,  
ढाले भव्येंद निज रीति न संभारी है।  
ऐसे तो अनादि कही कहा साध्य सिद्धि अव,  
नेक हू निहारी निधि चेतना तुमहारी है।५७।।
एक वनमाहि जैसे रहतु विशाचि दोह,  
एक नर ताको तहां अति दुख दाखे है।  
एक वृद्ध विकराल भाव धरि त्रास करे,  
एक महा सुंदर सुभावको लखावे है।  
देखि विकराल ताको मनमाहि भय माने,  
सुंदरको देखि ताको पीछ् दौरि धावे है।
तेही जन पावै दीप चेतनता चीने है।
जगावसी अंध यो तो बंधौ बि करमसे,तिन है।
फंदी परमावसी अनादिको कलंक है।
नर देव तिरजंच नारकी भयो है जहाँ,
अहंबुद्धिहीन नोल्त्यो अति निर्णय है।
करकी रीति विषयतीहसी प्रीति जातें,
रागदोष धारी धारी भयो भु बंक है।
करम इलाजम न काज कोठ सिद्ध भयो,
ब्रह्म तौ धिनी जीव चेतनाको अंक है।

स्वपर विशेक धारी आतमस्वरूप पावे,
बिदान्द मूर्तिमें जेक लीन भए हैं।
परसेती न्यारी पद अचल अखंडरूप,
परम अनूप आप गुण है तेई लए हैं।
तिङलीक सार एक सदा अविकार महा,
जाकी भयो लाम तातं दोष दूरी गए हैं।
अतुल अबाधित अनंत गुणधाम ऐसी,
अभिसम अखंड पाय धीर थाई हैं।

राग दोष मोह जाको मूल है असुम सुम,
ऐसे जोग भावम अनादिल लगि रहतो है।
मेद्धान भावसेती जोगको निरोधि अति,
आतम लताहीमें निज गुनह लहरी है।
प्रद्धय इत्रय परत्याम भयो जाही समे,
आप है अनंत गुणभाई जाही गहरो है।
कारण सुकुरिजको सिद्धि करी याही माति,
सासती संदेह रहे देव जिन कहरो है।
तिहिकों नाही ज्ञानगर्य रस जाको है।
स्वसंवेद भावमें लखाव है सरूपहीको,
अनाकुल अंतंत्रि अंकडु सुख लाको है।
ताकी प्रभुवामें प्रतिमास्टि अन्तत तेजः,
अगम अपार समैसारपद वाको है।
सुखदिवित दीए अवलोकन है आपहीको,
अविनासी देव देखि देखि पद काको है।५८।
अतम दरब जाको कारण सदेव महा,
ऐसो निज चेतनमें भाव अविकारी है।
ताहिकी धरणाहरी जीवन सकति ऐसी,
तासौं जीव जीवं तिसुवचक गुणाथरी है।
ग्राम गुण परजाय ऐती जीवदसा सब,
इनहों में वस्तु जीव जीवनला सारी है।
सबको अधार सार महिमा अपार जाको,
जीवन सकति दीप जीव सुखारी है।५९।
दरसन-गुण जामें दरसि सकति महा,
ज्ञायक सकति ज्ञानमाही सुखदानी है।
अतुल प्रताप लीँवे प्रभूत सकति सोहे,
सकति अमूरति सो अरुणी बषानी है।
इत्यादि सकति जे हैं जीवकी अनंत रुप,
तिन्हें मिश राखिखिएको अति अधिकारी है।
बोरज सकति दीप भाए निज भावमें,
पावन परम जातें होई सिवधानी है।६०।
तिहुकाल विमल अमूरति अखिदत है,
आकरती जाकी परजाय कही खंजनी।
सकति अनती जेती जाहिम दिखाई देत।
महिमा अनत महा भासत सुरसनी।
कहे दीघांद मुख कंदेम प्रृथान-रूप,
सकति बनी है ऐसी सर दरसनी।६५।।
सकल पदारत्कौ सकल विशेष भाव,
तिनको लखाव करी ज्ञान जोति जगी है।
आतमीक लवचनकी सकति अनत जेती,
जुगपद जानिवको महा अति वगी है।
सहज सुरस सुरस-वेदहैमे आन्दकी,
सुधारार होइ सही जाके फरस (?) पगी है।
परम प्रमाण जाको केवल अखबंद ज्ञान,
महिमा अनत दीप सकति सरसनी है।६८।।
आतम अरुण परदेसको प्रकार धरे,
भवी जोयाकार उपयोग समलैन है।
लक्षण है जाको ऐसो विनेल सुभाव ताको,
वस्तु सुदृढाई सब वाहीके अधीन है।
ज्ञात्मा भावको लखाव लिए सदापलैः
इत्युरुगण परजाय यह भेद तीन है।
कहे दीघांजने ऐसी सवच है सकति महा,
सो ही जिज जाने जाके सुखकी कमी न है।६९।।
अनत असंग्य संघ भाग वृद्ध होय जहां,
संघ्य सु मसंघ्य सु अनांगुणी वृद्ध है।
एकदेखे भेद वृद्धि निज परिष्ठाम करे,
लैन होइ हानि सो ही करे व्यक्त सिद्धि है।
परणति आपकी सवचमी न जाय कहूँ,
विदानद देव जाके यह महा त्रांकित है।
सकलि अगुरुल्मु महिमा अपार जाकी,
कहे दीपबंध लखे सब ही समृद्धि है।

दरब सुभावकरि धीर्य रहे सदाकाल,
वय उत्पाद सो ही समै 2 करै है।
सासति खिन्न उपादान जाने आियातु,
होहि वस्तु मूल वस्तु आपहीं मधे है।

द्रव्य गुण परजेकी जीवनी है याही याते,
चेतना सुरसको सुभाव रस भरे है।
कहे दीपबंध यो जिनेको बखान्यो बेन,
परिणाम सकतिकी भव्य अनुसरै है।

काहू वरकार काहू काल काहू खेतमै,
हे हे न विनाश अविनाशी ही रहतू है।
परस प्रभाव जाके काहूसो न मेटयो जाय,
चेतना विलासके प्रकाशको गहतू है।

अन अव्यय जामें अवजत न कोइ जाहा,
अतुल अखंड एक सुरस महत है।
असङ्कुचित विकास सकति बनी है ऐसी,
कहे दीप ज्ञाता लखि सुखकी लहत है।

गुण परजाय गहि बणोहे है सरप जाको,
गुण परजाय बिंदु द्रव्य नाहि पाईये।
द्रव्यकी सरप गहि गुण परजाय भये,
द्रव्यहीं गुण परजाय ये बताईये।

सहज सुभाव जाते भिन्न न बतायी द्रव्य,
विन ही वस्तु के से ठहराईये।

ताते स्थायावत विद्ध जगमें अनादिनिर्द्र,
वचनके द्वारि कहो कहां लगि पाईये।
गुणके सरपहीते द्रव्य परजाय है हे,
केवलवतकति धुनि ऐसी करि गावे है।

द्रव्य गुण दोऊ परजायहीं पाईयतु,
द्रव्यहीं गुण परजाय ये कहावे है।
याते एक 2 में अनेक सिद्धि होत महा,
स्थाधवाद्वारि गुरुदेव यो बतावे है।
कहे दीपबंध पद आदि देको कोज सुनो,
आप पद लखि भवि भवाव पावे है।
सहज अनुत्यो अनुत्य लगी कर्े है।।८६।।

दरवसंगुन सो तो द्रव्यमाहि रहे सदा,
औरकों न गहे रहे जातारथताई है।

गुणकी स्वरूप गुणमाहिं सो विराज रहे,
परजाप दसा वांकी वाणीमाहि गई है।

जैसो गुण जाकी जाकी भांति करे और,
विषमाप हरे वामें ऐसी प्रभुताई है।

tवच है सककतः जा्यमें बिमुख अखंड तामें,
कहे दीप ऐसी जिन्वामिं दिखाई है।॥७७॥

जाके देश देसमें विराजित अनुत्य गुण,
गुणमाहि देस असंख्यात गुण पाइए।
एक एक गुणमिं लक्षण है न्यारो न्यारो,
सचनकी सता एक मित्रता न गाइए।

परजाप सतामाहि व्यय उपाध धूबवः,
षटगुणी हानि वृक्षः ताहीमें बताइए।

निह्चे स्वरूप स्वके द्रव्य गुण परजाप,
ध्याय के सदा तत्ते जीव अमर कहाईए।॥७८॥

चुन एक एकमें अनेक भेद ल्यायकरि,
द्रव्य गुण परजाप तीनों साधि लोजिए।

नय उपचार और नयकी विविधि साधि,
तात्ते भांति द्रव्यमाहि तीनों भेद कीजिए।

परजाप परजापमाहि मुख्य द्रव्य सो है,
याही रूप गुण तीनों यामें साधि दीजिए।

याहों भांति एककर अनेक भेद सबे साधि,
देखि विदानंद दीप सदा चढ़ जीजिए।॥७९॥

आप सुदर सताकी अवस्था जो सवरूप करे,
सो ही करतार देव कहे भगवान है।

परिणाम जीवाहीको कर्म करावे यातें,
पणित क्रिया जाकीं जाने सो ही जान है।

करता कर्म क्रिया निहृत विचार देखिे,
वस्तुसौं न भिन्न होइे यहे परम है।

कहे दीपवनं ज्ञाता ज्ञानमें विचारो सो ही,
अनुभू अखंड तरह पावे सुखानन्त है॥८०॥

गुणकी निधान अमलान है अखंडरूप,
तिमूंलोकमुण विदानन्द सो दरसि है।

जा्यमें एक सतारूप भेद त्रिधा फैलि रहों,
जाके अवलोकके निज अनाद वरसि है।

द्रव्यहींते नियत परजावते अनित्य महा,
ऐसे भेद धरिके अमेदता परसि है।

कहिे कहालों जाकी महिमा अपार दीप,
देव विदरुपकी सुभानता सेदरसि है॥८१॥

सहज अनादकर्ण देव विदानन्द जाकौ,
देखि उरमाहि गुणधारी जो अनन्त है।

जाके अवलोकके यी अनादिको विमाव मिटे,
होय परमात्मा जो देव भगवत है।

सिवगना जन जाकों तिमूंलकाल साधि साधि,
वाहीकी स्वरूप चाहे जोे जगि सत है।

कहे दीप देखिे जो अखंड घर प्रभुको सो,
जातें जगमाहि होय परम महत है॥८२॥

आतम कर्म दोऊ मिले है अनादिहीके,
याहींत अजानी ह्वे हात हुक पायो है।
करिके विचार जब स्थान विकेक तान्योि,
सवे पर भिन मान्यो नाहि अपनायो है।
तिथुकाल शुद्धज्ञान-ज्योतिकी ज्ञानक लीए,
सातपती स्वरूप आप्पद उर भायो है।
चेतना निधानमें न अन कहू आवन दे,
कहे दौपचंद सतंत्रवंदित कहायो है।८३।।
आगम अनादिको अनादि यं बतावु हैं,
तिथुकाल तेरो पद तोहि उपादेय है।
याहींत अखंद ब्रह्मांडको लचीया लखि,
चिदानंद धारेगुणवृद्ध सोहि घेि है।
तूः ती सुखसिद्धु गुणाशाम अभिनाम महा,
तेरे पद ज्ञान और जानि सब जेय है।
एक अवस्था सार सबमें महंत सुधा,
ताहि अवलोकि त्यागि सदा पर हेय है।८४।।
याही जगमाहि ह्वेय भावको लचीया ज्ञान,
ताको धरि ध्यान आन काहे पर हेि है।
परके संयोगें अनादि दुख पाए अब,
देखि तूः सँभारि जो अखंद निधि तेरे है।
वाणी अंगवानकीको सकल निचोर यहे,
समेतार आप पुन्त पाप नहि नेि है।
याते यह ग्रंथ सिव-पंक्ति रसेया महा,
अरथ विचारि गुरुदेव यों परे रहें।८५।।
ग्रंञ तप सील संजमादि उपवास क्रिया,
द्रव्य भावपुप दोष बंधको करतु हैं।
छियालीस गुण कथन
सवेया।
विमल सरीर जाको रुकिर करन खीर।
रवेद तन नाहिं आदिसंस्थानधारी है।
संहनन आदि अति सुन्दर सरल तीनों,
पर्म सुंगध देह महा सुखकारी है।
धरे सुम लक्षणको हित मित दैन जाके,
बल है अनंत भूभु दोषदुखारी है।
अतिसे सहज दस जनमें होङ ऐसे,
तिहुलोकनाथ भवि जीव निस्तारी है।197।
गण गमन जाके होय रात जोजनमें,
सुरभिक्र च्यां दिसि छाया नाहिं पाईए।
नयन पलक नाही लगँ न आहार ताके,
सकल परम विद्या प्रभुके बलातए।198।
दुबूमि सुबाज़ जहां अति अधिकार है।
त्रिमुखनपति प्रभु यात्रें हैं छतर तीन,
महिमा अपार ग्रंथ ग्रंथनें गाई है।।

परम अख़बार ज्ञानमाहि ज्ञेय भासत है,
ज्ञेयकार रूप बिवहारने बतायी है।
निखै निरालो ज्ञान ज्ञेयसे बखायी जिन,
दरसन निरालक रूढ़नमें गायी है।
बीज अनंत सुख सासती सरप लीं,
चंदुते अनंत वीताग देव पायी है।
जिनकीं बखानत ही ऐसे गुण प्राप्ति हैं,
याते जिन्राजदेव दीप उर भायी है।।

दोहा
सकल करमसौं रहित जो, गुण अनंत परमपाय।
किच ऊन परजाय है, बहे शिशु भवाना।॥
गुण छतीस भंजार जे, गुण छतीस हैं जान।
निज शरीर परजाय है, आचारज परकास।॥
पूरवांग ज्ञात महा, अग्नीपूरव गुण जानि।॥
जिह सरीर परजाय है, उपाध्याय सो मानि।॥
आठबीस गुणकीं धरे, आठबीस गुणली।॥
निज सरीर परजाय है, महासादु परवीन।॥

सवेया इकतीसा
गुणपरजायजुत द्रव्य जीव जाके गुण,
है अनंत परजाय परपरणति है।
परमाणू द्रव्यरूप सपरस रस गंध,
गुण परजाय षटवृद्धिहानिवति है।
ज्ञानदर्पण

रंजक सुभावसेती नाना धरे करे जहाँ,
परि परफंद धिति कौनी भवावासौनी।
भेद्धान भयमें सरमें संभारि देखौ
मेरे निधि महा भिदानंदकी भिलावानी।१०४।।
महा संगीक ऐसी झान जोति मेरे रूप,
सुदि निज रूपकी अवस्था जो धर्तु है।
कहा भयो धिरसी मलीन ध्वे के आयी तोँ,
निहारी निहारे परभावन करतु है।
मेघ घटा नम माहि नाना भावते दीसतु है,
घटासी न होय नमुहद्वत बरतु है।
कहे दीपचंद तिंगुलोक प्रभुताई ली,ए,
मेरे पद देखें मेरे पद सुकरतु है।१०५।।
काहे पर भावनमें दोति २ लागु है,
दसा पर भावनकी दुखदाई कही है।
जनमाहि दुख परसंगते अनेक सहे,
ताले परसंग तोकी त्याग जोगी सही है।
पानी के विलोँ कहु पाईये धित नाहि,
काव पर रति सुख दुःख सब माहि है।
ताले अवलोकि देखि तेरे ही सफळकी सुँ
महिमा अन्तरुपात्र महा बनी रही है।१०६।।
भेद्धानंदधारा करि जीव पुरुगल दोढ़,
न्धारा न्धारा लखि करि करम विंहड़ी।
विदानंद भावकी लखावः दरसाव कीथो,
जामें प्रति भासी धिति सारी बुझमंडडी।
करम कलक पंक परिहरि पाई महा,

सुद्धामूलक सदा काल है अखरेनो।
तेधें समकिति हैं सरफळे गवेरी जी,व
सिवपरलुपी कौनी दसा सुखमंडडी।१०७।।
आप अवलोकनमें अगम आपर महा,
धिदानंद सुख-सुधाधारकी बरसनी।
अन्तर अखर निज आनंद अभावति है,
जाकी झान दशा शिवपरलुपी परसनी।
सकति अनंतकी सुभाव दरसावे जहाँ,
अनुभौकी शीति एक सहज सुरसनी।
घनी झानवान तेधें परम सकति ऐसी,
देखि है अनंत लोकालको की दरसनी।१०८।।
तत्त सरधानकरि भेद्धान भासतु है,
जाते परसरा उष्ण महा पाइयतु है।
तत्त की तरंग अभिराम आठौ जाम उठे,
उपादेयमाहि मन सदा लाईयतु है।
अति सरसको अनूप करि सचित्ती,
ग्रन्थमें परतीति जाकी गाइयतु हैं।
परमार्थ पंथ वृ सम्पक योहरि नाम,
जाकी उर जानि जानि मानि माहि माहि है।१०९।।
आगम अनेक भेद अवगाहें सचित्ती,
लखिके रहसि जामें महा मन दीजये।
अरथ बिचारि एक उपादेय आप जाने,
पर भिन्न मानि मानि मानिके उपजिए।
जामें जैसौ तत्त होय जयावत जाने जाहि,
लखि परमार्थकों झान-रस पीजिए,
गुणि परमार्थ यो भेदभाव भायतु।
चिदानंद देवको सरुप लखि लीजिए।।९९०।।
सुदृढ़ उपयोगी देखि गुणम मगन होय,
जाको नाम गुणि हीए हरख धरीजिए।
मेरी पद मोहिमें लखायो जिहि संगसेती,
सोही जाकी उरिभ भाय भावना करीजिए।
साधरमी जन जामे प्रापति सरुपकी है,
ताको संग कीजे और परिहिर दीजिए।
यतिजनभेवा वह जायी भेद सम्यकको,
कहे दीप याको लखि सदा सुख कीजिए।।९९१।।
मिश्रामती मूढ जे सरुपको न भेद जाने,
परहीको माने जाकी मानि नहीं कीजिए।
महा सिवमार्गको भेद कहुँ पारे नाहिं,
मिश्रामम लागे ताको कैसे करि शीजिए।
अनुभो सरुप लहिआपम मगन है,
तिनहीके संग ज्ञान-सुधारस पीजिए।
मिश्रामम त्यागी एक लागिए सस्पीहीमें,
आप पद जानि आप पदको लखीजिए।।९९२।।
जाको चिदलचछन विचारि परत्तित करे,
ज्ञानभई आप लखि भयो है हितास्थी।
राने दोष मोह मेंदि मेंटयो है अखंड पद,
अनुभो अनुप लहि भर्यो निज स्वार्थी।
विहुलोकनाथ यी विच्छयात गायो वेदनिमें,
तामें धिति कीनी कीनी समकित सार्थी।
सरुपके स्वादि अहलादी चिदानंदहीके,
अथ वहिरात्मा-कथन लिखते।
मणिके मुकुट महा सिर्पे विराज्जु हे, हीं महि हार नाना रतनके पोये हैं।
अलंकार और अंग अंग में अनूप बने,
पुदर सपूतु दुःत देखौ काम गोए हैं।
सुरतु कुंजनिमें सुरसाध साथ देखें,
आत प्रार्थित ऐसी पुष्प बीज बोए है।
कर्मके ठाठ ऐसे कीने है अनेक बार,
ज्ञान बिनु भाए वीं अनादिहीके सोए हैं।
सुरपरजायनिमें भृगु भाव भए जहाँ,
सुख रंग राचौ रति कीन भरभावमें।
सभा हाव भावनिको निरक्ष निहारि देखें,
प्रेम परतीति भई रमणेषुमायमें।
देखि देखि देवनिके पुंज आय पाय परें,
सिद्ध महान ज्योति गुणको निधान तू है,
निष्ठे निर्हारि निधि आप परकारी है।।1921।।
परमेश रमणवामाहि रति मानि रायो महा,
मायामें मधुन प्रीति करे परिवारसी।।
विष्णुमोहसौज विष्णु में सुधापण जाने,
हित न पिछाने जीतो अति भव भारसी।।1922।।
एक इंद्रीआदि ते अस्ती रूपें जहां,
तहां ज्ञान कहां कथो करम विकारसी।।
अथैं देव गुरु जिनवाणिको साक्ष शुभं,
सिवपाथ साधो करी आतमविकारसी।।
परपद आपी मानि जगम सागदी भमी,
पायो न सरूष जो अनादी सुखधान है।।
राम दोष भवानिमें विद्वति बाधी महा,
बिन भेदज्ञान भूल्यो गुणको निधान है।।
अचल अखंड ज्ञानजोति को प्रकाश लीए,
घटहों देव देव विदानन्द महान है।।
कहै दीपचन्द आय इदहूसे पाँच परै,
अनुभु प्रसाद पद पाये निधान है।।1923।।

दोहा

विदलच्छन पहचानते, उपजे आनंद आप।
अनुभो सहज स्वरुपको, जामें पुज्य न पाप।।1924।।

कवित्त इक्तीसा

जगम अनादि यति जें पद घारि आए,
तें तें सब तिरे लहि अनुभो निधानको।
याके तिन पाए मुनिहू सो पद निरदित है,

यह सुख सिद्धे दरसामे भगवानको।
नारकी हू निकमि जे तीर्थकरपद पावे,
अनुभो प्रभाव पहुँचावे निधानको।
अनुभो अनंत गुणके धरे याहीको,
तिहुङ्को पूजे हित जानि गुणवानको।।1926।।
अनुभो अखंड रस धाराघर जयी जहां,
तहां दुख दावानल रंग न रहत है।
करमनिवास भवास घटा भानवेको।
परम प्रचंड पीन मुनिजन कहत है।
याको रस पीए फिरि काहूकी इच्छा न होय,
यह सुखधानी जगम महतु है।
आनंदको धाम अभिमान यह संतनको,
याहीको धरेरा पद साततो लहतु है।।1927।।
आतम-गवेशी संत याहीको धरेया जे हैं,
आपमें मधुन करें आन न उपासन।
विकाल पहुँचो कोऊ नहीं भासत है,
याको रस भीने ल्याइ सबे आन बासना।
विदानन्द देवके अनंतगुण जें कहे,
जिनको सकति सब ताहिमाहि भासना।
वसु उत्पाद धुङ्ग द्रव्य गुण परजया,
महिमा अनंत एक अनुभोविलासन।।1928।।

दोहा

गुण अनंतके रस सबे, अनुभो रसकेमाहि।
याते अनुभो सारिखी, और दूसरो नाही।।1929।।
सवेया इकतीसा

जनतकी जेली विद्या भारी कर रेखावत,
कोटिक जुगांतर जो महा तप कीने हैं।
अनुभो अखंड रस उरस म आयी जो ती,
सिवपद पावे नाहि परस भीने हैं।
एप अवलोकनिम आप सुख पाईयतुः
पर उरझार होय परपद चीने हैं।
तते तिम्बलोकपूज्य अनुभो है आतमाको,
अनुभी अनुभो अनुप रस लीने है।।

अडिल।
परम धरमकेद धाम जिनेश्वर।
शिवपद प्रपति हेतु आप उर आणिये।
निहचे अरु वौहार जिथाक्ष पाइहे।
स्वादादकरि सिद्धिमंथ शिव गायिे।।

सवेया इकतीसा

लक्षनके लखें बिनु लक्ष्य नहीं पाईयतुः
लक्ष्य बिनु लखें करैं लक्ष्य लखातुः है।
याते लक्ष्य लक्षनके जानिवक्त जनवानी,
कीजिए अम्बास ज्ञान परकास पातु है।
ऐसी उपदेस लखी कीनी है अनेक बार,
तोहुं होनाहारमांहि सिद्धि उठरातु है।
निहचे प्रमाण कीएं उद्यम विलाय जाय,
दोष नेविरेष्ठ कहु किम यो मिटातुः है।।
मानि यह निहचेको साधक वौहार कीजे,
जननके साध्य सिद्धि होती तो अनादिहीके,
द्रव्यगत महा अति सूविदियें।
काज नहीं सया ताते कछू न वसाय याको,
होनार भए काज सीझे ज्ञातिविधियें।
याते भवित्वत्तो सो काहूँ न लंदी जाय,
करि हे उपाय जो तो नाना ये विविधियें।
एक ने प्रणाम है तो काहेको जिन्दवेव,
कहे धनि जीवनको उद्ध बतानी।
तत्त्वों विचार सार वाणीहीते पाईयो,
वाणीके उथापे याकी दसा हे अभावनी।
मोक्षपंथ साधि साधि तिरे जिन्वाणीहींः
यह जिनवाणी रघु याकी याकी भली भावनी।
याहेको उथापे भली भावनी उथापी जारीः
यह भली भावनी सो उद्धमः पावनी।
उद्धम अनादिहीके कीए हैं न ओर आपनी,
कहु न मिठायी दुख जनम मरणको।
यह तो केउ बेर जाय जाय गुरुपास जांचोः
स्वामी मेरो दुख मेतो भवके मरणको।
दोनी उन दीप्या इन लीनो भले भावकरि,
सैं विनु आए काज करसे हवे त्यंको।
याते कहे विविधि बनायके उपाय ठामे,
बली काज जानि होनारकी ठरणको।
उद्धम अनादिहीके कीए हैं न ओर आपनी,
कहु न मिठायी दुख जनम मरणको।
यह तो केउ बेर जाय जाय गुरुपास जांचोः
स्वामी मेरो दुख मेतो भवके मरणको।
दोनी उन दीप्या इन लीनो भले भावकरि,
सैं विनु आए काज करसे हवे त्यंको।
याते कहे विविधि बनायके उपाय ठामे,
बली काज जानि होनारकी ठरणको।
जैसे कहू नगरम गए विनु काज न हवे,
पंथ बिनु कैसे जाय पहुँचे नगरम।
तत्सैं विवाहर नय निहायको साधतु है,
दीपकद्योत वसतु दूष लोजे धारमे।
साधक उच्च दिन्दि कोउ न बतावतु है,
नीके मूनिहारी काहे परे जूढ़ी हरमे।
अनादि निधान श्रुतिकेरी कहत सोही,
कीजिए प्रमाण मोक्षकृ होय करमे।
मोक्षकृ ऐसे जो तो याके करमाहि होप,
तो तो केवलके वैन सुने हे अनादि।
जतन अगोचर अपूर्व अनादि है,
उद्धम जे कीए जे जे भए सब दादि।
ताते कहां सांचों उथापतु है जानतु ही,
भोरो होय बैठो वैन मेटि मरजादि।
जो तो जिनवाणी सरदानी हे तो मानी मानि,
बीतगायेन सुखदेयन यह दादिके।
उद्धम के डारे कहू साध्य सिद्धि कहूँ नाहि,
होनार सार जाको उद्धम ही द्वार है।
उद्धम उद्धार दुखदोषको हरहरार,
उद्धमों सिद्धि वह उद्धम ही सार है।
उद्धम विना न कहू भवी भली होनार,
उद्धमों साधि भवी गए भवपार है।
उद्धम में उद्धमी कहाईं मभिं जीव ताते,
उद्धम ही कीजे कीयी चाहे जो उद्धार है।
आईवर भारत उद्धार कहू भवी नाहीं,
कही जिनवाणीमाहि अपर कुँचि तारणी।
बकी भरतेश जाके कारण अनेक पाप,
भए पै तथापि विरयो दसा आप धारणी।
अनुभूति रसिक हवे सरूपके संबंधी है।
कहे दीपचन्द चिदानंदको लखत सदा,
ऐसें उपयोगी आपद अनुसार है।1945।
अलख अखेड़ जोति जानको उयोग लीए,
प्रम प्रकाश जाको कैसे हवे छिपाई।
दरसन-ज्ञानधारी अविकारी आतम है,
ताहि अत्युल्किकें अनंत सुख पाई।
सिवपुरी कारण निवारण सकल दोष,
ऐसें भाव भएं भवसिन्धु तिरि जाई।
चिदानंद देव देख वाहों मगन हुजे,
याते और भाव कोठ तोर न अनाई।1946।
करमके बंध जामें कोठ नाहि पाईपु,
सदा निरंतर सुखमदकी धरण है।
सपरस रस गंध रुपते रहत सदा,
आतम अखेड़ परदेसकी भरण है।
आसरों अगोचर अनंत काल साती है,
अविनाशी चेतनकी होय न परण है।
सकति अमूरती बखानी व्यतरगढ़, 
याके उर जाने दुखमदकी हरण है।1949।
कर्म करतूतितें अतीत है अनादीहीकी,
सहज सरूप नहीं आन भाव करे है।
लक्षन सरूपकी न हक्षन लज़ावळ है,
तौळ भेद भाव रुप नहीं वितारत है।
करता करम क्रिया भेद नहीं भासत है,
अक्रूरत सकति अखेड़ रीति धरे है।
याहीके गवेशी होय ज्ञानमाहि लिख लीजे। याहीकी लखनि वा अनंत सुख भरे है। १५४८।। करम संजोग भोग भाव नाहि भासतु हैं, पदके बिलासकों न लेस पाइयतु है। सकल विभवकों अभाव भयै सदाकाल, केवल सुभाव सुहदस भाईतु है। एक अविकार अति महिमा अपार जाकी, सकति अभायतर महा गायतु है। याहीमें परम सुख पावन सहस्त नीके, याहीके सुरुपमाहि मन लाईयतु है। १५४९।। पर हे निमित हेष ज्ञानकार होत जहाँ, सहज सुभाव अति अमल अकंप है। अतुल अभावत अवझद है सुरस जहाँ, करम कलंकनिकी कोऊ नहीं झुंप है। अमित अनन्त तेज भासत सुभावहीमें, चेतनाको विह जामें कोऊ की न चम है। परिणाम आतम सुसकति कहावत है, याके सुरुपमाहि आन आवत न संप है। १५५०।। खाहू काळमाहि पररूप होय नहीं यह, सहज सुभावहीमें सुधिर रहतु है। आनकाज कारण जे सबे त्याग दीए जहाँ, कोऊ परकार पर भाव न चहतु है। याहीतं अकारण अकारिज सकतेहीकों, अनादिनिधन शुल ऐसें ही कहतु है। परकी अनेकता उपाधि मेंट एकरूप,
चेतना विलास परकास परदेशानिमे, ।
भसत अखंड लखे देव भगवंत है। ।
याहोंने अनूप पद पदवी विराजतु है, ।
महिमा अपार याकी भाषात महंत है। ।
सहज लखाव सदा एक चिदरुप भाव, ।
सकति अनंती जाने वंदे सब संत हैं।।१५६।।
परजाय भावको अभाव समे समे होय, ।
जलकी तरंग जैसे लीन होय जलमें। ।
याही परकार करे उतपाद व्य धरे, ।
भावको अभाव यहे सकति अचलमें। ।
सहज सरूप पद कारण वखानी महा, ।
वीतराग देव भेद लही निज थलमें। ।
महिमा अपार याकी रुचि कीए पार भव, ।
तहे भवि जीव सुख पाये ज्ञान कलमें।।१५७।।
अनागत काल परजाय भाव भए नाहिं, ।
तेई समे समे होय सुखको करतु हैं। ।
याहीतेय अभाव भाव सकति वखानियतु, ।
अचल अखंड जोति भावको भरतु हैं। ।
लच्छनमें लक्षण लखायितु याकी महा, ।
याके भाव अविनाशी रसको दर्थु हैं। ।
कहिये कहाँतो याकी महिमा अपार सूप, ।
चिदरुप देखें निजगुण सुधरतु हैं।।१५८।।
परको अभाव जो अतित काल हो आयो, ।
अनागत कालमें हू देखिए अभाव है। ।
भाव नहीं जहाँ ताको कहिए अभाव तहाँ,
कर्म सकति काज आतम सुधारनु है।

चिदंदं विध महा यो बलाइयु है।

लक्षणां लक्ष्य सिद्धि कही जिनआगममें,

याथे भाव भावार्थों भाव भावयतु है।196.2।

अप परिणामकरि आप पद साधुहै,

साधन सरुष सो हि करण बजानिए।

अप भाव भए आप भव्यको सिद्धि होत,

और भाव भए भावसिद्धि नहीं मानिए।

कारण सकति करै एकमें अनेक सिद्धि,

एक हे अनेकमधी नीके उर आनिए।

भिखे अमेर कीए भेद नाहीं भासतु है,

झानके सुभाव करि ताको रुप जानिए।196.3।

आपने सुभाव आप आपनको देव आप,

आप हे अखंड रस्सार्था बसाबे है।

सांप्रदान सकति अनंत सुखदायक है,

चिदंदानं देवके प्रभावको बढ़ावे है।

याहीमें अनंत भेद नानावत भासतु है,

अनुभूति रसस्वाद सहज दिखावे है।

पावत सकति ऐसो पावन परम होय,

सारो पागजस जस जाको जिगी गावे हो।196.4।

आपनो अखंड पद सहज सुधेर महा,

करि आप आपहीनें यहे आपदान है।

सातति खिणक उपाधान करे आपहीनें,

आप हे अनंत अविनासी सुखधान है।

याहीते अनूप चिदरुप रुप पाईयतु,
सहज सुरसको विलास यामें पाईयतु।
सदा सब संतजन जाके गुण गाय है। 1968।।
एक द्रव्य यापिके अनेक गुण परजाय,
अनेकाल सकति अनंत सुखदानी है।
लक्षन अनेकके विलास जे अनंते महा,
करि हे सदेव गायी अति अविकानी है।
प्रगट प्रभाव गुण गुणके अनंते करे,
ऐसी प्रमुखा जाकी प्रगट बखानी है।
महिमा अनंत ताकी प्रगट प्रकाशरुप,
परम अनूप याकी जगमें कहानी है। 1969।।
देखत सरुपके अनंत सुख आत्मीक,
अनुपम है हे जाकी महिमा अपार है।
अलख अखंड जोति अचल आराधत है,
अमल अरुणी एक महा अविकार है।
सकति अनंत गुण धरे है अनंते जोते,
एकमें अनेक रूप पुरे निर्धार है।
चैतना झालक भेद धरे हूँ अभेदरूप,
झायक सकति जाने जाकी विसतार है। 1970।।
स्वसंवेद ज्ञान उपयोगमें अनंत सुख,
अत्िद्री अनुपम है आका लखानन।
भवके विकार भार कोठ नहीं पाईयतु,
चैतना अनंत चिन्ह एक दरसानन।
ऐसी अविकारता सरूपहमें सासती है,
सदा लखि लीजें ताते सिद्धपद पावन।
आत्मीक ज्ञानमाहिं अनूपी विलास महा,
प्रागाली मूर्तिमें जानी ही सुधिर रहे, 
करे नहीं फिरी कहु आनकी उपस्थता। 
चिदानन्द चेतन सिमटकर चिह्न जाको, 
ताकी उर जानो में ठीक बचनी वाला। 
अनुभूत उल्लासमें अनंत रस पायी महा, 
रहस्य समाधिमें सारूप परकाश। 
बोध-नाभ बैठि भव-सागरकों पार होत, 
शिवको पहुँच करे सुखी विलास।१७५।।
ब्रजचारी गृही मुनि शुल्क न रूप ताको, 
क्षत्रिय वैष्णव जानन न सुंदर सारूप है। 
देव नर नारक न तिरजन रूप जाको, 
बाकी रूपमही नाहि कोऊ दोस्तपुर है। 
रूप रस गंध फास इतने तो रहे व्यायो, 
अवतार अखंड एक तितुलकापूर है। 
चेतनानिधान ज्ञानजोति है सारूप महा, 
अविनाशी आप सदा परम अनूप है।१७६।।
विधि न निषेध भेद कोउ नहि पाईयतु, 
वेद न वरण लोकरित्व न बताईए। 
धारण न ध्यान कहुं यवहारीजान कहहो, 
विकलप नाहि कोउ साधन न गाइए। 
पुनः पाप ताप तेज तहां नहि भासु हैं, 
चिदानन्दरूपकी सुरीति ठहराईए। 
ऐसी सुखसताकी समाधिमूलि कही जामें, 
सहज सुभावकों अनंतसुख पाईए।१७७।।
विशेषदेह भोग नाहि रोग न बिजोग जहाँ, 
सोगको समाज जहाँ कहिये न रंच है। 
क्रोध मान माया लोम कोउ नहि कहें जहाँ, 
दान शील तपको न दीसे परम्पर है। 
कर्म कलेस लेस लखी नहीं परे जहाँ, 
महा भवुँ जहाँ नहीं आगि अंच है। 
अचल अकर्ष अति अमित अनंत तेज, 
सहज सारूप पुनः सत्ताहकी संच है।१७८।।
थपन न थपना उथपना न दीसतु है, 
राग देश दोऊ नहीं पाप पुनः अंस है। 
जोग न जुगति जहाँ भुगति न भावना है, 
आवना न जावना न करकम कंस है। 
नहीं हारी जीती जहाँ कोऊ विपरीति नाहि, 
सुः न असुः नहीं निदा परस्पर है। 
स्वसंवेदजानमें न आन कोऊ भासतु है, 
ऐसे बनि रखो एक विदानंद हंस है।१७९।।
करण करावणको भेद न बताईयतु, 
नानावत भेस नहीं नहीं परदेस है। 
अथो भध ऊध विसेख नहीं पाईयतु, 
कोउ विकलपकोरो नहीं परवेस है। 
भोजन न गास जहाँ नहीं गनवास तहाँ, 
भोग न उदास जहाँ भवको न लेस है। 
स्वसंवेद जानमें अखंड एक भासतु है, 
देव चिदानन्द सदा जगमें महेस है।१८०।।
देवके भोग कहुं दीसे नहीं नारकमें, 
सुरलोकमाहि नहीं नारकको वेदना।
अंधकारमाहि कहुं पाइये उघोत नाहि,
परम अणूःमाहि भास्तु न वेदना।
आतमीक ज्ञानमें न पाइये अज्ञान कहुं,
वीतराम भावमें सरांगको निषेधना।
अनुभू विलासमें अनंत सुख पाईयतुः,
भवके विकारमाहि भई हि उछेदना।।८७।।
आंगते पतंग यह जलसती जलचर,
जटके बढ़ये सिद्धि है तो बट घरे हैं।
मुंडनते उरणे नगन रहेते पशु,
कष्टको रहेते तर कहुं नाहि तरे हैं।
पठनते शुक बक ध्यानके किएते कहुं,
सीझे नाहि सुनें याते भवदुख भरे हैं।
चबल अचांदित अनुघम अखंड महा,
आतमीक ज्ञानके लखेया सुख करे हैं।।८७।।
तीनसैं तियाल राजू खेलेत अनादि आयी,
अरसीहि अविषय माहि महा रति मानी है।
अपने कल्याणको न अंगीकार करे कहुं,
तत्सैं विमुख जगरीति सांची जानी है।
इंद्रजलवत भोग वंदिके विलाय जाय,
तिनहीकी चाहि करे ऐसी मूढ प्राणी है।
ऐसी परशुदि भव छिनहीं छूट है,
आप पद जाने जो तो होय निज जानी है।।८८।।
तिहुलको चाले जातें ऐसीं वज्रपात परै,
जगलके प्राणी सब क्रिया तजि देतु हैं।
समर्कती जीव महा साहस करत यह,
गतिगतिमाहि जैसे नाना परमात्मा धरे,
परम अन्य संगसती यह अत्यधिक कहावत है,
एकरूप रहे तिहुलोक कहे धन्य है।१९७१।।
सिद्धुः तरंग जैसे उपजिवित विशय जाय,
नानावत वृद्धि हानि जामें यह पाईए।
अपने सुभाव सदा सागर सुधिर रहे,
ताकों व्यय उत्पाद कैसे तहराइए।
तेसे परमजाय माहि होय उतपति तय,
विदानन्द अचल अखड़ सुद्ध गाईए।
परम पदार्थमें स्वारथ सरुपहीको,
अविनासी देव आप ज्ञानोति ध्याईए।१९८१।।
चेतन अमादि नव तवमें गुपत भभो,
सुद्ध पक्ष देखे स्वसुभावसुप्र आप है।
कनक अनेक वान भेदको धरत तोळ,
अपने सुभावमें दूसरो मिलाप है।
भेदभाव धररू अभेदरू आतमा है,
अनुभू किएते मेटे भक्तुखताप है।
जात विशेष यो असेष भव भाव है,
विदानन्द देवमें न कोऊ पुण्य पप है।१९८९।।
फटिकेको हेति जब जैसे रंग दीर्घिता,
तेसो प्रतिमासे बामे वाहीकोसो रंग है।
अपनौ सुभाव सुद्ध उज्जल विराजमान,
ताकों नहीं तजे और गरे नही संग है।
तेसी यह आतमाहू परमाहि परही सी-भालोि,
दोहा।
आप लखवेको यहं, दर्शणज्ञान गिरिंग।
श्रीजीज्ञपूर्ण अनुसार है, लक्ष्मी लहे शिवपंथ।।१९४।।
परम पदार्थ लाम है, आनंद करत आपर।
दर्शणज्ञान गिरिंग यह, कियो दीप अविकार।।१९५।।
श्रीजीज्ञ जयवंत है, सकल संत सुखदाय।
सही परम पदकों करें, है स्रीमुनके साथ।।१९६।।

इति श्री शाह दीपचन्द साधर्मी कृत ज्ञानदर्पण ग्रन्थ समाप्त।
॥ श्रीरस्तु ॥

स्वरूपानन्द

दोहा
परमदेव परमात्मा, अचल अखण्ड अनूप।
बिमल ज्ञानमय अतुल पद, राजत ज्योतिसरूप।।१९।।

सवैया, २३
एक अनादि अनूप चण्डो नहीं,
काहु कियो अरु ना बिहुरे होगो।
या जग के पद ये पर है सब,
ना कर ना कर नाहि करके होगो॥
वस्तु सो वस्तु अवस्तु न वस्तुसों,
नाही टय्यों अरु नाहि टरके होगो॥
आप विदानन्द के पदकों सुधव्या,
यों धरें अरु आगूं धरके होगो॥२।।
आप अनादि अखण्ड विराजकत,
काहु पैं खण्ड कियो नहीं जे है।
जो मध में भटको तो उससास तो,
ज्ञानमधु सह और ये पै है॥
चेतन ते न अचेतन हैं खुद कहूं,
यों सरधान किये सुख ले हैं॥
‘दीप’ अनूप सरूप महा लक्षि,
तेरी सदा जग में जस लहर है॥३।।
संबोधन, २३
आप अनूप सर्प सबूतो,
परभावन को तुम चाहत कहाँ।
धारी अमृत मेटन को तिसा,
भाड़लीको लखी जीण साथ जाहे।
तेसी कहा न करो मति भूलि,
निधान लखी निज ल्यूकिन लाहे।
लोक के नाथ या सीख लाही मति,
भीख गही हित जो तुम चाहे।
तेरो सर्प अनूदि आयू गहाँ,
हे सदा साथी सो अवही हैं।
भूलि धरे भव भूलि रही अब,
मूल गहाँ निज वस्तु वही है।
अजाणि ते आर ही जाणि गही सुख,
वाणिकी हाणि न हो गही है।
भोरि भई सुभई वह भोरि,
सर्पुष अरे सुभंभाणि साहि है।
तरी ही वाणि कुं वाणि परि अल्ले,
आर ही ते कछु आर गही है।
सदा निज भाव को है न अमाव,
सुभाव लखी करे ही लाही है।
बिना जुप्य पाफन को भव भाव,
अनूपम आप सु आप मही है।
भोरि भई सुभई वह भोरि,
अरे सुभंभु संभाणि साहि है।
तेरी ही बोर की होय धुरे किन,
काहे कों दूढ़त जात नहीं है।
हे धर में निधि जागत है पर,
भूलि यही नहीं जात कही है।।
तूं भगवान फिरै कहूं आन,
बिना प्रभु जाणि कुवाणि गही है।
भोरि भई सुभई वह भोरि,
अबे लखि दीप सरूप सही है।१००।।
लगे ही लगे पर माहि पगे,
ये सगे लखि के निज बोर न आये।
लोक के नाथ प्रभू तुम आथ,
किये ये साथ कहा सुख पाये।।
देखो निहारिके आप सभारि,
अनुपम ये गुण क्यों दिशराये।
अहो गुणवान अबे धूरी ज्ञान,
लहा सुख सों भगवान बताये।१०१।।
बानर मूढ़ि न आपही खोले,
कांच के मंदिर स्वान भुसाइ।
भाडली कों लखि दौरत है मृग,
नैक नहीं जल देत दिखाये।।
सुक ने नलिनी दिंद तें पकरी,
भूलि तें आपही आप फंदाये।।
बिनु ज्ञान दुखी भव माहि भये,
सो ही सुखी जिहि आप लखाये।१०२।।
चारि लखे धन हूं वरवै,
निजपक्ष में चन्द करैं परकासा।
रितु कों लखिके वनराय फले,
जाने समों पसू हूं ग्रहे वासा।।
सीप हूं स्वाति नक्त लखे सुपरे,
जल बूढ़ हवे मुक्तविकासा।
पूर्व पदारथ यो समों ना लखे,
यो जग में है अजब तमासा।१९३।।
देव चिदानन्द है सुखकन्द,
लिये गुणवन्द सदा अविनासी।
आधार दाम महा अभियंत,
तिहूं जग स्वामि सुभाव विकासी।
है अमलान प्रभू भगवान,
नहीं पर आन है ज्ञान प्रकासी।
सरूप विचारि लखहे यह सनत,
अनूप अनादि है ब्रह्म विलासी।१९४।।
नहीं भवभाव विभाव जहां,
परमात्म एक सदा सुखरासी।
वेद पुराण बतावत है जिहि,
ध्यात्म है मुनि होय उदासी।।
ज्ञानसरूप सिद्ध जगभूष,चण्डों विचयुर है ज्योतिःप्रकासी।
सरूप विचारि लखहे यह सनत,
अनूप अनादि हैं ब्रह्मविलासी।१९५।।
सवेया, ३९

नहीं जहां क्रोध मान माया लोभ है कषय,
जगतको जाल जहां नहीं दरसाय है।
करम कलेस परवेस नहीं पाईयत,
जहां भव भोग को संजोग न लखाय है।
जहां लोक वेद सिया पुरुष नुसक ये,
बाल वृद्ध जुवान भेद कोऊ नहीं थाय है।
काल न कलंक कोऊ जहां प्रतिभासत है,
केवल अखंड एक चिदानंदराय है।

तू तो सत चिदानंद आपको पिछने नाही,
राग दोष मोह करी करत उपायान।
पर की कलेस मैं न सहज अतोल पायें,
याहीते अनादि कीना भव भटकावान।
आनंद के कंद अब आपको संभारि देखि,
आत्मीक आप निधि होय विलसान।

जहां भव भोग को विलास नहीं पाईयत,
राग दोष दोउ जहां मृति हूं न आय है।
जग उतपति जहां प्रले न बताइयत,
करम भरम सब दूरी ही रहाय हैं।
साधन न साधना न काहू की अराधना है,
निरबाध आप रुप आप विश्वाय हैं।

सहज प्रकाश जहां चेतना विलास लीयें,
केवल अखंड एक चिदानंदराय है।

मोह की मरौर को न जोर जहां भासतु हैं,
नाहि परकासतु हैं पर परकासना।
करम कलेस जहां कोउ नहीं आवत हैं,
सकल विभाव की न दोसत विकासना।
आनंद अखंड रस परखें जादेव जहां,
होत है अनंत सुखकंद की विलासना।

ज्ञान दिसिटि धारि देखि आप हिये राजतु हैं,
अवल अनूप एक चिदानंद भासना।

देव नारक ये तिरजग ठाठ सारे सो तो,
एक तेरी मृति ही का फल पावना।
दोहा।
परम अन्यथा अंकड़ अज, अविनासी सुखधाम,
प्रभूं वंदन पद निज लहे, गुण अनूप अभिमान।२३।।
श्रीर्रनवर पद बंदिके, ध्यान सार अविकार।
भवि हित कार्ज़ करतु हो, धरि भवि हैं भवपार।२४।।

स्वरूपाद्य, ३९
सिद्धधाम माहि जेते सिद्ध भये ते ते सही,
आत्मीत ध्यान तें अनूप ते कहाये हैं।
धारिकँ धरमधाम सुर नर भले भये,
आरतिकँ ध्यान धारि तिरजच थाये हैं।
रौद्र ध्यान संति महा नारकी भये हैं जहाँ,
विविध अनेक दुःख धोर दोर पाये हैं।
संसारी मुक्त दोउ भये एक ध्यानहीतें,
सुखधाम धारि जो तो स्वगुरु सुहाये हैं।२५।।
आप अविनासी सुखरसित हैं अनादिहीकों,
ध्यान नहीं धर्म तातें कियाँ तू आप हैं।
अब तू समानों होइ सुगुरु बतावृत हैं,
आप ध्यान धरे तौ तो लहें भवपार हैं।२६।।

दोहा।
एक अशुद्ध जु शुद्ध हैं, ध्यान दोष फरकार।
शुद्ध धरे भवि जीव है, अशुद्ध धरे संसार।२८।।
शुद्ध ध्यान परसाद तौं, सहज शुद्ध पद होय।
ताकी वरण अब करिं दुःख नहीं वापें कोषू।२९।।

स्वरूपाद्य, ३९
प्रभृत धरम ध्यान दूज़ों है सुकलधाम,
आगम प्रमाण जामें भले दोज ध्यान हैं।
पदस्थि पिंडस्थि सर्व रूपस्थि रूपातित,
आत्माम विक्र्य वाहिये ध्यान ये प्रमाण है।२०।।
मनको निरोध महा की्र्यतु ध्यानमाहि,
यातें सब जोगमं ध्यान बलवाह है।
पीन वसि कीये सेती मन महा वसि होय,
याते गुरुदेव कहे पवन विज्ञान हैं। 30।।
परिणाम नै निश्चय कहें सब ध्यान कीजे,
सब ही उपाय मैं यो उपाय सार है।
देवश्रुत गुरु सब तीर्थ जु प्रतिमाजी,
विद्वान ध्यान काजे सेवे गुणहार हैं।
विविहार विवा सोहू एकागर ताते साहे,
ताते ध्यान परधान महा अविकार है।
केवल उकति वेद याके गुण गावत हैं,
ऐसी ध्यान साधि सिद्ध होय सुखकार है। 39।।
आज्ञा भगवान की मैं उपादेय आप कहो,
लाम धिर हूजे यह आज्ञाविवे ध्यान है।
कर्मकों नात करे जाहि के प्रभाव सैती,
लाको ध्यान कही सुखकारी भगवान हैं। 40।।
कर्मविवांक मैं न खेड़ी होय कहू ऐसे,
निज जाने तीजो ध्यान परधान है।
संस्थान लोक लखि लखै निज आतमा कौ,
ध्यान के प्रसाद पद पावे सुखकार हैं। 41।।
दसवी सौ गुण ध्वास्बु गुणन तै परजाय,
असथायत सदा यो भेद कहो ध्यान कौ।
ध्यान ही दरशान ही शवद सौ शवदानर,
अर्न शब्द रहें भेद जोगान्त ध्यान कौ। 42।।
प्रथक्त्विविक के हे हे भेद ये विवार तीजे,
ज्ञानवान जाने भेद कहीं भगवान कौ।
अतुल अखंड ज्ञानवारी देव विदानं,
ताकों दरसवे पद पावे निरवाणकौ। 43।।

एकतरुप माहि धिर हुव स्वपद शुद्ध,
कीजे आप ज्ञान भाव एक निजरूप मैं।
धातिकर्म नास करि केवल प्रकाश धरि,
सूयम हैं जान सूख पावे विदमूष मैं। 34।।
मेटि विपरीत क्रिया करम सकल भानि,
परम पद पाय नहीं परे भो कृप मैं।
याते यह ध्यान निरस्सन पहुँचावत है,
अवचल अखंड जोति भासत अनुप मैं। 44।।
मंत्र पद साधि करि महा मन धिर धरि,
पदस्थध ध्यान साधते स्वपद आप पाये।
आपना स्वरुप प्रधुपद सोही पिंडमें,
विवारिक्ष अनुप आप उरमें अनाये।
संवस्तरण बिभः सहित लखि आप,
ध्यानमे प्रतीत धारि महा धिर धाइये।
रूप सौ अतीत सिद्धपद सौ जहां ध्यान माहि,
ध्यावे सोही रुपालीति गाइये। 45।।
पवन सब साधिके अलख अराधित, सोही एक साधिनि स्वरुपकारि कही है।
अविनासी आनंद मैं सूखकंद पावंदेि,
आगम विधानें ज्या ध्यान रति लही है। 46।।
ध्यान के धरेरा भवसिङ्गु के तिरेया भरे,
जनात में तेज धन्य ध्यान विचि चही है।
चेतना चिमतकार सार जो स्वरुपकि कौ,
ध्यान ही तै पावे दूहि देखि सब मही है। 46।।
दोहा।
परम ध्यान को धारि कै, पारें आप सरूप।
ते नर धनि है जगत में, शिवपद लहं अनुम।।
करम सकल क्षय होत हैं, एक ध्यान परसाद।
ध्यान धारि उघरे बहुत, लहि निजपद अहिलाद।।
अमल अखिडत हृष्ण में, अविनासी अविकार।
सो लहिये निज ध्यानते जै निमुनम में सार।।

सविंया, 37
गुण परिजाय कै सुभाव धरि भयो द्रवं,
गुण परिजाय भये द्रव्य के सुभावतें।
परिजाय भाव करि व्यय उतपद भये,
ध्रुव सदा भयो सो तो द्रव्य के प्रभावते।।
व्यय उतपद ध्रुव सत्ता ही में साधि आये,
सत्ता द्रव्य लक्षण है सहज लखावन्ते।
याही अनुक्रम परिपाटि जानि लीलियतुू,
पावे सुखधाम अभिराम निज दावतें।।
सहज अन्तगुण परम धरम सो हैं,
ताहीको घरेया एक राजत दरव हैं।
गुणकं प्रभाव निज परिजाय शकतितैं,
व्यापियो जितेक गुण आपके सरव हैं।।
परम अन्तगुण परिजाय सध ऐसैं,
जानें ज्ञानवान जाके कछू न गरव हैं।
याही परकार उपयोग माहि सार पद,
लखि लखि लीजे जगि बड़ो यो परव हैं।।

एक परदेश में अनंतगुण राजतु हैं,
एक गुण में शकति परजे अनंत है।
वहे परिजाय काज करि गुण गुणही कौ,
ऐसी राज पावे सदा रहे जयवत्त हैं।।
सुख को निमाण यो विवाह है अतीव भारी,
अनिवारी देव जाकों लखय सव संत हैं।।
याही परकार शिव सारपद साधि साधि,
भये हैं अनंत सिद्ध शिवतिया कंत हैं।।
एक गुण सत्ता सो तों दरव को लक्षण है,
सो ही गुण सत्ताते अनंत भेद लया है।
एक सत वीरजि यो सामान्यविशेषरूप,
परिजाय भेदतैं अनंत भेद भया है।।
ऐसी भेद भावनातें पावना अलख की हैं,
अलख लखावनें भवङ्ग गया हैं।
भव अपहर ही तैं शिखण भावहि ज्याप,
परम अखिडत अनंत सिद्ध थया है।।
चरित चरित्या ज्ञान सवपद लखा महा,
समयक्त उपजाय गुण सवेश शुद्ध करें।
दरसन देखि निरिविकलप रस पीये,
परम अतीन्त्री सुख भोग भाव धरे हैं।।
महिमानिधान भगवान शिखण माहि,
सतसौं सदेव रहि भव में न परें है।
ऐसी निज रूप यो अनुम आप बणि रखो,
गहें जेही जीव काज तिनहीं को सरें है।।
सवपद लखावे निज अनुभो कौ पावे शिव-थन
अनुभु अखंड भयो सहज आनंद लयो, कृतकृत्य भयो एक आतम लवहाव तें। विद्याचेत्ताचारी अविकारी देव चिन्दनंद, भयो परमात्मा सो निज दरसाव तें। निरवाननाथ जाके संत सब सेवा करें, ऐसी निज देखें निर्माण के प्रभाव तें।।88।।
अतुल अबाधित अखंड देव चिन्दनंद, सदा सुखकंद महा गुणवंद धारी हैं। स्वसंवेदनानंद करि लीजिये लवहाव ताहि, अनुभु अनूप हति नौष दुखहारी हैं।।
आप परिरम ही तै परम सवप मेंटि, लहिे अमल पद आप अविकारी हैं। सहज ही भवाना तै शिव सादि शिव हूँजे, यहं काज कीजे महा यहे सीख सारी हैं।।89।।
सुध विच ज्योति दुति दीपति विराजमान, परम अखंड पद धारे अविकारी है। चिदानंद भुव की प्रदेशनं राजधानी, परम अनूप परमात्मा विलारी है।।
चेतन सच शाह महा मुक्ति तिया की अंग, ताके संग से सोही सोही सदा सुखरसी है। निःहरे सवप देखि श्रीगुरु बलावु हैं, अहो भवि जो तो निज आनंद उल्लासी है।।90।।
गुण परजयान द्रवि ते दरचि कहइयो, द्रवि द्रगुण परजयान को व्यापि हैं।
द्रवि परजय द्रवि दौँ मिले आप सुख, कानेन निनय नहि आये भव जाल में। ज्ञानसुख गहे निज आनंद कौ लहे अविनासी, हों रहे एक विद्वांसते यात्मां में।।
ऐसी अविकारी गुणधारी देखि आपसे हैं, आपने सुबर्च करि आप देखि हाल में। तिवःकाल माहि संते जेतेक अनंत कहे, ते ते सब लिए एक गुण आप चाल में।।85।।
सहज ही बनें तै आप पद पावना है, ताके पावे को कहि कहें विषमताई है। आप ही प्रकाश करें कौन पै छिपयो जाय, ताकों नहीं जानें यह अजजरिताई है।।
आप ही विमुख हवें के संशय में परें मूढ, कहें गृह केसे लखः देत न दिखाई है। ऐसी संप्रभुति को विकार तज आप भजि, अविनासी रिद्विसिद्धि दाता सुखवाैः है।।86।।
देवं को देव हवें के काहे पर सेव करें, देव अविनासी तें देखि आप ध्यान में। जाने भववधाको विकार सो विलाय जाय, प्रगट्त्ते अखंड ज्योति आप निजज्ञान में।।
तामें थिर थाय सुख आतम लवहाव आप, मेंटि पुनः पाप वर्षि जीय सिव थान में। शिवलिप्य भोग करि सातो सुधिर रहें, देव अविनासी महावर निरवाण में।।87।।
देव अविनासी सुखरसी सो अनादि ही कौ, ज्ञान परकारी देखि एक ज्ञानमाव हैं।
होय हैं अनत ऐसे केवली आपाए हैं।
अर्थक्रिया कारक ये द्रव तै सधि आव, 
द्रव ही गुण परज की द्रवत ही थापे हैं।
ऐसी है अनत महा महिमा द्रवच ही, 
आतमा द्रवतकरि आपही मै आपे हैं।५१।।
सामान्य विशेषरूप वस्तु ही मैं वस्तुच, 
सोही द्रव लीये सदा सामान्यविशेष है।
सामान्य विशेष दोष सब गुण माही सभै, 
परजय माही यांते सशंक अशेष हैं।
द्रव द्रवसामान्य जु भाव द्रवे यो विशेष, 
सामान्यविशेष सो तो गुण को अलेष हैं।
परजय परणवे योही है सामान्य लाको, 
गुणन को परणवे योही जाको शेष हैं।५२।।
सादृश्य सकुण सत्ता दोष भेद सत्ताके, 
ताहू मैं सकुणसत्ता भेद बुह कहे हैं।
द्रव गुण परजय भेद मैं वजानी निदधा, 
गुण सत्ता भेद तो अनत भेद लहे हैं।
दर्शन है दर की ज्ञान है सुजान सत्ता, 
ऐसी ही अनत गुण सत्ता भेद चढ़े है।
परजय सत्ता तो ती राखे परजय को हैं, 
ऐसे सत्ताभेद लखि ज्ञान सुख गहे हैं।५३।।
एक परमेय की प्रजाय सो अनतथा है, 
तारे सब गुण ऋष रसी कर्मने प्रभान हैं।
परमेय बिना परमाण जोष नाहि हुते, 
यारे परमेय सब गुण मैं प्रभान हैं।५४।।

याही परकर द्रव परजय माहि देखि,
याहींविशेष महा योही बलवान हैं।
याकी विशेष जाने सो प्रमाण आनंद को, 
सब परमाण करि पाये सुखान्ह लाई।६५।।
द्रव गुण परजय जैसे ही के तैसे रहे, 
ऐसे यो प्रमाण सो अगुरुलघु को कहाहो।
भिना ही अगुरुलघु हलके के भारी हुते, 
याते नहीं जानो मरजाद पद ना लहा।
यारे वस्तु जाथवत राखवे को कारण हैं, 
ऐसो यो अखंड लखि संपुष्पा लहा।
याहीके प्रसाद तीनो जाथावत याहींते, 
याही को पृताप जस्त कैवती वणि रहा।५५।।
द्रव गुण परजय स्वप्न के राखवे को, 
वीरज के बिना नहीं सामस्तरूप है।
वीरज ही सती सब तीनो पद नीके रहे, 
यारे बलवान वह वीरज स्वरुप है।
वीरज अधार यह अनाकुल आनंद हूँ।
यारे यह वीरज ही परम अनुप है।
वीरज के भर्षे ये हूँ सब निहपत भरे, 
यारे यह वीरज ही सबनको पूर्ण है।५६।।
एक परदेस मैं अनत गुण राज्य हैं, 
ऐसे ही असंख्य परदेस धारी जीव है।
दरच को सत्ता अरु आकृति प्रदेशनते,
गुण परकाश है प्रदेश तै सादीव है।
अर्थक्रियाकारक ये परणति ही ते है है,
क्रोध मान माया लोभ चारी को करेया यो,
विशेरस भोगी यो ही भवको भरेया है।
यो ज्ञान कछु धार्म अंतर सु आतमा है,यो ही परमात्मा है शिक्षको बरेया है।
योही गुणधार अरु मारपण माहि योही,
शुभाशुभ शुद्धपयोग को धरेया है।

यह (इस) अनादि संसार में, थे अनादि के जीन।
पर पद मनता में कहे, उपजो अहित सदीय।
ता कारण लंधि गुरू कहें,धरम वचन विसतार।
तहि भविष्य जन सरदहें, उतरे भवदि पर।
परम तब सरदिये किये, समकित है सार।
सो ही मूल है धरम को, गहि भव है भवपार।
सवैया, 39

साधि निज नैमण्डैं वर्तमान भाव करि,
संग्रह स्वरूप प्रीति स्वरूप कौं गहीजिये।
गुणगुणीभद्र व्यवहार कौं सरफर नारि,
अले अराधिक अखंड रस पीजिये।
होपा के सरल ऋणसूत्र तै सेवाव लीजैं,
अहं असिम शाद साधि स्वभुक करीजिये।
अमितर आपमें अनौप पद आप कौजैं,
एवंभूत आप पद आपमें लखीजिये।।५०।।
स्वपन मनन करिन मानिये स्वरूप आप,
भाव श्रुत धारिके स्वरूप कौं संभारिये।
अवधि स्वरूप लखि पाइये अविभाजन,
मनपरप्रती मननान माहि धारिये।।
केवल अखंड ज्ञान लोकालोकके प्रमाण,
सोही हैं स्वभाव निज निहंदे विचारिये।
प्रत्यक्ष परोक्ष परमानंत स्वरूप कौं,
सदा सुख साधि दुःख हंद कौं निवारिये।।७३।।

आपूर्ति काले अनंत साधि सर्व सुख क्षण,
संज्ञा अर नारि सहै लक्षण प्रयोजनकैं,
आपमें लखारे वहि करें सुधार हैं।।१४।।
होपा हो प्रमाण प्रमेय भाव धारक हैं,
आप प्रमाण काले साधि संत महान हैं।।
अपापी की महिमा अनंत अनंतरूप,
अपापी स्वरूप लखि हैं भवार हैं।।५३।।
एक विद्वृतित स्वभाव हैं कौं करता है,
असंख्यत परदेशी गुणकू निवारी है।
जीव प्रणाम किया करवे को कारण है,
लोकालोक व्यापी ज्ञानमानवके विकास हैं।।
अनसों अतीत सदा सारतौ विराजत हैं,
दय विदान हजगि जोति प्रकाश हैं।।
ऐसे निज आप जाका अनुभो अखंड करे,
शिवतियानाद होपा रहें अविवास हैं।।५४।।
शोभित है जीव सदा आपां सतीत महा,
दोहा
अचल अखंडित ज्ञानमय, आनंदभनु गुणधाम।
अनुभू ताको कीजिये, शिवपथ है अभिराम॥७५॥
छंद
सहज परकास परदेश का वर्ण रहा,
देशही देश में गुण अनंत।
सत अरु वर्तु बल अगुरु आदि दे,
सकल गुण माहि लखिए भेद संता॥
ज्ञान की जगनि में जोति की झलक है,
ताहि लखि और तजि ततं मंता।
धारि निज ज्ञान अनुभू करो सासतो,
पाय पद सहि हैं मुक्ति कंता॥७६॥
सहज ही ज्ञान में ज्ञेय दरसताह हैं,
येदि हैं आप आनंद भारी।
लोक के सिंहर परि साते राजि हैं,
सिद्ध भगवान आनंदकारी॥
अमि अदभुत आति अमल गुणकाँ लिये,
शुद्ध निज आप सब करम टारी।
देह में देह परमात्मा सिद्धार्थो,
तास अनुभू करो दुर्खहारी॥७८॥
सहज आनंद का कंद निज आप है,
ताप भव रहत पद आप गेवे॥
आपके भाव का आप कर्ता सही,
आप चिद करम काँ आप सेवे॥
आप परिणाम करि आपको साधि हैं,
आप आनंदको आप लेवे॥
आपें आपको आप धि थापि हैं,
आप अधिकार को धारि टेवे।
(आप महिमा महा आपकी आप मैं,
आपप्रे आपको आप देवे॥॥७९॥
आप अधिकार जानि सार सरगमि कहे,
ध्यान में धारि मुनिराज ध्यायें।
सकति परिपूरि दुख दूरि हैं,
जासव आनंद के भाव आनंद पवे॥
अनुल निज बोध की धारिके धारण,
सहज चिदनिऩ्नि मैं ले लगायें।
और करुणति का खेदको नां करे,
आपके सहज धारि आप आवे॥८०॥
सकल संसार का रूप दुख भार हैं,
ताहि तजि आपका रूप दरसे॥
मोह की गहली सारकी निज कह्मा,
ल्यागि पर सहज आनंद बरसे॥
आपका भाव दरसावकरी आपभे,
जोतिकां जानि भव्य परम हरसें।
शुद्ध चिदरुप अनुभू करे सासतौ,
परम पद पाय शिवद्वान परसै।

सकल संसार परमांहि आपा धरे,
आप परिणामकां नाहि धारें।
सहज का भाव है खेद जामे नहीं,
आप आनंदकां ना संभारें।
कहे गुरु बैन जो चैन की चाहि हैं,
राग अरु दोषकों क्यों न टारें।

त्यागि फर धान अमलान आपा गहे,
ज्ञानपद पाय शिवभमें सिधारे।
मूढ़ कषि की कहो कौन ने पकरी,
भावलीकों जल कौन पैदें।
कावं के महल में स्वाथ कहा दूसरी,
कूप में सिंह गारो नहीं वे।
जेव्री में कहू नाग नहीं दरसि हैं,
नलिनि सुवा न पकरयो कहीं वे।
भूलके भाव कों तुरत जो मेंदे दे,
पावके अमर पद सदा जीवें।

गमन की बात यह दूरि हवे तो कहूँ,
दुख हवे तो कहूँ सुखी थावौ।
खेद हवे तो कहूँ नैक विश्राम ल्यों,
अलाम हवे तो कहूँ लाभ पावौ।
बंध हवे तो कहूँ मुक्तिको पद लहौ,

आप में कान है दूत दायो।
सहज को भाव के सदा जो बानि रखों,
ताहि लखि और को मति उपायो।

देव चिदरुप अमूर अनादि है,
देशाना गुरु कहै जानि प्यारे।
अतुल आनंदमें ज्ञान पद आप है,
ताप भवकों नहीं है लगारे।
आप आनंदके कंडकों भूलिकै,
ममत जगमाहि यह जडु सारे।
आपकी लखि करि आपही देखि हैं,
आप परमातमा नाजूदारयाग ।
अलख सबही कहें लख न कोई करे,
आप निज ज्ञानलें संत पाओ।
जहाँ मत नहीं तत् मुदा नहीं भक्षि हैं,
धारणा की कहीं कों चलायें।
वेद अरु भेद पर खेद कोऊ नहीं,
सहज आनंदही कों लखावें।
आप अनुभों सुधा आपही पीय के,
आपको आप लहि अमर थावे।

सबैया, 39
योही करे करमकों योही धरे धरमकों,
योही मिश्रमाव नौजु करता कहायो है।
योही शुभोश्या धरे सुरंग फ्यारों आप,
योही महापपाधि नरकि सिघायो है।
योही कहूँ पातरि नाचत हवे नेक फियों,
यही जसदारी होल जसैं बजायो है।
याही परकार जग जीव यो करत काम,
और में साधी शिव श्रीमुरु बतायो है।

अधिल।
तुम देवन के देव कही भव दुःख मरो।
सहजबाब उर आनी राज शिवकों करो।।
जहां महाथिर होय परम सुख कीजिये।
विदानंद आनंद पाय विर जीजिये।

पर परणतिकाँ धारि विपात भवकी भरो।
सहजबाबकाँ धारि शुद्धता ना करो।।
अस करिकं निजभाव अमर आपा करो।
अविनासी आनंद परम सुखकों करो।।

सकल जगतके नाथ सेव काँ पर करों।
अमल आप पद धाप ताप भव परिहरो।।
अतुल अनुपम अलख अखंडित जानिये।
परमात्म पद देखि परम सुख मानिये।।
सही जानि सुखकंद इंद मुख हारिये।

अनन्त रुप आप उर धारिये।
पर परणतिकौ प्रेम अवे तज दीजिये।
परम अनाकुल सदा सहज रस पीजिये।।

छप्पय
सहज आप उर आनि अमल पद अनुभव कीजें।
ज्योति सकुप अनुप परम लहिअननस पीज़े।।
अतुल अखंडित अचल अभितपद है अविनासी।

अलख एक आनंद कंद है नित सुखरासी।।
सोही लखाव धिर थाष के उल्लास उल्लस सानंद करें।
कहि दीपचंद गुणवंद लहि शिवतिका के सुख सो वरो।

दोहा
ग्रंथ स्वरुपानंदकाँ, लीजे अरथ विचारि।
सप्ता कँर शिवपद लहे, भवदुःख दूरि निवारि।
संसार सतरा सी सही, अरु इकानवे जानि।
महा मास; सुजि पंचमी, कियो सु सुखकी खानि।
देव परम गुरु उर धरो, देत स्वरुपानंद।
दीप परम पद कँ हँहें, महा सहज सुख कंद।

इति
उपदेश सिद्धांत रत्न

दोहा
परम पुरुष परमात्मा, गुण अन्तर्के थान।
चिदानंद आनंदमय, नमी देव भगवान॥
अनुपम आतम पद लख, घरे महा निज ज्ञान।
परम पुरुष पद पाइ हैं, अजर अमर लहि थान॥
विविध भाव धृरि करमके, नाटत हैं जगजीव।
भेद ज्ञान धृरि संतजन, सुखिया होहि सदीव॥

सवेया
करमके उदे केंद्र देव परजाय पावें,
भोग के विलास जहां करत अनुपू हैं।
महा पुण्य उदे केंद्र नर परजाय लहें,
अति परधान बड़े होइ जग भूत है॥
केंद्र गति हीन पाव दुखी भये डोलत हैं,
राग दोष धारि परें भव क्रूप हैं॥
पुण्यपान भाव यहें हेव करि जानत हैं,
तेई ज्ञानवंत जीव पावें निजरूप हैं॥

दोहा
अतुल अविदा चंचि परे, घरे न आतमज्ञान।
पर परणति पावि रहे कैसे हवें निरवान॥

सवेया
मानि पर आपं प्रेम करत शरीर सेति,
विनाशीक जड़ महा मलिन अतीव बने,
तिनकी की उत्स तीजों अति सुहाई हैं।
समझ के देख सुखदाई भवं भूल हैं,
दुखदाई मां मंदु होत न बढ़ाई हैं।
अश्मषों अनादिकों हैं अजहूं न आवे लाज,
काज सुध कीये बिनु कोई न रहाई हैं।१३१।
लौकिक के काजज महा लाखन खरच करे,
उदय अनेक धरे अगनि लगाय के।
महासुख दायक विधायक परमपद,
ऐसी निजधरम न देखे दरसाय के।
एकबार कहो तू हजार बार मेरी मानि,
देह को सनह कीये रुले दुख राय के।१३२।
आत्मक हत याते करणु दुर्गे तोकों,
और परपंच ढूट करे काँवी उपाय के।१३३।
तन धन मन ज्ञान चयाओ क्यों निमाय लेत,
तासों धरे हेत कहं मेरी अति यारी है।
आमूषण आदि वसु बहू ते मंगाय देत,
विशेषसुख रहतु ही ते हिये माहि धारी है।१३४।
महा मोह फंद ताको मंद करे चंदखुकी,
लाको दासतन मूढ करे अति भारी है।
आपदा दुरार जाको सार जानि जानि रमे,
भवदुखकारी ताहि कहं मेरी नारि है।१३५।
पर परिणति सती प्रेम दे अनादि ही को,
रमे महामुद यह अति रति मानि के।१३६।

कुँमति सच्छी है जाकी ताको पंस लियी दोले,
गति २ माहि महा आप पद जानि के।
सहज के पाये बिनु राग दोष ऐच्छु है,
पावे न स्माह यो अज्ञान भव ठानि के।
कहेदीपचंद चिदानंदराजु सुखी होई,
निज परिणति तिया घर उठे आनि के।१३६।
बिद्यायगि नारी है अनंत सुखकारी,
ताहि की बिसारी ताते भयो भववासी है।
जाकी धारि आनि तातेश आप के समारे निधि,
आत्मक आप केरी महा अविनासी है।
भोगव अंबुस सुख सदा शिवशान माहि,
महिमा अपार निज आनंद विलासी है।
कहेदीपचंद सुखकंद ऐसे सुखी होय,
और न उपाय कोटि रहे जो उदासी है।१३७।

दोहा
सकन ग्रंथ को मूल यह, अनुभव करिये आप।
आत्म आनंद उपजे, मिटे महा भव ताप।१३८।

सवेया
करि कर्पूरि केव कर्म की चेतना में,
व्यापकता धारि हवै हैं करता करम के।
शुम वा अशुम जाको आप के सुफल होत,
सुख दुख मानि; भेद तहेन न धरम के।
ज्ञान शुद्ध चेतना में करम करम पल,
दोऊ नहीं दोऊँ भव निज ही शरम के।
कहेदीपचंद ऐसे भेद जानि चेतना के,
चेतना को जाने पद पावत परम के।
वेद के पढ़े तैं कहा स्मृति हू पढ़े कहा,
पुराण पढ़े तैं कहा, निज तव पायो है।
बहु ग्रंथ पढ़े कहा, जाने न स्वरूप जो तो,
बहोत क्रिया के किये देवलोक थाई है।
तप के तपे हूं ताप होत है शरीर ही कौं,
चेतना निधान कहूं थाह नहीं आवे है।
कहे दीपचंद सुखकंद परवेस किये,
अमर अखंड रूप आतमा कहावे हैं।
वेद निरवेद अरु पढ़े हूं अपढ महा,
ग्रंथन को अरथ सो हूं वृथा सब जानिये।
भले मले काज जग करियो अकाज जानि,
कथा कों कथन सोहू विकथा विखानि।
लीरं कहत बहु भेष कों वणायें कहा,
वरत विधान कहा क्रियाकांड ठानि।
विदानंद देव जाको अनुभू न होय जोती,
तोली सब करवो अकरवो ही मानिये।
पुरतर वितामणि कामधेनु पायें कहा,
नौनिधान पायें बहु तुष्णा न मिटावें है।
पुरहूं की संपति मे बढ़े भोग भवना है,
राग के बढावना में धरता न पायें है।
करम के कारिज में कृतकृत्य कैसें होई,
याते निजमाह्नि जानी मनकों लगावे है।
पूजय ध्यय उतम परमपद धारी सोही,
विदानंद देव को अनंतपुख पावे है।
महामेष धारिकें अलेख ज़ीं न पावे भेद,
तप ताप तपे न प्रताप आप लहे हैं।
आनही की आर्ति हैं ध्यान न स्वरूप धरे,
परही की मानिमे न जानि निज गहे हैं।
धन ही की ध्यावी न लखवें चिद लिखिमी कौं,
भाव न विराग एक राह ही में कहै है।
ऐसे हे अनादि के अज्ञानी जगमाहि जोतो,
निज ओर हैं तो अविनाशी होय रहे हैं।
परपद धारणा निरंतर लगी ही रहें,
आपपद करी नाहि करत समाह है।
देहको सनेह धारी चाहे धन कामी कौं,
राग दुष्प भाव करिय बढ़े भवमाह है।
इंद्रि में धोष सेती मन में उमाह धरे,
अहंकार भाव ते न पावे भवपाह है।
ऐसी तो अनादि को अज्ञानी जग माहि जोले,
आप पद जाने सो तो लहे शिवसार हैं।
करम कलोलन की उत्तर झकोर भारी,
याते अविकारी को न करत उपाव है।
कहूं क्रोध करें कहूं महा अभिमान धरे,
कहूं माया पति लग्यो लोम दरवाव है।
कहूं कामवशी चाहि करें अति कामी की,
कहूं मोह धारणा ते होत मिथ्या भाव है।
ऐसी तो अनादि लीनो स्वपन फिजानी अब,
सहज समाधि में स्वरूप दरसाव है।
नौनिधान आदि देकै चोदहे रतन ल्याणे,
छिनवे हजार नारी छाड़ दीनी छिनमे।
छहाङ खण्ड की विद्वीति त्यागि के विराग लियो,
ममता नहीं (हे) मुति(मृति) कईं एक तिन में।
विश्राम चित्रित विनाशीक लखथ सन माहि,
अविनाशी आप जाम्यो जाम्यो ज्ञान तिनमें।
याही जगमाहि ऐसे चक्रबृत्ति है अनचे,
विभू तखिक कियो तू वराक किनमें।२२।।
कनक तुरंग गज चामर अनेक रथ,
मंडर अनूप महारुपन्त नारी है।
सिधाँसण आमूणाण देव आप सेव करें,
दीमें जगमाहि जाकूँ पुणि अति भारी है।
ऐसो है समाज राज विनाशीक जानि तज्जीही,
सारांश शिव आप पढ़ पायो अवकारी है।
अब तु विवारि निज निधि को संमारि सही,
एक बार कही सो ही यो हजारवार्षी हैं।२३।।
विकार अिनक मेद सिमे महा भास्तु हैं,
purulradab रति तामें नाहि कीजिए।
चेतना चमतकार समेिसार रुप आि,
विदानन्द देव जामें सदा थिर हीलिजिए।
पायो यह दाव अिन कीजिए लखाव आि,
लहिए अनन्त सुख सुधारस पीजिए।
दरसन ज्ञान आदि गुण है अनन्त जाके,
ऐसो परमातम सक्माव गहि लीजिए।२४।।
राजकथा विषेशीक की रति कनकनगर
केंद्र धनधाम पशु पालन करतु है।
केंद्र अन्य सेवा मंत्र आधे अनेक विज्ञे,
केंद्र छुरे नार मनरंजना धरतु है।
केंद्र घर चिता में न चिता काण एक माहि,
ऐसे समें जाहि तेंदू भौदिख भरतु है।
जग में बहुत ऐसे वात स्वरूप कों जे,
तेंदू जन केंद्र शिवतिया को वर्तु हैं।२५।।
करम संजोग सेतू धरि के विवाह नाटकों,
परजाय धरि धरि परही में पयो है।
अह ममकार करि भव भाव बंधीं अति,
राग दोष भावन में दोरि दोरि लग्न है।
ज्ञानमई सार सो विकार रुप भयो यह,
विषय ठगोरी दारि महामोह ठगो है।
तिन के उपाधि अब सहज समाधि धरी,
हियमें अंगू हो ज्ञान ज्ञान हो यो हैं।२६।।
गति गति माहि पर आप मानि राग धरे,
आप पुणि पाप ढानि भयो भववासी है।
चेतना निधान अमलान है अखंड रुप,
परम अंगू न पिछनें अविनाशी है।
ऐसी परभावना तू करत अनादि आइयो,
अब आप पद जानि महासुखवासी है।
देवनाकृ देव तूही आन सेव कहा करें,
नैक निज ओर देखी सुखोंक सिलायी है।२७।।
अह्ं नार अह्ं देव अह्ं धरे पर्षेव,
अह्ं अभिमान यो अनादि धरि आयो है।
अहकार भावत न आपको लखाव कियो,
परसण्यौऽ आपो मानि महादुःख पैयो है।।
कहूँ भोग कहूँ रोग कहूँ सोग है वियोग,
रोग दौष मई उपयोग अपनायो है।
परम अनंतगुणाधारी अब आतमाको,
अनुभो अखंड करि श्रीगुण दिखायो है।२८।।
करिके विभाव भवभांवरि अनेक दीनी,
आनंदको सिंहु विदानंद नही जान्यो है।
करम कलंक पंक्त कोउ नहीं जाहं कहे,
सदा अविनाशीको लखाव नहीं आन्यो है।
गुणनको धाम अभिराम है अपूर महा,
ऐसों पद ल्यागि परमाव उर ठाण्यो है।
भूलिर्क अनादि दुःख पाये सो तो निवरी है,
सहज संयमारि अब श्रीगुण बखायो है।२९।।
आतम करम संधि सृष्टम अनादि मिलौ,
जामें अति चैनि बुद्धि छैनी महामारी है।
शुद्ध विद्वेषोति म स्वरूप को सत्यायि यातें,
स्वप्न की दशा सब लखी न्यायी न्यायी है।
ज्ञान ग्रन्थ मै निज चेतना प्रभुचुक जान्यो,
अविनाशी आनंद अनूप अविकारी है।
कृतेकृत्य जहाँ कछु फेरि नही करणी है,
सातती पदी मै निधि आपकी संयमारि है।३०।।
करीं तैं अनादि क्रिया पायो न स्वरूप मेद, परमाव माति न है सहज की धारणा।
आपको स्वभाव वर्णो महा शुद्ध चेतना में,
केवल स्तव लखि करिकें संभारणा।।
सुपदशा के लख्ले सुगम स्वरूप आप,
ऐसा तो भला देखि समझि विचारणा।
आनंदस्तव हि मै पर और कहा देखि,
आप और आप देखि होय ज्ञैं उद्धारणा।३१।।
तू हि विन्मूर्ति अनुप आप विदानंद,
तूहि सुखकेंद कहा करे पर भावना।
तेरे हि स्वरूप मै अनंतगुण जाज्ञै हैं,
जिनको संयमारि बढ़ तेरी हि प्रभावना।
तू हि पर भावन मै रायि के अनादि दुःखी,
भयो जगी खोले संकल्पेश जहां पाव।
नैक निज और देखि शिवपुरीराज पवे,
आनंद मै वेदि वेदि सासता रहाव। नैक निज और देखि शिवपुरीराज पवे,
आनंद मै वेदि वेदि सासता रहाव। नैक निज और देखि शिवपुरीराज पवे,
आनंद मै वेदि वेदि सासता रहाव। नैक निज और देखि शिवपुरीराज पवे,
आनंद मै वेदि वेदि सासता रहाव। नैक निज और देखि शिवपुरीराज पवे,
सवेया
केंद्रीय ती कुड़े ने वापस ने हद जाने,
केंद्रीय ती बुबु जन मानता है।
हिसा में धर्म केंद्रीय ती मूढ़ जन मानता है।
धर्म की सातिता विभि मूल नहीं बैठे है।
केंद्रीय ती पूजा करि प्राणिकों नाश करे,
अनुश असंख्य पप दया बिनु ले है।
केंद्रीय ती मूढ़ लागी मूढ़ अब ही न जिन बिब,
सेिवे बार बार लागे पश्चि करि केिवे है।
सुि परिवार सो सनेह ठान बार बार,
खरचे हजार मानि धरि के उमाह सो।
धर्म के हेत नैिक खरच जो सषि आिे,
सकुचे विशेष, ध्यान खोश यादी राहिे।
जाय जिन मंदिि में बाज़ी चढ़ि बुबु रूढ़,
आप धर माहि जीवे चालब सराहीस।
देखो विपरिे यादी समे माहि ऐसी शीति,
बोरिी को साह कहे कहे धोर साहिे।
गुप्तान्त तेिि में केवल प्रकाश भमो,
तहाँ इंद्र पूजा करँ आप भगवान की।
तीिरे थड़े थे खड़ो दूरि भगवानजी सो,
चढ़ि दिकह वसु कला वादाज्ञा की।
धर्मसंग्रहजी में कहो उपदेश यहे,
ताँिे जिन्दोरिमा भी जिन्दी समानकी।
यारें जिन बिम्ब पप लेज न लाईएँ,
लेज जु लगाये ताकी बुद्धि है अज्ञा की।

सवेया
बीतराग परसरण में, सभी सराम न होइ।
जेसो करि जरा मानिने, तेसी विधि अबिोइ।

dohá
साधारिी निश्चण देखि के चुरावे मन,
धर्म की हेत कछु हिये नहीं आिे है।
सुि परिवार तिया इनसी लयिे है जिया,
इनसी के काज मूढ़ लाखण लगावे है।
नरक की वंध करि हिये में हरख धरे,
जनम सफल मानि मानि के उमहाई है।
नैि हित किये ब्रवसागर को पार घोत,
धर्म की हित ऐसो श्रीगुरु बलावे है।

dohá
क्रोड़ि खरचे पप कों, क्रोड़ि धर्म न लाय।
सो पपी पप नरक कों, आिे २ जाय।
मान बडाई कारण, खरचे लाख हजार।
धर्म अरिि कोड़ी गयः, रोि दरे पुकार।

carita
धर्म सभेनी मित्र की, नैि न करे सहाय।
कनक कामिनी सों करे जेसी हित अबि।
तेसी हित नहीं धर्म सो याति दुरगति थाइ।

carita
एक सुि ब्राे काजि लाकत हजारों धरे,
कहे हम धन्य आजि शुभ धरी पाइे है।
समथ भयें सब धन छ निषाय लेत,
कुरग ते हेतु यासी कहे सुखदाई है।
देशना धरम की दे दोज लोक हित ठारे,
लिनको न माने मूढ़ लगी अधिकाई है।
माया भिखारी महा कम्ही की अधिकारी,
करे न धरम बूढ़ी मौतीत्व बढाई है।

कामिनी को नहक के आपूरण करि करी,
करे महा राजी जाके विष मति लागी है।
सहार जिनमें जो के धरम को जाने नाही,
माही बढ़ाई काजी छाँय्यो को प्राणी है।

विधि न धरम जाने मुण को न माने मूढ़,
आज़ा नंगा क्रिया जारी प्रीति अति पागी है।
आत्मीक रुची करे मारग प्रभाव तारों,
करे न सनेह शाद बडो ही अभागी है।

गुणको ग्रहण थिये गुण बढ़वारी होइ,
गुणबिन माने गुणहामन ही बखानिये।
गुणी जन होइ सोतो गुणको ही वाहुतो हैं,
दुष्ट चाहे औरुगुणको ताको धिक मानिये।
सत में कौर तज पीवत सुधर जोक,
ऐसौ हे स्वाभाव जाको कैसे भलो जानिये।
याते गुणग्राही होइ तज दीजे दुष्ट बाणि,
गुणको ही मानि मानि धर्मको जानिये।

धरम की देशना ते गुण देव सजन जौ,
दीनन को धन मन धरम में लावे हैं।
वेतन की चरचा विच में सुहावे जाको,
ऐसी दुखदायनिकों कीजिये सहाय निज,
याते और लाम कहा दृढ़ि देखि महि है॥
साधरमी दुख मेंि धरम के मग लाय,
सात खेत वाहं सुख पाव जीव सहि है॥५०॥
दस प्राण हूं ते पावो धन है जगत माहि,
महा हित होि हजा धनकों लगावे है॥
लियकों तौ धन सोपें सुिकों सब धर,
धरमी लालि पालि नैक हूं न भावे है॥
लौकिक बड़ाई काजि खरेि हजारों धन,
बहे है बड़ाई की न धरम सुिहै है।
मूलन को मूढ महारूठ हि में विधि जानें,
साँच न भिजानें कही कैसे सुिख पावे है॥५१॥
माया की मररें हि ते टेको टेको पाव धरे,
गरको खारि नहीं नरसी गहलु है॥
बिने को न भेद जानें विध ना पिछान मूढ,
अरुिबी बड़ाई में न धरम लहलु है॥
चेतना निधान को विधान जिन सेवी,
पावे तिनहूं सी इरशा अजशाँ को महलु है॥
रोंगारी करके समीप राखो चाहे आप,
याहूं ते अधिक बडो पाप को कहलु है॥५२॥
गुणवत्त देखि अिि उठि ठाढ़ी होि आप,
सनमुख जाय सिहासिन परि धारे हैं॥
सेवा अिि करि अरु दास तन धरे महा
विनेंपुि भनि भकिमाव को बडारे हैं॥
प्रमुिा जनावे जगि महिमा बढावे जाकी,
अपनी सक्ति जहां निदा सब में डारे,
ऐसा विनेता जाते पृथ्वी को लहिया है॥५६॥
जाके उपदेश सेती धर्म कौ लान होय,
सोही परमात्मा यो ग्रंथन में गायो है।
आप अधिकार माहि ताकं दुखमार होय,
अधिकार ऐसो बुधवान ने न भायो है॥
आपके प्रसूत में न साधरय सार करे,
आछादन लगें मूढं निधि ही कहायो हैं।
देके धन संपदा कौ आपके समान करें,
साधरय हांस में भुज बुध हों गयो हैं॥५७॥
अरहत सिद्ध शुद्ध समकित सासु महा,
आचारज उपाधयाय जिनविब सार है।
धर्म जिनेश जाकी धन्य हें जगत माहि,
च्छारि परका संघ सुध अधिकार है॥
पूजि इन दशन कौ पंच परकार वशे,
कीजिए सदेव जातें लहे भव पार है।
धरमकू मूल यह ठौर ठौर विवे गायो,
विनेवंत जीव जाकी महिमा अपार है॥५८॥
नाम नौका चढ़के अनेक भव पार गयो,
महिमा अनन्त जिनमान की बचानी है।
अधम अपार भवपार लही शिव पायो,
अमर निवास पाय भये निज जानी है॥
नाम अविनाशी सिद्धि रिद्धि वृद्धि करे महा,
नाम के लिये तै तिरें तुरत ही प्राणी हैं।
नाम अविकार पद वाता हें जगत माहि,

नाम की प्रमुख एक समाधान जानी है॥५९॥
महिमा हजार दर समाय जुं केवली की,
ताके सम तीर्थकरदेवजी की मानिये।
तीर्थकरदेव मिले दसक हजार ऐसी,
महिमा महत एक प्रतिमा की जानिये॥
सो तो पृथ्व होय तब विदिस्सी सों विवेक लिये,
प्रतिमा के दिग जाय सेवा जब जानिये।
नाम के प्रताप सेती तुरत तिरें हें भव्य,
नाम महिमा विना अधिक बखानिये॥६०॥
करमे जपाले धरी जाप करे बार २,
धन ही में मन याें काज नहीं सरे है।
जहां प्रति होय याकी सोई काज रसी पड़े,
विना परतिति यह भवुषक हरे है।॥
ताते नाम माहि रूढ़ि धर परतिति सेती,
सरपा अनाये तेसे सवे दुख टरे है।
नाम के प्रताप ही तै पाठे परम पद,
नाम जिनिराज कौ जिनेश ही सों करे है।॥६१॥
नाम ही की ध्यान में अनेक मुनि ध्यान है,
नाम तै करसंवाद समाय विलाय है।
नाम ही जिहाज़ भवसागर के तिरको कौँ,
नामें अनशुख आत्मक धाय है॥
नाम के लिये तै हिये राग दोष रहे नाहि,
नामके लिये तै हयं तिंगु लोकराय हैं।
नाम के लिये तै सुरज आय सेवा करे,
सदा भवमाहि एक नाम ही सहाय है॥६२॥
धन्य पुण्यवाण हैं अनाकुल सदेव सोही,
दुखको हरेया सोही सदा सुखारसी है।
सोही झानवाण भक्तिभक्ति लिये जानि,
सोही अमलान पद लहे अविनाशी है।
ताके तुल्य ओर की न महिमा खशानियतु,
सोही जगमाहि सब तत्त्वको प्रकाशी है।
प्रभुनाम हिये निशिदिन ही रहत जाके,
सोही शिव पाय नहीं होय भव्वानी है।।۱۴۳॥
श्रीमुनाथ तेरी महिमा अपार महा,
अधम उधारे बहु तारे एक छिन में।
तेरे नाम लियेरे अनेक दुख दूर होत,
जैसे अधिकार बिले जाय सही दिन में।
तू ही है अनंतगुण रिष्टिको दिवेया देव,
तू ही सुखादयक हैं गृहु खिन २ में।
तू ही विदानद परमात्मा अखंडरूप,
बीतेन पाप जरे जैसे ईंधन अगम में।।۱۴۴॥
देव जगतारक जिनेश हैं जगत माति,
अधम उधारण को विरद अनूप हैं।
सेरे सुरराज राज हूँ से आय पाय परें,
हरे दुख दूर गृहु तिहंलोक मूल हैं॥
जाकी श्रुति कियेरे अलंकृतु धामवत,
बें में बख्ताती जाको विदानद रूप है।
अतिशय अनेक लिये महिमा अनंत जाकी,
सहज अखंड एक झान का स्वरूप है॥۱۴۵॥
नाम नित्याती महा करि है छिनक माति,
आविनासी रिद्वि सिद्वि नाम ही ते पाईये।
तिहंलोक नाथ एक नाम के लियेरे हवे है,
नाम परसाद शिवथान में सिघाईये॥
नाम के लियेरे ते सुरराज आय सेवा करे,
नाम के लियेरे ते जळि अमर कहाईये।
नाम भगवानके समान आन कोउ नाहि,
यारे भव्वारी नाम सदा उर भाईये॥६६॥
आज्ञा अमर एक नाम के लिये ते होय,
चेतना अनंत चिन्ह नाम ही ते पाउँ हैं।
नाम अविकार तिहंलोक में उधार करे,
परम अनूपपद नाम दरसाये है।॥
आनंदको धाम अभिराम देव विनाऊँद,
महासुख कंद सही नामते लखाई है।
नाम उर जाके सोही धन्य है जगत माति,
इन्द्र हूँ से आय २ जाको सिर नाबे है॥६७॥

dôha

नाम अनूप निधी यहे, परम महा सुखदाय।
संत लहे जे जगत में ते अविनासी थाय।॥६८॥
नाम परम पद की करें, नाम महा जग सार।
नाम धरत जे उर मही, ते पाउँ भव्वार॥६९॥

सवेया
भवसिकु तियेरे को जग में जिहाज नाम,
पापतृण जाखे को अर्जन समान है।
आज्ञा दिखायेरे को आरसी विमल महा,
शिवतरु सींचवे कौं जल कौं निदान है।
दुःख दव दूर करिवे कौं कही मेंघ सम,
बाछिल देवे कौं सुरतरु अमलान है।
जगत के प्राणिन कौं शुद्ध करिवे कौं,
जैसे लोह कौं करे पारस पाखान है।॥९०॥

दोहा
नवनिद्धि अरु चउदह रतन, नाम समान न कोय।
नाम अमर पद कौं करे, जहां अतुल सुख होय।॥७॥

सवैया
माया ललचाय यह नरक कौं वास करे,
ताके बशी मूढ़ जिन्दगी कौं भूलाय है।
अति ही अजानी अभिमानी भयो झोलत हैं,
पारे अंध, फंद हिये हित नहीं आय है॥
चंतन की चरचा मैं बित कहुँ लावे नाहिं,
क्याति पूजा लाभ महा येही मन भाय है।
पर अनुराग मैं न जाग हैं स्वरूप की हैं,
विषमुख भयो वहिशातम कहाय है॥७२॥
श्रुति की कहिया ताको आप ढिंग राख्यी बाहः,
ताका अपमान भयें दोश न अनाय है।
ताके हांसी भये जिन मारग की हांसि है वे,
ऐसा विवेक नक हिये नहीं थाय है॥
माया अभिमान मैं गुमान कहुँ भावे नाहिं,
बाहिज की दृष्टि सोतो बाहिज लगाय है।
धरम उद्धोत जासी कही कैसे बणि आये,
श्रूठ ही मै पन्यो सांवी धरम न पाय है॥७३॥
गुण को न गहे मान अति ही अन्यत्र चहे,
लहे न स्वरूप की समाधि सुख भावना।
चेतन विपल ताको जोग काहू समें पुरै,
ताहू समें करृ और मन की उपावना॥
कनौन के काजे के उपाय के उपाय करे,
कामिनी के काज मैं हजारों धन लावना।
साधर्मी हेतु हित नैक न लगावे मूठ,
पाप पंख पन्यो भव भावरि बदावना॥७४॥
दुःख अनादि सत संग है स्वरूप भाव,
ताको उपदेश कहुँ दुःख कहीजिये।
चरचा वितान तै मिनान निज पाईंत,
होय के गवेशी तहां तामें मन दीजिये॥
ईर्ष्या कीते तै बंध पढे ज्ञानार्थी को,
गुण के गहिया हवै के ज्ञानरस पीजिये।
जाको संग किये महा स्वपन की प्राप्ति हैवे,
सोही परमात्मा सही सों लख लीजिये॥७५॥
जाको संग संती महा स्वपन विपल आवे,
स्वपन बतावे एक उपादेश आप है।
गुण को निधान भवानव पावे घटही मैं,
ताके संग संती दूर हो यो हवताप है॥
ताके संग संती शुद्धि सिद्धि सों स्वरूप जानि,
धन्य २ जाको जाके संग सों मिलाप हैं।
ऐसी हुँ कथन सुणि कृपा जो कृपरत्व करे,
भव अंधिकारी मूढ़ बांधे औषधिप आलिप है॥७६॥
एक परपद दूर देखे परपद को है,
देखें सो सवपद दीसे सोही सब पर है।
ऐसे भेद ज्ञान सो निधान निज पालत, 
चेतन सवपुर निज आनंद को धर है।
चौरासी लाख जोनि जामे जनमादि दुख,
रहे ते अनादि ताको मिटे तहां उर है।
तिहलोक पूव्य परमात्मा हवे निसे है,
तहां ही कहावे शिवरमाणीको वर है।
केंद्र कौर कहें जग-सार हे सवपद महा,
ऐसी कहें परिवृक्षदु (?) रहतु हैं।
कामिनी कृष्ण काजल लखन लगाय देत,
सवपद बलावे ताको हित न चबतु हैं।
नेक उपकार सार सत हंस विषये हैं,
ऐसी उपकार भूने कहत महतु है।
जाकी बात रुचि सेती सुपण स्वितन्त होय,
जीवे धन्य जाकी अनुरागसौ कहतु हैं।
लील में गये परिणाम सुदृढ़ होप नाहि,
सतसंग सेती स्वविचार हिये आये हैं।
ऐसी सतसंग परंपरा शिवपद दाता,
तिनूं सो महामूड मान को बढ़ावे है।
लक्ष्मी हुकम लखि मन माहि धारें मद,
ऐसे मदधारी नाहि निज तल पावे है।
आतम की आप कोड बात कहें राम सेती,
धन्य सो वालिन लिन परिव गावे है (?)।
नेक उपकार करें संत ताहि मूले नाहि,
ताको गुण मानि ताकी सेवा करै भाव सौ।
आतमीक तव तासो प्रापि हवे ताही करि,
अमर सवपद हवे है सहज लखाव सौ।
ऐसी गुण ताको मूढ़ गिनि नाहि नेक हूँ है,
महत कहावे कृत्तिनी के कहां सौ।
सोई धन्य जगत में सार उपकार माने,
आप हित करें ताकी पूजत सहाव सौ।
जाकी हित पावे ताकी आशित ही राख्यों चाहे,
मानकी मरोर में बढ़ई चाहे आपकी।
दाम ही में राम जाने ओर की न बात माने,
हित न पिछने रीति बाधे भवताप की।
जाके उपदेश सो अनुप्रम सवपुर पावे,
ताको अभावने धिति बांधे महापापकी।
औरुण गहिया भवजाल के बहिया बह,
केरीशि रखे उपकारी के मिनाष की।
कहत है अनंतवार सार हे सवपद महा,
ताको बालाव सोही सांची उपकारी है।
ताकी गुण मानेन जो तो सावित्रवे सवपुर सेती,
ऐसी रीति में जाने ताकी समझ हाथारी है।
नव व्यवहार ही में कहत है कथन एतो,
रीति में न विकलप विक्रियों उदारी है।
ऐसी उपदेश सार सुपृण न विकार गहे,
सोही गुणवान आप आपही अधिकारी है।
जाके गुण चाहि हवे तो गुण को गहिया होय,
औरुण की चाहि हवे तो औरुण गहतु है।
काक ज्याँ अमेठि गहि मन में उमाह धरे,
हंस चुगे मोती ऐसे भाव सो सहतु हैं।
भावना स्वरूप भागे भवपार पाईयतु,
ध्याये परमात्मा कों हौत ची महतु हैं।
ताहें शुद्ध भाव करि तवजिये अशुद्ध भाव,
यह सुख मूल महा मुनिजन कहतु हैं।१५३
करम संजोग सों विभाव भाव लगे आये,
परपद आपी माणी महादुख पाहे हैं।
केवली उकति जाकों अर्थ विकारिये अब,
जाँगी तोकी जो तो यह सुभुण सुहाये हैं।
जामें खेद भय रोग कछु न वियोग जहाँ,
चिदानंदराय में अनंत सुख गाये हैं।
सवे जोकु जुरी अब भावना स्वरूप करि,
ऐसे गुहबेन कहे भय उर आये हैं।१५४
पायक प्रृष्ठुभुत प्रभु सेवा कीजे बार २,
सार उपकार करि परदुख हरि लोकिये।
गुणीजन देखिके उमाह धरि मनमाहि,
विनाही सों राग करि विनरूप कीजिये।
चिदानंद देव जाके संग सेती पाईयतु,
तेरे परमात्मासी तामें मन दीजिये।
तिया सुत लाज मोह हेतु काज वहे मति जाही,
लाही भाटितें स्वरूप शुद्ध कीजिये।१५५
कही माणी मेरे पद तेरो कहुं दूरि नाहि,
लोहि माणी तेरो पद तू ही हरि आप ही।
हेरे आन धार में न ज्ञानको निधान लहे,
आपही है आप और तवज दै विलाप ही॥
मेछि देव कलेश के कलाप आप और होय,
जहां नही मुलि लागे दोउ पुण्य पाप ही।
तिही लोक शिखान न शिखियता नाथ होय,
आनंद अनूप बहि नेगे भत्ताप ही॥८६॥
केतु तप ताप सहें केतु मुखि मौन गहें,
केतु हौ नगन रहें जगसों उदाल ही॥
तीरथ अतन केतु करत हैं प्रभु काँजि,
केतु भव भोग तवज करें वनवास ही॥
केतु गिरकंदरमें बैठि हैं एकां जाय,
केतु प्रहर धारे विद्या के विलास ही।
ऐसे देव चिदानंद कहै कैसे पाईयतु,
अप लकः तेंई धरे ज्ञानको प्रकाशाही॥८७॥
केतु दीरि तीरथ को प्रभु जाय दुष्टु हैं,
केतु दीरि पहर पे हीके चढ़ि धान्ये हैं।
केतु नाजा वेष धारि देव भमान हेरें,
केतु ओंधे मुख झूलि महा दुख पापे हैं॥
ऐसे देव चिदानंद कहै कैसे पाईयत,
आतम स्वरूप लखें अविस्मारी धार्ये है॥८८॥
केतु देव प्रहर के पुराण कों वखान करें,
केतु मंत्रसंही के लागे अति केंद्रे हैं।
केतु क्रिकडांड में मगन रहें आरो जाम,
केतु सार जानि के अचार ही कों सेवः हैं।
केतु वाद जीति के रिझाये जाय जान को,
केतु हौ अजायी धन काहू को न लेये हैं।
एवषे तो अज्ञाताः में चिदनंद पावे नाहि,
ब्रह्मज्ञान जाने तो स्वरूप आप बैले है।१८९।।
कथित जिनेवा जाणों सकल रहस्य यह,
शुद्ध निजस्व उपादेय लाखि लीजिये।
स्वसंवेद ज्ञान प्रभावना है अखंड रूप,
अनुभूम अनुप्रयोग नित तीजिये।
आतम स्वरूप गुण धारे है अनतरूप,
जामें धरी आयौ पररूप तत्ज दीजिये।
ऐसे शिव साधक हूँ साधि शिवनाथ महा,
अजर अमर अज होय सदा जीजिये।१९०।।

dohà

यह अनूप उपदेश करि, कीनो है उपकार।
दीप कहे लखि भविकजन, पावत पद अविकार।१९१।।

िति

सवेया-टीका

सवेया

गुण एक एक जाके परजे अनंत करे,
परजे में नत नृत्य नाना विसतत्सूँ है।
नृत्य में अनंत धर्म धर्म में अनंत कला,
(कला में) अखंड अनंत रूप धर्म सूत्र है।
रूप में अनंत सत सत में अनंत भाव,
भावोंः लिखावहू अनंत रस भर्यः है।
रस के समावे में प्रभाव है अनंत दीप,
सहज अनंत यौं अनंत लगि कर्यः है।९१।।

टीका

गुण सूक्ष्म के अनंत पर्याय ज्ञानसूक्ष्म, दर्शनसूक्ष्म, वीर्यसूक्ष्म,
सुखसूक्ष्म, सर्वगुणसूक्ष्म, सो सूक्ष्म गुण तीका पर्याय सूक्ष्म अनंत फैल्या।
सो गुण गुण में आया एक ज्ञानसूक्ष्म ता सूक्ष्म को पर्याय तीमें
ज्ञान सो ज्ञान अनंतो अनंत गुण आतमा असित वसतुः, द्रव्यतः,
प्रमेयतः, प्रदेशातः, अगुरुपुरुः, प्रमुखतः, विभुतः इत्यादिद् गुणः। अनंतज्ञान
जान्या दर्शन में ज्ञान जानें वा वीर्यमें वा सुखमें वा वसतुः वा
प्रमेयभाग में इत्यादि प्रकार अनंतगुण में ज्ञान जानें।
ज्ञान अनंतज्ञानां रूपो नांच्छो सो अनंत नृत्य भरो यो निज द्रव्य को ज्ञान द्रव्य में जाणें,
सो द्रव्य अनंत गुणमय वैसे द्रव्य का जानन्यां रूपज्ञान नांच्छो छे
सो अनंत नृत्य भरो, ती नृत्य में द्रव्य को जानन्यां छे, सो द्रव्य
अनंतगुण को थट लिया छे, सो गुण अनंत को थट एक द्रव्य
को जानन्यां नृत्य में आयो अनंत गुण किसा है ? एक एक गुण
में अंत प्रकार थोट छे सो कहजे छे अंत प्रकार भेद किसा छे जीको ब्यौरे, वीर्यमण में ऐसी थोट छे जो द्रव्यीय, गुण वीर्य, पर्यायवीर्य, क्षेत्रवीर्य, भाववीर्य। क्षेत्रवीर्य क्षेत्र न निहार राखे द्रय द्रय ने निहार राखे, पर्यायवीर्य पर्याय ने निहार राखे भाववीर्य भवने निहार राखे द्रय का अंतःप्रदेश क्षेत्र छे, त्या में अलंकरण को प्रकाश उठे छे, दर्शनप्रकाश, ज्ञानप्रकाश, वीर्यप्रकाश, सुक्ष्मप्रकाश, प्रभुत्वप्रकाश इत्यादि अलंकरण को प्रकाश प्रदेशक्षेत्र ते उठे है। ऐसी क्षेत्र तिहमे निहार राखे, याही प्रकार द्रय का द्रव्य गुणसो उपज्य सेव ज्ञान लिया द्रय तियहे निहार राखे, द्रव्यवीर्य भवतीति भावपर्याय उपलक्षण भाववस्तु परिणमरूप भाव अथवा स्वभावभाव तियहे निहार राखे, भाववीर्य ऐसी थोट वीर्यमण को छे, वीर्यमण का थोट में वस्तुत नाम गुण छे एक छे वस्तु को भाव वस्तु सामान्यविशेषणक मत वस्तु तीती भाव वस्तु को निहार राखे वस्तु वीर्य वे वस्तु वीर्य का थोट में अंतत कला छे सो कहजे छे।

कला वस्तु में जो कहावे जो अनेक स्वांग ल्यावे अथवा अनेक नट की नाई कला करे, परि एकरूप रहें त्या वस्तुत सामान्यभाव विशेष त्या रूप सो ज्ञान ज्ञानपर्याय परिणयो सामान्य ज्ञान को भाव ज्ञान द्रय में जाने, गुण में जाने, पर्याय ने जाने सो ज्ञान को विशेष भाव दर्शन दर्शन विशेषणो, सो दर्शन को सामान्यभाव द्रय ने देखे गुण में देखे, पर्याय ने देखे, सो दर्शन को विशेष भाववीर्य प्रकाश सकल गुण में सामान्य भाव विशेषभाव छे सो ऐसा भाव भेद वस्तुत करे छे, परि एक रूप रहे छे ऐसी कला वस्तुत धर्याँ है, वस्तुत गुण सकलगुण का सामान्यविशेषणपर्यायमूल्य सो पर्याय वस्तु का अंतत भया, भाव प्रमेयत में सामान्यविशेषणगुण वस्तुत
प्रदेश में अन्तरंगत धर्मशाला श्रमण के अंतरंगत शाक्तिक लिखित है।
पर्याय गृह भरत कला रूप सत्ता भाव आदि, द्वारका काल भाव आदि में प्रकाश सकल भेद की एक सत्ता अनेक प्रकाश सकल प्रकाश मिला एक विद्याक्रम अनेक प्रकाशका एक एक प्रदेश इस प्रकाश नियम ऐसा अनुसार प्रदेश का पुंज वस्तु प्रकाश तीव्रता एक प्रदेश प्रकाश प्रभाव जो देखीजे तो अन्तरंगत अनुभव रस स्वामुदाय रस देखता अप्रेरण शक्ति भेदनेत्र प्रकाश में अन्तरंग विद्याक्रम रस लक्षण करता अनुभव रस होता है यो अन्तरंग वर्ग इंगित यही है।
अब जो रस का जो स्वभाव है अर जो स्वभाव अन्तरंग भाव नहीं कहिए हैग: प्रदेश का अनुगुणवातीकों जो लखाव करता रस सो प्रदेश अनुगुणवात भाव का भेदनेत्र विद्याक्रमनीतिकों लखाव तीमे जो रस की स्थिरता अनुमूित तथा अनुभव रस तीमें स्वरूप नीकों गमनरुप भाव सो स्वभाव भेदनेत्र विद्याक्रम भाव को लखाव अतीत्रिय आनंद रस भयो यहीं तीमें गधाबुश्चिम् आनंदस का सु कहाँ भले प्रकाश भवन कहाँ भव तीमें वे रसको स्वभाव कहिए अब वे रस का स्वभावको प्रभाव कहिए हैग: वे आनंदसस्त्रकों भले प्रकाश ही तीमें प्रभाव ऐसे है, वचनगोरव न इंगित। अतिशय स्थिरता है वो केवलजानस उपयोग है सो ज्ञान निकालवाती निजीका अनुग्रह अनुसारहित तिह की विद्याक्रमशाय उत्पत्ति, क्रिया क्रिया भावन्न कमण्डल सम्बन्ध में जाने है ऐसी ज्ञान मो अनेक सत्ता है ताते केवलजान का प्रभाव प्रतरंग है। वे वे शक्ति का स्वभाव का प्रभाव अन्तरंगको प्रभाव प्रमुख एक्टो कीजे ऐसे है आवा को अन्तरंगरुप सहज है सो अन्तरंग पर्यात्त शाक्ति वे प्रभाव में द्वार्खक्षेत्र काल भाव करिए तत्व अभिनवी विद्वेशन वो है॥

इति